अध्याय १८

श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा वृन्दावन में भ्रमण

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने अपने *अमृत-प्रवाह भाष्य* में अठारहवें अध्याय का सारांश इस प्रकार दिया है। " श्री चैतन्य महाप्रभु ने आरिटग्राम में राधाकुण्ड तथा श्यामकुण्ड की खोज की। इसके बाद उन्होंने गोवर्धन गाँव में हरिदेव के विग्रह का दर्शन किया। श्री चैतन्य महाप्रभु ने गोवर्धन पर्वत पर चढ़ना अच्छा नहीं समझा, क्योंकि इस पर्वत की पूजा कृष्ण के रूप में की जाती है। गोपाल अर्चाविग्रह श्री चैतन्य महाप्रभु के मन की बात जान गये, अत: मुसलमानों के आक्रमण के बहाने उन्होंने अपने आपको गांठुलि-ग्राम में स्थानान्तरित कर दिया। तब श्री चैतन्य महाप्रभु गोपाल का दर्शन करने गांठुलि-ग्राम गये। कुछ वर्षों बाद गोपालजी मथुरा के विठ्ठलेश्वर मन्दिर भी गये तथा श्रील रूप गोस्वामी को दर्शन देने के लिए ही वहाँ एक मास रुके रहे।

श्री चैतन्य महाप्रभु नन्दीश्वर, पावन सरोवर, शेषशायी, खेलातीर्थ, भाण्डीरवन, भद्रवन, लोहवन तथा महावन देखने के बाद गोकुल गये और अन्त में वे मथुरा लौट आये। मथुरा में भारी भीड़ देखकर उन्होंने अपना आवास अक्रूर घाट के पास बनाया, जहाँ से वे कालियाह्रद, द्वादशादित्यघाट, केशीघाट, रासस्थली, चीरघाट तथा आमलितला का दर्शन करने नित्य वृन्दावन जाते थे। कालियाह्रद सरोवर में अनेक लोग एक मछुआरे को कृष्ण समझ बैठे। जब कुछ गणमान्य व्यक्ति श्री चैतन्य महाप्रभु का दर्शन करने आये, तो उन लोगों ने यह विचार व्यक्त किया कि संन्यास लेने वाला व्यक्ति नारायण बन जाता है। महाप्रभु ने उनकी गलती सुधारी। इस तरह उनमें कृष्णभावना का उदय हुआ

और वे यह समझ सके कि संन्यासी केवल एक जीव होता है, पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् नहीं।

अक्रूरघाट में स्नान करते समय श्री चैतन्य महाप्रभु लम्बे समय तक पानी के भीतर रहे। बलभद्र भट्टाचार्य ने सोरो क्षेत्र नामक तीर्थस्थान दिखलाने के बाद महाप्रभु को प्रयाग ले जाने का निश्चय किया। प्रयाग जाते हुए मार्ग में एक गाँव में रुकने पर श्री चैतन्य महाप्रभु प्रेमवश मूर्च्छित हो गये। वहाँ से होकर गुजर रहे कुछ पठान सिपाहियों श्री चैतन्य महाप्रभु को देखा और उन्होंने गलती से समझा कि बलभद्र भट्टाचार्य तथा अन्य संगियों ने उन्हें धतूरा का विष देकर मार डाला है और उनका धन छीनकर ले जा रहे हैं। फलतः उन लोगों ने उनके संगियों को बन्दी बना लिया। किन्तु जब श्री चैतन्य महाप्रभु को चेतना आई, तब उनके संगियों को छोड़ दिया गया। महाप्रभु ने सिपाहियों में से एक व्यक्ति से बात की जो धार्मिक व्यक्ति जान पड़ता था। श्री चैतन्य महाप्रभु ने कुरान द्वारा कृष्ण-भक्ति की स्थापना की। इस तरह सिपाहियों के सरदार विजुली खान ने श्री चैतन्य महाप्रभु की शरण स्वीकार कर ली और वह अपने दल समेत कृष्ण का भक्त बन गया। आज वही गाँव पठान वैष्णवों का गाँव कहलाता है। सोरो में गंगास्नान करने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु तीन नदियों—गंगा, यमुना तथा सरस्वती—के संगम प्रयाग आ पहुँचे।

वृन्दावने स्थिर-चरान्नन्दयन्स्वावलोकनैः ।
आत्मानं च तदालोकादेगौराङ्गः परितोऽभ्रमत् ॥ १ ॥

वृन्दावने—वृन्दावन में; **स्थिर-चरान्**—चर और अचर को; **नन्दयन्**—आनन्द प्रदान करते हुए; **स्व-अवलोकनैः**—अपनी चितवन से; **आत्मानम्**—अपने आपको; **च**—भी; **तत्-आलोकात्**—उनको देखने से; **गौराङ्गः**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **परितः**—चारों ओर; **अभ्रमत्**—यात्रा की।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने सारे वृन्दावन में घूमकर सारे चर तथा अचर जीवों को अपनी चितवन से प्रफुल्लित किया। हर व्यक्ति को देखने में

महाप्रभु को प्रसन्नता होती। इस तरह भगवान् गौरांग ने वृन्दावन का भ्रमण किया।

जय जय गौरचन्द्र जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत-चन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥२॥

जय जय गौरचन्द्र जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत-चन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥ २॥

जय जय—जय हो; **गौरचन्द्र**—भगवान् गौरचन्द्र (श्री चैतन्य महाप्रभु) की; **जय**—जय हो; **नित्यानन्द**—भगवान् नित्यानन्द की; **जय**—जय हो; **अद्वैत-चन्द्र**—श्री अद्वैत गोसांइ की; **जय**—जय हो; **गौर-भक्त-वृन्द**—भगवान् चैतन्य के सभी भक्तों की।

अनुवाद

श्री गौरचन्द्र की जय हो! श्री नित्यानन्द प्रभु की जय हो! अद्वैत प्रभु की जय हो तथा भगवान् चैतन्य के भक्तगण श्रीवास ठाकुर आदि की जय हो!

एइ-मत महाप्रभु नाचिते नाचिते ।
'आरिट्'-ग्रामे आसि' 'बाह्य' हैल आचम्बिते ॥३॥

एइ-मत महाप्रभु नाचिते नाचिते ।
'आरिट्'-ग्रामे आसि' 'बाह्य' हैल आचम्बिते ॥ ३॥

एइ-मत—इस प्रकार; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **नाचिते नाचिते**—नाचते नाचते; **आरिट्-ग्रामे**—आरिट ग्राम में; **आसि'**—आकर; **बाह्य**—इन्द्रिय अनुभूति; **हैल**—हुई; **आचम्बिते**—अचानक।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु प्रेमाविष्ट होकर नाचते रहते थे, किन्तु जब वे आरिट ग्राम आये, तो उनकी बाह्य चेतना जाग्रत हो उठी।

तात्पर्य

आरिट् ग्राम का अन्य नाम अरिष्ट ग्राम भी है। श्री चैतन्य महाप्रभु को उस गाँव में ज्ञात हुआ कि वहीं पर श्रीकृष्ण ने अरिष्टासुर का वध किया था। यहाँ रहते हुए महाप्रभु ने राधाकुण्ड के विषय में पूछताछ की, किन्तु कोई भी उन्हें

बता न सका कि यह कहाँ पर है। यहाँ तक कि उनके साथ का ब्राह्मण भी यह निश्चित नहीं कर सका कि वह कहाँ है। तब श्री चैतन्य महाप्रभु समझ गये कि राधाकुण्ड तथा श्यामकुण्ड नामक पवित्र स्थल लोगों की दृष्टि से ओझल हो चुके हैं। अतएव उन्होंने राधाकुण्ड तथा श्यामकुण्ड, इन दोनों कुण्डों की खोज दो धान के खेतों में जल समूह के रूप में की। यद्यपि इनमें बहुत कम जल था, किन्तु श्री चैतन्य महाप्रभु सर्वज्ञ थे और समझ सकते थे कि पूर्वकाल में ये दोनों कुण्ड श्री राधाकुण्ड तथा श्यामकुण्ड कहलाते थे। इस तरह राधाकुण्ड तथा श्यामकुण्ड की खोज हुई।

आरिटे राधा-कुण्ड-वार्ता पुछे लोक-स्थाने ।
केह नाहि कहे, सङ्गेर ब्राह्मण ना जाने ॥ ४॥
आरिटे राधा-कुण्ड-वार्ता पुछे लोक-स्थाने ।
केह नाहि कहे, सङ्गेर ब्राह्मण ना जाने ॥ ४॥

आरिटे—आरिट ग्राम में; **राधा-कुण्ड-वार्ता**—राधा कुण्ड के विषय में; **पुछे**—पूछा; **लोक-स्थाने**—स्थानीय लोगों से; **केह**—कोई भी; **नाहि**—नहीं; **कहे**—बता सका; **सङ्गेर**—उनका साथी; **ब्राह्मण**—ब्राह्मण भी; **ना जाने**—नहीं जानता था।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने स्थानीय लोगों से पूछा कि राधाकुण्ड कहाँ है, किन्तु उन्हें कोई भी न बता सका। उनके साथ रहने वाला ब्राह्मण भी कुछ नहीं जानता था।

तीर्थ 'लुप्त' जानि' प्रभु सर्वज्ञ भगवान् ।
दुइ धान्य-क्षेत्रे अल्प-जले कैला स्नान ॥ ५॥
तीर्थ 'लुप्त' जानि' प्रभु सर्वज्ञ भगवान् ।
दुइ धान्य-क्षेत्रे अल्प-जले कैला स्नान ॥ ५॥

तीर्थ—तीर्थ स्थान; **लुप्त**—लुप्त; **जानि'**—जानकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **सर्वज्ञ**—सर्वज्ञ; **भगवान्**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्; **दुइ**—दो; **धान्य-क्षेत्रे**—धान के खेतों में; **अल्प-जले**—थोड़े गहरे पानी में; **कैला स्नान**—स्नान किया।

अनुवाद

तब महाप्रभु समझ गये कि राधाकुण्ड नामक तीर्थस्थल लुप्त हो चुका है। किन्तु सर्वज्ञ पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् होने के नाते महाप्रभु ने दो धान के खेतों में राधाकुण्ड तथा श्यामकुण्ड खोज निकाले। उनमें बहुत कम जल था, किन्तु महाप्रभु ने वहाँ स्नान किया।

देखि' सब ग्राम्य-लोकेर विस्मय हैल मन ।
प्रेमे प्रभु करे राधा-कुण्डेर स्तवन ॥ ६ ॥

देखि'—देखकर; **सब ग्राम्य-लोकेर**—गाँव के सभी लोगों के; **विस्मय हैल**—चकित हो गये; **मन**—मन; **प्रेमे**—प्रेमावेश में; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **करे**—किया; **राधा-कुण्डेर**—राधाकुण्ड की; **स्तवन**—स्तुति।

अनुवाद

जब गाँव के लोगों ने धान के खेतों के बीच स्थित दो कुण्डों में श्री चैतन्य महाप्रभु को स्नान करते देखा, तो वे अत्यधिक आश्चर्यचकित हुए। तब महाप्रभु ने श्री राधाकुण्ड की स्तुति की।

सब गोपी हैते राधा कृष्णेर प्रेयसी ।
तैछे राधा-कुण्ड प्रिय 'प्रियार सरसी' ॥ ७ ॥

सब—सभी; **गोपी**—गोपियों; **हैते**—से; **राधा**—राधारानी; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण की; **प्रेयसी**—अत्यन्त प्रिय; **तैछे**—उसी प्रकार; **राधा-कुण्ड**—राधाकुण्ड; **प्रिय**—अति प्रिय; **प्रियार सरसी**—अत्यन्त प्रिय राधारानी का सरोवर।

अनुवाद

"समस्त गोपियों में राधारानी सर्वाधिक प्रिय हैं। इसी तरह राधाकुण्ड भी भगवान् को अत्यन्त प्रिय है, क्योंकि यह श्रीमती राधारानी को अत्यन्त प्रिय है।

यथा राधा प्रिया विष्णोस्तस्याः कुण्डं प्रियं तथा ।
सर्व-गोपीषु सैवैका विष्णोरत्यन्त-वल्लभा ॥ ८ ॥

यथा राधा प्रिया विष्णोस्तस्याः कुण्डं प्रियं तथा ।
सर्व-गोपीषु सैवैका विष्णोरत्यन्त-वल्लभा ॥ ८ ॥

यथा—जैसे; **राधा**—श्रीमती राधारानी; **प्रिया**—प्रिय; **विष्णोः**—भगवान् कृष्ण की; **तस्याः**—उनका; **कुण्डम्**—कुण्ड, सरोवर; **प्रियम्**—अति प्रिय; **तथा**—तथा; **सर्व-गोपीषु**—सभी गोपियों में से; **सा**—वह; **एव**—निस्सन्देह; **एका**—अकेली; **विष्णोः**—भगवान् कृष्ण की; **अत्यन्त**—अत्यन्त; **वल्लभा**—प्रिय।

अनुवाद

'"जिस प्रकार श्रीमती राधारानी भगवान् कृष्ण को अत्यन्त प्रिय हैं, उसी प्रकार उनका सरोवर राधाकुण्ड भी उन्हें अत्यधिक प्रिय है। समस्त गोपियों में श्रीमती राधारानी निश्चित रूप से अत्यन्त प्रिय हैं।'

तात्पर्य

यह *पद्म पुराण* का श्लोक है।

येई कुण्डे नित्य कृष्ण राधिकार सङ्गे ।
जले जल-केलि करे, तीरे रास-रङ्गे ॥ ९ ॥

येइ कुण्डे नित्य कृष्ण राधिकार सङ्गे ।
जले जल-केलि करे, तीरे रास-रङ्गे ॥ ९ ॥

येइ कुण्डे—उस कुण्ड में; **नित्य**—प्रतिदिन; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **राधिकार सङ्गे**—श्रीमती राधारानी के संग; **जले**—जल में; **जल-केलि**—क्रीड़ा; **करे**—करते; **तीरे**—तट पर; **रास-रङ्गे**—अपना रास नृत्य।

अनुवाद

इस कुण्ड में भगवान् कृष्ण तथा श्रीमती राधारानी नित्य प्रति जलविहार किया करते थे और इसके तट पर रासनृत्य करते थे।

सेई कुण्डे येई एक-बार करे स्नान ।
ताँरे राधा-सम 'प्रेम' कृष्ण करे दान ॥ १० ॥

सेइ कुण्डे येइ एक-बार करे स्नान ।
ताँरे राधा-सम 'प्रेम' कृष्ण करे दान ॥ १० ॥

सेइ कुण्डे—उस कुण्ड में; **येइ**—जो भी; **एक-बार**—एक बार; **करे स्नान**—स्नान करता है; **ताँरे**—उसको; **राधा-सम**—श्रीमती राधारानी के समान; **प्रेम**—प्रेम; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **करे दान**—प्रदान करते हैं।

अनुवाद

"जो कोई इस कुण्ड में एक बार भी स्नान करता है, उसे भगवान् कृष्ण श्रीमती राधारानी जैसा ही प्रेम प्रदान करते हैं।

कुण्डेर 'माधुरी'—येन राधार 'मधुरिमा' ।
कुण्डेर 'महिमा'—येन राधार 'महिमा' ॥ ११ ॥
कुण्डेर 'माधुरी'—येन राधार 'मधुरिमा' ।
कुण्डेर 'महिमा'—येन राधार 'महिमा' ॥ ११ ॥

कुण्डेर—कुण्ड की; **माधुरी**—मधुरता; **येन**—जैसे; **राधार**—श्रीमती राधारानी की; **मधुरिमा**—मधुरता; **कुण्डेर**—कुण्ड की; **महिमा**—महिमा; **येन**—जैसे; **राधार**—श्रीमती राधारानी की; **महिमा**—महिमाएँ।

अनुवाद

"राधाकुण्ड का आकर्षण श्रीमती राधरानी के ही समान मधुर है। इसी तरह राधाकुण्ड की महिमा श्रीमती राधारानी की महिमा के ही समान महान् है।

श्री-राधेव हरेस्तदीय-सरसी प्रेष्ठाद्भुतैः स्वैर्गुणैर्
यस्यां श्री-युत-माधवेन्दुरनिशं प्रीत्या तया क्रीड़ति ।
प्रेमास्मिन्नत राधिकेव लभते यस्यां सकृत्स्नान-कृत्
तस्या वै महिमा तथा मधुरिमा केनास्तु वर्ण्यः क्षितौ ॥ १२ ॥

श्री-राधेव हरेस्तदीय-सरसी प्रेष्ठाद्भुतैः स्वैर्गुणैर्
यस्यां श्री-युत-माधवेन्दुरनिशं प्रीत्या तया क्रीड़ति ।
प्रेमास्मिन्बत राधिकेव लभते यस्यां सकृत्स्नान-कृत्
तस्या वै महिमा तथा मधुरिमा केनास्तु वर्ण्यः क्षितौ ॥ १२ ॥

श्री-राधा—श्रीमती राधारानी; **इव**—की तरह; **हरेः**—कृष्ण का; **तदीय**—उनका; **सरसी**—कुण्ड; **प्रेष्ठा**—अत्यन्त प्रिय; **अद्भुतैः**—अद्भुत; **स्वैः**—अपने; **गुणैः**—दिव्य गुण; **ग्रस्याम्**—जिनमें; **श्री-ग्रुत**—ऐश्वर्य पूर्ण; **माधव**—श्रीकृष्ण; **इन्दुः**—चन्द्र की भाँति; **अनिशम्**—निरन्तर; **प्रीत्या**—अत्यन्त प्रेम से; **तया**—श्रीमती राधारानी के साथ; **क्रीड़ति**—लीलाएँ करते हैं; **प्रेमा**—प्रेम; **अस्मिन्**—भगवान् कृष्ण के लिए; **बत**—निस्सन्देह; **राधिका इव**—श्रीमती राधारानी की भाँति; **लभते**—पाती है; **ग्रस्याम्**—जिसमें; **सकृत्**—एक बार; **स्नान-कृत्**—जो स्नान करता है; **तस्याः**—कुण्ड का; **वै**—निश्चित रूप से; **महिमा**—महिमा; **तथा**—तथा; **मधुरिमा**—मधुरता; **केन**—किससे; **अस्तु**—हो सकता है; **वर्ण्यः**—वर्णन; **क्षितौ**—इस पृथ्वी पर।

अनुवाद

"'राधाकुण्ड अपने अद्भुत दिव्य गुणों के कारण कृष्ण को श्रीमती राधारानी के ही समान प्रिय है। इसी कुण्ड में सर्व ऐश्वर्यमान भगवान् श्रीकृष्ण ने श्रीमती राधारानी के साथ अत्यन्त आनन्दपूर्वक दिव्य लीलाएँ कीं। जो भी राधाकुण्ड में एक बार स्नान करता है, वह श्रीकृष्ण के प्रति राधारानी के प्रेमाकर्षण को प्राप्त करता है। भला इस लोक में ऐसा कौन होगा जो श्री राधाकुण्ड की महिमा तथा मधुरिमा का वर्णन कर सके?'"

तात्पर्य

यह श्लोक *गोविन्द-लीलामृत* (७.१०२) का है।

এই-মত স্তুতি করে প্রেমাবিষ্ট হঞা ।
তীরে নৃত্য করে কুণ্ড-লীলা সঙরিয়া ॥ ১৩॥

एइ-मत स्तुति करे प्रेमाविष्ट हञा ।
तीरे नृत्य करे कुण्ड-लीला सडरिया ॥ १३॥

एइ-मत—इस प्रकार; **स्तुति करे**—स्तुति की; **प्रेम-आविष्ट**—प्रेमावेश में अभिभूत; **हञा**—होकर; **तीरे**—तट पर; **नृत्य करे**—नृत्य किया; **कुण्ड-लीला**—राधाकुण्ड की लीलाएँ; **सडरिया**—स्मरण करके।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने राधाकुण्ड की स्तुति की। प्रेमावेश में अभिभूत होकर वे राधाकुण्ड के किनारे भगवान् कृष्ण द्वारा सम्पन्न की गई लीलाओं का स्मरण करके नृत्य करने लगे।

কুণ্ডের মৃত্তিকা লঞা তিলক করিল ।
ভট্টাচার্য-দ্বারা মৃত্তিকা সঙ্গে করি' লৈল ॥ ১৪ ॥

কুণ্ডের মৃত্তিকা লঞা তিলক করিল ।
ভট্টাচার্য্য-দ্বারা মৃত্তিকা সঙ্গে করি' লৈল ॥ ১৪ ॥

कुण्डेर—कुण्ड की; **मृत्तिका**—मिट्टी; **लञा**—लेकर; **तिलक करिल**—तिलक किया; **भट्टाचार्य्य-द्वारा**—बलभद्र भट्टाचार्य की सहायता से; **मृत्तिका**—मिट्टी; **सङ्गे**—अपने साथ; **करि'**—करके; **लैल**—ले ली।

अनुवाद

इसके बाद श्री चैतन्य महाप्रभु ने राधाकुण्ड की मिट्टी से अपने शरीर पर तिलक लगाया और बलभद्र भट्टाचार्य की सहायता से उस कुण्ड से कुछ मिट्टी एकत्र की तथा उसे अपने साथ लेते गये।

তবে চলি' আইলা প্রভু 'সুমনঃ-সরোবর' ।
তাহাঁ 'গোবর্ধন' দেখি' হইলা বিহ্বল ॥ ১৫ ॥

তবে চলি' আইলা প্রভু 'সুমনঃ-সরোবর' ।
তাহাঁ 'গোবর্ধন' দেখি' হইলা বিহ্বল ॥ ১৫ ॥

तबे—तत्पश्चात्; **चलि'**—चलकर; **आइला**—आये; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **सुमनः-सरोवर**—सुमनस् नामक सरोवर पर; **ताहाँ**—वहाँ; **गोवर्धन**—गोवर्धन पर्वत; **देखि'**—देखकर; **हइला विह्वल**—विह्वल हो गये।

अनुवाद

राधाकुण्ड से श्री चैतन्य महाप्रभु सुमनस्-सरोवर गये। जब उन्होंने वहाँ से गोवर्धन पर्वत देखा, तो वे प्रसन्नता के मारे विह्वल हो उठे।

গোবর্ধন দেখি' প্রভু হইলা দণ্ডবৎ ।
'এক শিলা' আলিঙ্গিয়া হইলা উন্মত্ত ॥ ১৬ ॥

গোবর্ধন দেখি' প্রভু হইলা দণ্ডবত্ ।
'এক শিলা' আলিঙ্গিয়া হইলা উন্মত্ত ॥ ১৬ ॥

गोवर्धन देखि'—गोवर्धन पर्वत देखकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **हइला दण्डवत्**—

दण्डवत् प्रणाम किया; **एक शिला**—शिला का एक टुकड़ा; **आलिङ्गिया**—आलिंगन करके; **हइला**—हो गये; **उन्मत्त**—उन्मत्त।

अनुवाद

महाप्रभु ने गोवर्धन पर्वत को देखकर भूमि पर गिरकर दण्डवत् प्रणाम किया। उन्होंने गोवर्धन पर्वत के एक शिला-खण्ड का आलिंगन किया और उन्मत्त हो गये।

प्रेमे मत्त चलि' आइला गोवर्धन-ग्राम ।
'हरिदेव' देखि' ताहाँ हइला प्रणाम ॥ १७॥

प्रेमे मत्त चलि' आइला गोवर्धन-ग्राम ।
'हरिदेव' देखि' ताहाँ हइला प्रणाम ॥ १७॥

प्रेमे—प्रेम में; **मत्त**—उन्मत्त; **चलि'**—चलकर; **आइला**—आये; **गोवर्धन-ग्राम**—गोवर्धन नामक गाँव में; **हरिदेव**—हरिदेव नामक आर्चाविग्रह जो वहाँ स्थापित था; **देखि'**—दर्शन करके; **ताहाँ**—वहाँ; **हइला प्रणाम**—प्रणाम किया।

अनुवाद

प्रेम में उन्मत्त महाप्रभु गोवर्धन नामक गाँव में आये। वहाँ उन्होंने हरिदेव अर्चाविग्रह का दर्शन किया और उन्हें सादर नमस्कार किया।

'मथुरा'-पद्मेर पश्चिम-दले याँर वास ।
'हरिदेव' नारायण——आदि परकाश ॥ १८॥

'मथुरा'-पद्मेर पश्चिम-दले याँर वास ।
'हरिदेव' नारायण——आदि परकाश ॥ १८॥

मथुरा-पद्मेर—मथुरा रूपी कमलपुष्प की; **पश्चिम-दले**—पश्चिमी पंखुड़ी पर; **याँर**—जिसका; **वास**—निवास; **हरिदेव**—भगवान् हरिदेव; **नारायण**—नारायण के अवतार; **आदि**—मूल ; **परकाश**—प्राकट्य।

अनुवाद

हरिदेव नारायण के अवतार हैं और उनका निवास-स्थान मथुरा रूपी कमल की पश्चिमी पंखुड़ी पर है।

হরিদেব-আগে নাচে প্রেমে মত্ত হঞা ।
সব লোক দেখিতে আইল আশ্চর্য শুনিয়া ॥ ১৯ ॥

হরিদেব-আগে নাচে প্রেমে মত্ত হঞা ।
সব লোক দেখিতে আইল আশ্চর্য্য শুনিয়া ॥ ১৯ ॥

हरिदेव-आगे—हरिदेव के समक्ष; **नाचे**—नाचने लगे; **प्रेमे**—प्रेमावेश में; **मत्त हञा**—उन्मत्त होकर; **सब लोक**—सभी लोग; **देखिते**—देखने के लिए; **आइल**—आये; **आश्चर्य्य**—आश्चर्यजनक गतिविधियाँ; **शुनिया**—सुनकर।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु प्रेम में उन्मत्त होकर हरिदेव अर्चाविग्रह के सम्मुख नृत्य करने लगे। महाप्रभु के अद्भुत कार्यकलाप सुनकर सारे लोग उन्हें देखने आये।

প্রভু-প্রেম-সৌন্দর্য দেখি' লোকে চমৎকার ।
হরিদেবের ভৃত্য প্রভুর করিল সৎকার ॥ ২০ ॥

প্রভু-প্রেম-সৌন্দর্য্য দেখি' লোকে চমৎকার ।
হরিদেবের ভৃত্য প্রভুর করিল সৎকার ॥ ২০ ॥

प्रभु—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **प्रेम-सौन्दर्य्य**—प्रेम तथा सौन्दर्य; **देखि'**—देखकर; **लोके**—लोग; **चमत्कार**—चकित हो गये; **हरिदेवेर**—प्रभु हरिदेव के; **भृत्य**—सेवक; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **करिल सत्कार**—स्वागत किया।

अनुवाद

जब लोगों ने श्री चैतन्य महाप्रभु के प्रेमावेश तथा उनके शारीरिक सौन्दर्य को देखा, तो वे चकित रह गये। हरिदेव विग्रह की सेवा करने वाले पुजारी ने महाप्रभु का भलीभाँति सत्कार किया।

ভট্টাচার্য 'ব্রহ্ম-কুণ্ডে' পাক যাঞা কৈল ।
ব্রহ্ম-কুণ্ডে স্নান করি' প্রভু ভিক্ষা কৈল ॥ ২১ ॥

ভট্টাচার্য্য 'ব্রহ্ম-কুণ্ডে' পাক য়াঞা কৈল ।
ব্রহ্ম-কুণ্ডে স্নান করি' প্রভু ভিক্ষা কৈল ॥ ২১ ॥

भट्टाचार्य्य—बलभद्र भट्टचार्य; **ब्रह्म-कुण्डे**—ब्रह्मकुण्ड के तट पर; **पाक**—भोजन पकाना; **य्याञा**—वहाँ जाकर; **कैल**—किया; **ब्रह्म-कुण्डे**—ब्रह्मकुण्ड पर; **स्नान करि'**—स्नान करके; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **भिक्षा कैल**—भोजन किया।

अनुवाद

भट्टाचार्य ने ब्रह्मकुण्ड में भोजन पकाया और महाप्रभु ने ब्रह्मकुण्ड में स्नान करने के बाद भोजन किया।

সে-রাত্রি রহিলা হরিদেবের মন্দিরে ।
রাত্রে মহাপ্রভু করে মনেতে বিচারে ॥২২॥

से-रात्रि रहिला हरिदेवेर मन्दिरे ।
रात्रे महाप्रभु करे मनेते विचारे ॥ २२॥

से-रात्रि—उस रात; **रहिला**—रहे; **हरि-देवेर**—हरिदेव के; **मन्दिरे**—मन्दिर में; **रात्रे**—रात को; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **करे**—किया; **मनेते**—मन में; **विचारे**—विचार।

अनुवाद

उसी रात महाप्रभु हरिदेव के मन्दिर में रुके रहे और रात में वे अपने मन में सोचने लगे।

'গোবর্ধন-উপরে আমি কভু না চড়িব ।
গোপাল-রায়ের দরশন কেমনে পাইব?' ॥২৩॥

'गोवर्धन-उपरे आमि कभु ना चड़िब ।
गोपाल-रायेर दरशन केमने पाइब?' ॥ २३॥

गोवर्धन-उपरे—गोवर्धन पर्वत पर; **आमि**—मैं; **कभु**—कभी; **ना**—नहीं; **चड़िब**—चढ़ूँगा; **गोपाल-रायेर**—भगवान् गोपाल के; **दरशन**—दर्शन; **केमने**—कैसे; **पाइब**—मैं करूँगा।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने सोचा, "मैं तो गोवर्धन पर्वत पर चढ़ूँगा नहीं, तो फिर मुझे गोपाल राय के दर्शन किस प्रकार हो सकेंगे?"

এত মনে করি' প্রভু মৌন করি' রহিলা ।
জানিয়া গোপাল কিছু ভঙ্গী উঠাইলা ॥২৪॥

एत मने करि' प्रभु मौन करि' रहिला ।
जानिया गोपाल किछु भङ्गी उठाइला ॥ २४॥

एत—इतना; **मने करि'**—मन में विचार करके; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **मौन**—मौन; **करि'**—होकर; **रहिला**—रह गये; **जानिया**—जानकर; **गोपाल**—भगवान् गोपाल ने; **किछु**—कुछ; **भङ्गी**—चाल; **उठाइला**—चली।

अनुवाद

इस तरह सोचते हुए महाप्रभु मौन हो गये, किन्तु भगवान् गोपाल उनके विचार को जानते थे, इसलिए उन्होंने एक चाल चली।

अनारुरुक्षवे शैलं स्वस्मै भक्ताभिमानिने ।
अवरुह्य गिरेः कृष्णो गौराय स्वमदर्शयत् ॥२५॥

अनारुरुक्षवे शैलं स्वस्मै भक्ताभिमानिने ।
अवरुह्य गिरेः कृष्णो गौराय स्वमदर्शयत् ॥ २५॥

अनारुरुक्षवे—जो चढ़ने को तैयार नहीं थे; **शैलम्**—पर्वत पर; **स्वस्मै**—स्वयं को; **भक्त-अभिमानिने**—अपने आपको भगवान् कृष्ण का भक्त मानकर; **अवरुह्य**—नीचे उतरकर; **गिरेः**—पर्वत से; **कृष्णः**—भगवान् कृष्ण ने; **गौराय**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **स्वम्**—स्वयं; **अदर्शयत्**—दर्शन दिया।

अनुवाद

गोवर्धन पर्वत से नीचे उतरकर भगवान् गोपाल ने श्री चैतन्य महाप्रभु को दर्शन दिया, क्योंकि महाप्रभु अपने आपको कृष्ण-भक्त मानने के कारण पर्वत पर चढ़ने के लिए अनिच्छुक थे।

'অন্নকূট'-নামে গ্রামে গোপালের স্থিতি ।
রাজপুত-লোকের সেই গ্রামে বসতি ॥২৬॥

'अन्नकूट'-नामे ग्रामे गोपालेर स्थिति ।
राजपुत-लोकेर सेइ ग्रामे वसति ॥ २६॥

अन्नकूट-नामे—अन्नकूट नामक; **ग्रामे**—गाँव में; **गोपालेर**—गोपाल का; **स्थिति**—निवास; **राजपुत-लोकेर**—राजस्थान के लोग; **सेइ ग्रामे**—उसी गाँव में; **वसति**—रहते थे।

अनुवाद

गोपाल गोवर्धन पर्वत पर अन्नकूट गाँव में स्थित थे। उस गाँव में जो लोग रहते थे, वे मुख्यतः राजस्थान के थे।

तात्पर्य

अन्नकूट ग्राम का उल्लेख *भक्ति-रत्नाकर* (पंचम तरंग) में हुआ है।

गोप-गोपी भुञ्जायेन कौतुक अपार।
एइ हेतु 'आनियोर' नाम से इहार॥
अन्नकूट-स्थान एइ देख श्रीनिवास।
ए-स्थान दर्शने हय पूर्ण अभिलाष॥

"यहीं पर सभी गोपियों तथा गोपों ने श्रीकृष्ण के साथ अद्‌भुत लीलाओं का आनन्द लूटा। इसीलिए यह स्थान 'आनियोर' भी कहलाता है। यहीं अन्नकूट उत्सव मनाया गया था। हे श्रीनिवास, जो भी इस स्थान का दर्शन करता है, उसकी सारी अभिलाषाएँ पूरी होती हैं।" यह भी कहा गया है :

कुण्डेर निकट देख निविड़-कानन।
एथाइ 'गोपाल' छिला हञा सङ्गोपन॥

"कुण्ड के निकट के इस घने जंगल को तो देखो! यहीं पर गोपाल को छिपा दिया गया था।" रघुनाथ दास गोस्वामी भी *स्तवावली* (*व्रज-विलास-स्तव* ७५) में लिखते हैं :

व्रजेन्द्रवर्यार्पित भोगमुच्चै-
र्धृत्वा बृहत्कायमधारिरुत्कः।
वरेण राधां छलयन्विभुङ्क्ते
यत्रान्नकूटं तदहं प्रपद्ये॥

"जब नन्द महाराज ने गोवर्धन पर्वत को प्रचुर भोजन अर्पण किया, तब कृष्ण ने विशाल रूप धारण कर लिया और सबको उनसे वर माँगने के लिए आमन्त्रित किया। तब श्रीमती राधारानी के साथ भी छल करते हुए, उन्होंने सारा प्रस्तुत

भोजन खा लिया। मुझे अन्नकूट नाम से जाने जा रहे उस स्थान में शरण मिले, जहाँ भगवान् कृष्ण ने इन लीलाओं का आनन्द लूटा।"

এক-জন আসি' রাত্রে গ্রামীকে বলিল ।
'তোমার গ্রাম মারিতে তুরুক-ধারী সাজিল ॥২৭॥

এক-জন আসি' রাত্রে গ্রামীকে বলিল ।
'তোমার গ্রাম মারিতে তুরুক-ধারী সাজিল ॥ ২৭॥

एक-जन—एक व्यक्ति ने; **आसि'**—आकर; **रात्रे**—रात को; **ग्रामीके**—ग्रामवासियों के पास; **बलिल**—कहाँ; **तोमार**—तुम्हारे; **ग्राम**—गाँव पर; **मारिते**—आक्रमण करने हेतु; **तुरुक-धारी**—तुर्की मुस्लिम सिपाही; **साजिल**—तैयार हैं।

अनुवाद

एक व्यक्ति ने गाँव में आकर ग्रामवासियों को सूचित किया, "तुर्क सैनिक तुम लोगों के गाँव पर आक्रमण करने वाले हैं।

আজি রাত্র্যে পলাহ, না রহিহ এক-জন ।
ঠাকুর লঞা ভাগ', আসিবে কালি যবন' ॥২৮॥

আজি রাত্র্যে পলাহ, না রহিহ এক-জন ।
ঠাকুর লঞা ভাগ', আসিবে কালি য়বন' ॥ ২৮॥

आजि रात्र्ये—आज रात को; **पलाह**—भाग जाओ; **ना रहिह**—यहाँ न रहो; **एक-जन**—एक व्यक्ति; **ठाकुर**—भगवान् की मूर्ति को; **लञा**—लेकर; **भाग'**—भाग जाओ; **आसिबे**—आयेंगे; **कालि**—कल; **य़वन**—मुस्लिम सिपाही।

अनुवाद

"आज रात में इस गाँव से भाग जाओ और एक व्यक्ति भी यहाँ न रहे। अपने साथ गोपाल का अर्चाविग्रह लो और यहाँ से पलायन करो, क्योंकि मुसलमान सैनिक कल यहाँ आ जायेंगे।"

শুনিয়া গ্রামের লোক চিন্তিত হইল ।
প্রথমে গোপাল লঞা গাঁঠুলি-গ্রামে খুইল ॥২৯॥

शुनिया ग्रामेर लोक चिन्तित हइल ।
प्रथमे गोपाल लञा गाँठुलि-ग्रामे खुइल ॥ २९ ॥

शुनिया—यह सुनकर; **ग्रामेर लोक**—सभी ग्रामवासी; **चिन्तित हइल**—चिन्तित हो गये; **प्रथमे**—पहले; **गोपाल लञा**—गोपाल को लेकर; **गाँठुलि-ग्रामे**—गांठुली गाँव में; **खुइल**—उन्हें छुपा दिया।

अनुवाद

यह सुनकर सारे ग्रामवासी अत्यन्त चिन्तित हो उठे। पहले उन्होंने गोपाल को उठाया और फिर उन्हें गाँठुलि नामक गाँव में ले गये।

বিপ্র-গৃহে গোপালের নিভৃতে সেবন ।
গ্রাম উজাড় হৈল, পলাইল সর্ব-জন ॥ ৩০ ॥

विप्र-गृहे गोपालेर निभृते सेवन ।
ग्राम उजाड़ हैल, पलाइल सर्व-जन ॥ ३० ॥

विप्र-गृहे—एक ब्राह्मण के घर में; **गोपालेर**—भगवान् गोपाल की; **निभृते**—छुपकर; **सेवन**—पूजा होने लगी; **ग्राम**—गाँव; **उजाड़ हैल**—उजड़ गया; **पलाइल**—भाग गये; **सर्व-जन**—सभी लोग।

अनुवाद

गोपाल के अर्चाविग्रह को एक ब्राह्मण के घर में रखा गया और चोरी-चुपके उनकी पूजा की जाती रही। सभी लोगों के भाग जाने से अन्नकूट ग्राम उजाड़ हो गया था।

ঐছে ম্লেচ্ছ-ভয়ে গোপাল ভাগে বারে-বারে ।
মন্দির ছাড়ি' কুঞ্জে রহে, কিবা গ্রামান্তরে ॥ ৩১ ॥

ऐछे म्लेच्छ-भये गोपाल भागे बारे-बारे ।
मन्दिर छाड़ि' कुञ्जे रहे, किबा ग्रामान्तरे ॥ ३१ ॥

ऐछे—इस प्रकार; **म्लेच्छ-भये**—मुस्लिमों के भय से; **गोपाल**—गोपाल राय का अर्चाविग्रह; **भागे**—भाग गया; **बारे-बारे**—बारम्बार; **मन्दिर छाड़ि'**—मन्दिर छोड़कर; **कुञ्जे**—कुंज में, झाड़ी में; **रहे**—रहे; **किबा**—अथवा; **ग्राम-अन्तरे**—एक विभिन्न गाँव में।

अनुवाद

मुसलमानों के भय से गोपाल के अर्चाविग्रह को बारम्बार एक गाँव से दूसरे गाँव में ले जाया जा रहा था। इस तरह मन्दिर छोड़ने के बाद गोपाल कभी झाड़ी में तो कभी किसी गाँव में और कभी अन्य गाँव में रहे।

प्रातः-काले प्रभु 'मानस-गङ्गा'य करि' स्नान ।
गोवर्धन-परिक्रमाय करिला प्रयाण ॥ ३२॥

प्रातः-काले प्रभु 'मानस-गङ्गा'य करि' स्नान ।
गोवर्धन-परिक्रमाय करिला प्रयाण ॥ ३२॥

प्रातः-काले—प्रातः काल; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **मानस-गङ्गाय**—मानसगंगा नामक सरोवर में; **करि'**—करके; **स्नान**—स्नान; **गोवर्धन**—गोवर्धन पर्वत की; **परिक्रमाय**—परिक्रमा; **करिला**—की; **प्रयाण**—आरम्भ करके।

अनुवाद

प्रातःकाल श्री चैतन्य महाप्रभु ने मानसगंगा नामक कुंड में स्नान किया। फिर उन्होंने गोवर्धन की परिक्रमा की।

गोवर्धन देखि' प्रभु प्रेमाविष्ट हञा ।
नाचिते नाचिते चलिला श्लोक पड़िया ॥ ३३॥

गोवर्धन देखि' प्रभु प्रेमाविष्ट हञा ।
नाचिते नाचिते चलिला श्लोक पड़िया ॥ ३३॥

गोवर्धन देखि'—गोवर्धन पर्वत के दर्शन करने से; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **प्रेम-आविष्ट हञा**—प्रेमाविष्ट होकर; **नाचिते नाचिते**—नाचते नाचते; **चलिला**—चले; **श्लोक पड़िया**—श्लोक पढ़ते पढ़ते।

अनुवाद

गोवर्धन पर्वत को देखते ही श्री चैतन्य महाप्रभु कृष्ण-प्रेम से आविष्ट हो गये। उन्होंने नाचते-नाचते निम्नलिखित श्लोक सुनाया।

हन्तायमद्रिरबला हरि-दास-वर्यो
यद्राम-कृष्ण-चरण-स्परश-प्रमोदः ।
मानं तनोति सह-गो-गणयोस्तयोर्यत्
पानीय-सूयवस-कन्दर-कन्द-मूलैः ॥ ३४ ॥

हन्तायमद्रिरबला हरि-दास-वर्य्यो
य्रद्राम-कृष्ण-चरण-स्परश-प्रमोदः ।
मानं तनोति सह-गो-गणयोस्तयोर्य्रत्
पानीय-सूयवस-कन्दर-कन्द-मूलैः ॥ ३४ ॥

हन्त—ओह; **अयम्**—यह; **अद्रिः**—पर्वत; **अबलाः**—हे मित्रों; **हरि-दास-वर्य्यः**—भगवान् के सेवकों में से सर्वोत्तम; **य्रत्**—क्योंकि; **राम-कृष्ण-चरण**—भगवान् कृष्ण और बलराम के चरणकमलों के; **स्परश**—स्पर्श से; **प्रमोदः**—प्रसन्न होकर; **मानम्**—सम्मान; **तनोति**—प्रदान करता है; **सह**—के साथ; **गो-गणयोः**—गाएं, बछड़े और ग्वाले; **तयोः**—उनको (श्रीकृष्ण और बलराम को); **य्रत्**—क्योंकि; **पानीय**—पीने का जल; **सूयवस**—अति कोमल घास; **कन्दर**—गुफाएँ; **कन्द-मूलैः**—और कन्द मूल।

अनुवाद

"'सभी भक्तों में यह गोवर्धन पर्वत सर्वश्रेष्ठ है! हे सखियों, यह पर्वत कृष्ण तथा बलराम के साथ ही उनके बछड़ों, गायों तथा ग्वालमित्रों को सभी तरह की वस्तुएँ—पीने के लिए जल, कोमल घास, गुफाएँ, फल, फूल तथा तरकारियाँ—देता है। इस तरह यह पर्वत भगवान् का सम्मान करता है। गोवर्धन पर्वत कृष्ण तथा बलराम के चरणकमलों का स्पर्श पाकर अत्यन्त प्रफुल्लित दिखता है।"

तात्पर्य

यह उद्धरण *श्रीमद्भागवत* (१०.२१.१८) से है। शरद ऋतु में जब कृष्ण तथा बलराम ने जंगल में प्रवेश किया, तब गोपिकाओं ने यह कहा था। गोपियाँ परस्पर बातें करके कृष्ण तथा बलराम की लीलाओं का गुणगान कर रही थीं।

'गोविन्द-कुण्डादि' तीर्थे प्रभु कैला स्नान ।
ताहाँ शुनिला——गोपाल गेल गाँठुलि ग्राम ॥ ३५ ॥

'गोविन्द-कुण्डादि' तीर्थे प्रभु कैला स्नान ।
ताहाँ शुनिला—गोपाल गेल गाँठुलि ग्राम ॥ ३५ ॥

गोविन्द-कुण्ड-आदि—गोविन्द कुण्ड आदि; **तीर्थे**—तीर्थ स्थानों पर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कैला स्नान**—स्नान किया; **ताहाँ**—वहाँ; **शुनिला**—सुना; **गोपाल**—गोपाल भगवान्; **गेल**—गये हैं; **गाँठुलि**—गाँठुली; **ग्राम**—गाँव को।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने गोविन्द-कुण्ड में स्नान किया और वहाँ रहते हुए उन्होंने सुना कि गोपाल-अर्चाविग्रह पहले ही गाँठुलि ग्राम चले गये हैं।

সেই গ্রামে গিয়া কৈল গোপাল-দরশন ।
প্রেমাবেশে প্রভু করে কীর্তন-নর্তন ॥৩৬॥

सेइ ग्रामे गिया कैल गोपाल-दरशन ।
प्रेमावेशे प्रभु करे कीर्तन-नर्तन ॥ ३६ ॥

सेइ ग्रामे—उसी गाँव को; **गिया**—जाकर; **कैल**—किए; **गोपाल-दरशन**—गोपाल के दर्शन; **प्रेम-आवेशे**—प्रेमावेश में; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **करे**—किया; **कीर्तन-नर्तन**—कीर्तन और नर्तन।

अनुवाद

इसके बाद श्री चैतन्य महाप्रभु गाँठुलि ग्राम गये और वहाँ उन्होंने गोपाल अर्चाविग्रह का दर्शन किया। वे प्रेमाविष्ट होकर कीर्तन तथा नृत्य करने लगे।

গোপালের সৌন্দর্য দেখি' প্রভুর আবেশ ।
এই শ্লোক পড়ি' নাচে, হৈল দিন-শেষ ॥৩৭॥

गोपालेर सौन्दर्य देखि' प्रभुर आवेश ।
एइ श्लोक पड़ि' नाचे, हैल दिन-शेष ॥ ३७ ॥

गोपालेर—गोपाल का; **सौन्दर्य**—सौन्दर्य; **देखि'**—देखकर; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **आवेश**—प्रेमावेश; **एइ श्लोक पड़ि'**—इस श्लोक को पढ़कर; **नाचे**—नाचने लगे; **हैल**—हो गया; **दिन-शेष**—दिन समाप्त।

अनुवाद

गोपाल-अर्चाविग्रह का सौन्दर्य देखते ही महाप्रभु प्रेमाविष्ट हो गये और उन्होंने निम्नलिखित श्लोक पढ़ा। फिर वे दिन डूबने तक कीर्तन करते रहे और नाचते रहे।

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर गोविन्द-कुण्ड के विषय में निम्नलिखित जानकारी देते हैं। पैठा गाँव से थोड़ी दूरी पर गोवर्धन पर्वत पर आनियोर नामक गाँव है। गोविन्द-कुण्ड इसी के निकट स्थित है और यहीं पर गोविन्द तथा बलदेव के दो मन्दिर हैं। कुछ लोगों के अनुसार महारानी पद्मावती ने यह कुण्ड खुदवाया था। *भक्ति-रत्नाकर* (पंचम तरंग) में निम्नलिखित कथन पाया जाता है :

एइ श्री-गोविन्द-कुण्ड-महिमा अनेक।
एथा इन्द्र कैल गोविन्देर अभिषेक॥

"गोविन्द-कुण्ड अपने अनेक आध्यात्मिक क्रियाकलापों के लिए प्रसिद्ध है। यहीं पर भगवान् गोविन्द द्वारा पराजित इन्द्र ने उनकी स्तुति की थी तथा उनका अभिषेक कराया था।" *स्तवावली* (*व्रजविलास स्तव* ७४) में निम्नलिखित श्लोक पाया जाता है :

नीचैः प्रौढभयात् स्वयं सुरपतिः पादौ विधृत्येह यैः
स्वर्गङ्गासलिलैश्चकार सुरभिद्वाराभिषेकोत्सवम्।
गोविन्दस्य नवं गवामधिपता राज्ये स्फुटं कौतुकात्
तैर्यत् प्रादुरभूत् सदा स्फुरतु तद् गोविन्दकुण्डं दृशोः॥

"अत्यन्त भय के कारण उत्पन्न दीनता से इन्द्र ने भगवान् कृष्ण के चरणकमलों को पकड़ लिया और सुरभि गाय की उपस्थिति में उनका अभिषेक-उत्सव स्वर्गिक गंगा नदी के जल से नहलाकर किया। इस प्रकार भगवान् कृष्ण का गौवों पर स्वामित्व अद्भुत रूप से प्रकट हो गया। मैं प्रार्थना करता हूँ कि उस स्नानोत्सव से उत्पन्न सरोवर गोविन्द कुण्ड मेरे नेत्रों के सम्मुख नित्य विद्यमान रहे।"

मथुरा खण्ड में भी यह कहा गया है :

यत्राभिषिक्तो भगवान् मघोना यदुवैरिणा।
गोविन्दकुण्डं तज्जातं स्नानमात्रेण मोक्षदम्॥

"गोविन्द कुण्ड में केवल स्नान करने से मनुष्य को मोक्ष मिल जाता है। इस कुण्ड की सृष्टि तब हुई जब श्रीकृष्ण को राजा इन्द्र ने स्नान कराया था।"

गाँठुलि ग्राम बिलछु तथा गोपालपुर नामक दो गाँवों के पास स्थित है। किवदन्ती के अनुसार यहीं पर राधा और कृष्ण पहली बार मिले थे। *भक्ति-रत्नाकर* (पंचम तरंग) में कहा गया है— *सखी दुँह वस्त्रे गांठि दिल सङ्गोपने :* "किसी सखी ने दोनों (राधा-कृष्ण) के बाह्य वस्त्रों में चुपके से गाँठ लगा दी। यह भी कहा जाता है— *फागुया लैया केह गांठि खुलि दिला।* "फागुया लेकर उन्होंने गाँठ खोल दी।" इसीलिए यह गाँव गाँठुलि कहलाता है।

বামস্তামরসাক্ষস্য ভুজ-দণ্ডঃ স পাতু বঃ ।
ক্রীড়া-কন্দুকতাং যেন নীতো গোবর্ধনো গিরিঃ ॥৩৮॥

वामस्तामरसाक्षस्य भुज-दण्डः स पातु वः ।
क्रीड़ा-कन्दुकतां ग्रेन नीतो गोवर्धनो गिरिः ॥ ३८ ॥

वामः—बायाँ; **तामरस-अक्षस्य**—कमल की पत्तियों जैसे नेत्रों वाले कृष्ण की; **भुज-दण्डः**—भुजा; **सः**—वह; **पातु**—रक्षा करे; **वः**—आप सबकी; **क्रीड़ा-कन्दुकताम्**—एक खिलौने की तरह; **ग्रेन**—जिससे; **नीतः**—उठाया; **गोवर्धनः**—गोवर्धन; **गिरिः**—पर्वत।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "कमल-फूल की पंखुड़ियों जैसे नेत्र वाले श्रीकृष्ण की वाम भुजा आपकी सदैव रक्षा करे। उन्होंने अपनी इसी भुजा से गोवर्धन पर्वत को खिलौने की तरह उठा लिया था।"

तात्पर्य

यह श्लोक *भक्तिरसामृतसिन्धु* (२.१.६२) में पाया जाता है।

এই-মত তিন-দিন গোপালে দেখিলা ।
চতুর্থ-দিবসে গোপাল স্বমন্দিরে গেলা ॥৩৯॥

एइ-मत तिन-दिन गोपाले देखिला ।
चतुर्थ-दिवसे गोपाल स्वमन्दिरे गेला ॥ ३९ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **तिन-दिन**—तीन दिन तक; **गोपाले**—गोपाल के; **देखिला**—दर्शन किये; **चतुर्थ-दिवसे**—चौथे दिन; **गोपाल**—गोपाल अर्चाविग्रह; **स्व-मन्दिरे**—अपने मन्दिर में; **गेला**—लौट गये।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने गोपाल-अर्चाविग्रह का तीन दिन तक दर्शन किया। चौथे दिन यह विग्रह अपने मन्दिर में लौट गये।

गोपाल सङ्गे चलि' आइला नृत्य-गीत करि ।
आनन्द-कोलाहले लोक बले 'हरि' 'हरि' ॥ ४० ॥

गोपाल सङ्गे चलि' आइला नृत्य-गीत करि ।
आनन्द-कोलाहले लोक बले 'हरि' 'हरि' ॥ ४० ॥

गोपाल सङ्गे—गोपाल के संग; **चलि'**—चलकर; **आइला**—आये; **नृत्य-गीत करि**—नृत्य गान करते हुए; **आनन्द-कोलाहले**—अत्यन्त आनन्दपूर्वक; **लोक**—लोगों ने; **बले**—कहा; **हरि हरि**—"हरि, हरि"।

अनुवाद

चैतन्य महाप्रभु गोपल विग्रह के साथ-साथ चलने लगे और कीर्तन तथा नृत्य करने लगे। लोगों की विशाल तथा हर्षित भीड़ भी साथ-साथ कृष्ण के दिव्य नाम "हरि! हरि!" का कीर्तन करने लगी।

गोपाल मन्दिरे गेला, प्रभु रहिला तले ।
प्रभुर वाञ्छा पूर्ण सब करिल गोपाले ॥ ४१ ॥

गोपाल मन्दिरे गेला, प्रभु रहिला तले ।
प्रभुर वाञ्छा पूर्ण सब करिल गोपाले ॥ ४१ ॥

गोपाल—गोपाल अर्चाविग्रह; **मन्दिरे गेला**—अपने मन्दिर में लौट गये; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **रहिला तले**—पर्वत के नीचे रहे; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **वाञ्छा**—इच्छाएँ; **पूर्ण**—पूरी; **सब**—सब; **करिल**—की; **गोपाले**—गोपाल विग्रह ने।

अनुवाद

तब गोपाल अपने मन्दिर लौट गये और श्री चैतन्य महाप्रभु पर्वत की

तलहटी पर रहे। इस तरह गोपाल विग्रह ने श्री चैतन्य महाप्रभु की सारी इच्छाएँ पूरी कर दीं।

এই-মত গোপালের করুণ স্বভাব ।
যেই ভক্ত জনের দেখিতে হয় 'ভাব' ॥ ৪২ ॥

এइ-मत गोपालेर करुण स्वभाव ।
येइ भक्त जनेर देखिते हय 'भाव' ॥ ४२ ॥

एइ-मत—इस तरह; **गोपालेर**—गोपाल अर्चाविग्रह का; **करुण स्वभाव**—करूणामय स्वभाव; **येइ**—जो; **भक्त जनेर**—भक्त जनों को; **देखिते**—देखकर; **हय**—हो गये; **भाव**—प्रेमावेश।

अनुवाद

भगवान् गोपाल अपने भक्तों के प्रति ऐसा ही दयापूर्ण आचरण करते हैं। यह देखकर भक्तगण भावाविष्ट हो गये।

দেখিতে উৎকণ্ঠা হয়, না চড়ে গোবর্ধনে ।
কোন ছলে গোপাল আসি' উতরে আপনে ॥ ৪৩ ॥

देखिते उत्कण्ठा हय, ना चड़े गोवर्धने ।
कोन छले गोपाल आसि' उतरे आपने ॥ ४३ ॥

देखिते—देखने के लिए; **उत्कण्ठा हय**—उत्सुक था; **ना चड़े**—ऊपर नहीं चढ़ते थे; **गोवर्धने**—गोवर्धन पर्वत पर; **कोन छले**—किसी चाल से; **गोपाल**—गोपाल अर्चाविग्रह; **आसि'**—आकर; **उतरे**—उतरे; **आपने**—स्वयं।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु गोपाल को देखने के लिए अत्यन्त उत्कण्ठित थे, किन्तु वे गोवर्धन पर्वत पर चढ़ना नहीं चाहते थे। इसलिए गोपाल विग्रह किसी युक्ति से स्वयं नीचे उतर आये।

কভু কুঞ্জে রহে, কভু রহে গ্রামান্তরে ।
সেই ভক্ত, তাহাঁ আসি' দেখয়ে তাঁহারে ॥ ৪৪ ॥

कभु कुञ्जे रहे, कभु रहे ग्रामान्तरे ।
सेइ भक्त, ताहाँ आसि' देखये ताँहारे ॥ ४४॥

कभु—कभी-कभी; **कुञ्जे**—कुंजों में; **रहे**—रहते हैं; **कभु**—कभी-कभी; **रहे**—वे रहते हैं; **ग्राम-अन्तरे**—अन्य गाँव में; **सेइ भक्त**—वही भक्त; **ताहाँ आसि'**—वहाँ आकर; **देखये ताँहारे**—उनको देखता है।

अनुवाद

इस तरह किसी न किसी बहाने गोपाल कभी जंगल की झाड़ी में तो कभी गाँव में रुकते हैं। जो भक्त होता है, वह अर्चाविग्रह के दर्शन करने आता है।

পর্বতে না চড়ে দুই——রূপ-সনাতন ।
এই-রূপে তাঁ-সবারে দিয়াছেন দরশন ॥ ৪৫॥

पर्वते ना चड़े दुइ——रूप-सनातन ।
एइ-रूपे ताँ-सबारे दियाछेन दरशन ॥ ४५॥

पर्वते—पर्वत पर; **ना चड़े**—नहीं चढ़े; **दुइ**—दोनों; **रूप-सनातन**—रूप गोस्वामी और सनातन गोस्वामी; **एइ-रूपे**—इस प्रकार; **ताँ-सबारे**—उनको; **दियाछेन**—दिया; **दरशन**—दर्शन।

अनुवाद

रूप तथा सनातन दोनों भाई पर्वत पर नहीं चढ़े। गोपालजी ने उन्हें भी अपना दर्शन दिया।

বৃদ্ধ-কালে রূপ-গোসাঞি না পারে যাইতে ।
বাঞ্ছা হৈল গোপালের সৌন্দর্য দেখিতে ॥ ৪৬॥

वृद्ध-काले रूप-गोसाञि ना पारे याइते ।
वाञ्छा हैल गोपालेर सौन्दर्य देखिते ॥ ४६॥

वृद्ध-काले—वृद्धावस्था में; **रूप-गोसाञि**—रूप गोस्वामी; **ना पारे**—असमर्थ थे; **याइते**—जाने में; **वाञ्छा हैल**—इच्छा थी; **गोपालेर**—गोपाल के; **सौन्दर्य देखिते**—सौन्दर्य को देखने की।

अनुवाद

श्रील रूप गोस्वामी वृद्धावस्था में वहाँ नहीं जा सकते थे, किन्तु गोपाल का सौन्दर्य देखने की उनकी इच्छा थी।

म्लेच्छ-भये आइला गोपाल मथुरा-नगरे ।
एक-मास रहिल विठ्ठलेश्वर-घरे ॥ ४७॥

म्लेच्छ-भये आइला गोपाल मथुरा-नगरे ।
एक-मास रहिल विठ्ठलेश्वर-घरे ॥ ४७॥

म्लेच्छ-भये—मुस्लिमों के भय से; **आइला**—आये; **गोपाल**—गोपाल अर्चाविग्रह; **मथुरा-नगरे**—मथुरा नगर में; **एक-मास**—एक मास; **रहिल**—रहे; **विठ्ठलेश्वर-घरे**—विठ्ठलेश्वर के मन्दिर में।

अनुवाद

मुसलमानों के भय से गोपाल मथुरा चले गये, जहाँ विठ्ठलेश्वर के मन्दिर में वे पूरे एक मास तक रहे।

तात्पर्य

जब श्रील रूप गोस्वामी तथा सनातन गोस्वामी दोनों भाई वृन्दावन गये, तो उन्होंने वहीं रहने का निश्चय किया। वे भी श्री चैतन्य महाप्रभु का उदाहरण अपने सामने रखकर पर्वत पर नहीं चढ़े, क्योंकि वे इस पर्वत को पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् कृष्ण से अभिन्न मानते थे। गोपाल ने कुछ बहाना करके श्री चैतन्य महाप्रभु को पर्वत के नीचे दर्शन दिया था। उसी तरह उन्होंने रूप गोस्वामी तथा सनातन गोस्वामी पर भी कृपा दिखलाई। जब अपनी वृद्ध अवस्था की असमर्थता के कारण रूप गोस्वामी गोवर्धन पर्वत नहीं जा सके, तब गोपाल कृपा करके मथुरा चले गये और विठ्ठलेश्वर मन्दिर में एक मास तक रहे। तभी श्रील रूप गोस्वामी ने जी-भरकर गोपाल के सौन्दर्य का अवलोकन किया।

भक्ति-रत्नाकर (पंचम तरंग) में विठ्ठलेश्वर मन्दिर का निम्नलिखित वर्णन मिलता है :

विट्ठलेर सेवा कृष्णचैतन्य-विग्रह।
ताहार दर्शने हैल परम आग्रह॥

श्रीविठ्ठलनाथ—भट्ट-वल्लभ-तनय ।
करिला यतेक प्रीति कहिले ना हय॥
गाठोलिग्रामे गोपाल आइला 'छल' करि'।
ताँरे देखि 'नृत्ये-गीते मग्न गौरहरि॥
श्रीदास-गोस्वामी आदि परामर्श करि'।
श्रीविठ्ठलेश्वरे कैला सेवा-अधिकारी॥
पिता श्री-वल्लभ-भट्ट ताँर अदर्शने।
कत-दिन मथुराय छिलेन निर्जने॥

श्री वल्लभ भट्ट के दो पुत्र थे। ज्येष्ठ पुत्र गोपीनाथ का जन्म १४३२ शकाब्द (१५१० ई.) में और छोटे पुत्र विठ्ठलेश्वर का जन्म १४३७ (१५१५ ई.) में तथा देहान्त १५०७ शकाब्द (१५८५ ई.) में हुआ। विठ्ठलेश्वर के सात पुत्र थे—गिरिधर, गोविन्द, बालकृष्ण, गोकुलेश, रघुनाथ, यदुनाथ तथा घनश्याम। विठ्ठलेश्वर ने अपने पिता के कई अपूर्ण ग्रन्थों को पूरा किया—यथा *वेदान्त-सूत्र* का भाष्य, *श्रीमद्भागवत* की सुबोधिनी टीका, विद्वन्मण्डन, शृंगार-रस-मण्डन तथा न्यासादेश-विवरण। श्री चैतन्य महाप्रभु विठ्ठलेश्वर के जन्म के पूर्व वृन्दावन गये थे। जब गोपाल विठ्ठलेश्वर के घर पर रखे हुए थे, तब श्रील रूप गोस्वामी अत्यन्त वृद्ध हो चुके थे।

তবে রূপ গোসাঞি সব নিজ-গণ লঞা ।
এক-মাস দরশন কৈলা মথুরায় রহিয়া ॥ ৪৮॥

तबे रूप गोसाञि सब निज-गण लञा ।
एक-मास दरशन कैला मथुराय रहिया ॥ ४८॥

तबे—तब; **रूप गोसाञि**—श्रील रूप गोस्वामी; **सब**—सब; **निज-गण लञा**—आपने साथियों को साथ लेकर; **एक-मास**—एक मास के लिए; **दरशन कैला**—भगवान् के अर्चाविग्रह के दर्शन किए; **मथुराय रहिया**—मथुरा नगरी में रहकर।

अनुवाद

श्रील रूप गोस्वामी तथा उनके संगी एक मास तक मथुरा में रहे और उन्होंने वहाँ गोपाल विग्रह का दर्शन किया।

সঙ্গে গোপাল-ভট্ট, দাস-রঘুনাথ ।
রঘুনাথ-ভট্ট-গোসাঞি, আর লোকনাথ ॥ ৪৯॥

সঙ্গে গোপাল-ভট্ট, দাস-রঘুনাথ ।
রঘুনাথ-ভট্ট-গোসাঞি, আর লোকনাথ ॥ ৪৯॥

सङ्गे—रूप गोस्वामी के साथ; **गोपाल-भट्ट**—गोपाल भट्ट; **दास-रघुनाथ**—रघुनाथ दास गोस्वामी; **रघुनाथ-भट्ट-गोसाञि**—रघुनाथ भट्ट गोस्वामी; **आर**—और; **लोकनाथ**—लोकनाथ दास गोस्वामी।

अनुवाद

जब रूप गोस्वामी मथुरा में रुके थे, तब उनके साथ गोपाल भट्ट गोस्वामी, रघुनाथ दास गोस्वामी, रघुनाथ भट्ट गोस्वामी तथा लोकनाथ दास गोस्वामी थे।

तात्पर्य

श्री लोकनाथ गोस्वामी श्री चैतन्य महाप्रभु के निजी संगी थे और बहुत महान् भगवद्भक्त थे। वे बंगाल प्रान्त के यशोहर (जेस्सोर) जिले में तालखड़ि गाँव के निवासी थे। पहले वे काच्नापाड़ा में रहते थे। उनके पिता का नाम पद्मनाभ था और उनका एकमात्र छोटा भाई प्रगल्भ था। श्री लोकनाथ श्री चैतन्य महाप्रभु के आदेश से ही वृन्दावन में रहने गये थे। उन्होंने गोकुलानन्द नामक मन्दिर की स्थापना की। श्रील नरोत्तम दास ठाकुर ने लोकनाथ दास गोस्वामी को ही अपना गुरु बनाया और वे ही उनके एकमात्र शिष्य थे। चूँकि लोकनाथ दास गोस्वामी नहीं चाहते थे कि *चैतन्य-चरितामृत* में उनके नाम का उल्लेख हो, इसलिए इस प्रसिद्ध ग्रन्थ में प्राय: उनका नाम नहीं पाया जाता। अब यशोहर स्टेशन पूर्वी बंगाल रेलवे लाईन पर बाँग्लादेश में है। रेलवे स्टेशन से बस द्वारा सोनाखाली जाना पड़ता है, जहाँ से खेजुरा जाना होता है। फिर वहाँ से पैदल या बरसात में नाव से तालखड़ि गाँव पहुँचा जा सकता है। आज भी इस गाँव में लोकनाथ गोस्वामी के छोटे भाई के वंशज रह रहे हैं।

ভূগর্ভ-গোসাঞি, আর শ্রী-জীব-গোসাঞি ।
শ্রী-যাদব-আচার্য, আর গোবিন্দ গোসাঞি ॥ ৫০॥

भूगर्भ-गोसाञि, आर श्री-जीव-गोसाञि ।
श्री-यादव-आचार्य्य, आर गोविन्द गोसाञि ॥ ५० ॥

भूगर्भ-गोसाञि—भूगर्भ गोसांइ; **आर**—और; **श्री-जीव-गोसाञि**—श्री जीव गोस्वामी; **श्री-यादव-आचार्य्य**—श्री यादव आचार्य; **आर**—और; **गोविन्द गोसाञि**—गोविन्द गोस्वामी।

अनुवाद

श्रील रूप गोस्वामी के साथ भूगर्भ गोस्वामी, श्री जीव गोस्वामी, श्री यादव आचार्य तथा गोविन्द गोस्वामी भी थे।

श्री-उद्धव-दास, आर माधव—दुई-जन ।
श्री-गोपाल-दास, आर दास-नारायण ॥ ५१ ॥
श्री-उद्धव-दास, आर माधव—दुइ-जन ।
श्री-गोपाल-दास, आर दास-नारायण ॥ ५१ ॥

श्री-उद्धव-दास—श्री उद्धव दास; **आर**—और; **माधव**—माधव; **दुइ-जन**—दो व्यक्ति; **श्री-गोपाल-दास**—श्री गोपाल दास; **आर**—और; **दास-नारायण**—नारायण दास।

अनुवाद

उनके साथ श्री उद्धव दास, माधव, श्री गोपाल दास तथा नारायण दास भी थे।

'गोविन्द' भक्त, आर वाणी-कृष्णदास ।
पुण्डरीकाक्ष, ईशान, आर लघु-हरिदास ॥ ५२ ॥
'गोविन्द' भक्त, आर वाणी-कृष्णदास ।
पुण्डरीकाक्ष, ईशान, आर लघु-हरिदास ॥ ५२ ॥

गोविन्द—गोविन्द; **भक्त**—एक महान् भक्त; **आर**—और; **वाणी-कृष्णदास**—वाणी कृष्णदास; **पुण्डरीकाक्ष**—पुण्डरीकाक्ष; **ईशान**—ईशान; **आर**—और; **लघु-हरिदास**—लघु हरिदास।

अनुवाद

महान् भक्त गोविन्द, वाणी कृष्णदास, पुण्डरीकाक्ष, ईशान तथा लघु हरिदास भी उनके साथ थे।

तात्पर्य

लघु हरिदास तथा प्रयाग में आत्महत्या करने वाले छोटा हरिदास में भ्रान्ति नहीं होनी चाहिए। कोई भी भक्त सामान्य रूप से हरिदास होता है। फलतः कई हरिदास हो चुके हैं। किन्तु प्रधान थे ठाकुर हरिदास। एक मध्यम हरिदास भी थे।

भक्ति रत्नाकर (*षष्ठ तरंग*) में श्रील रूप गोस्वामी के साथ रहने वाले बहुत से प्रमुख भक्तों की सूची दी हुई है :

गोस्वामी गोपाल-भट्ट अति दयामय
भूगर्भ, श्रीलोकनाथ—गुणेर आलय।
श्री-माधव, श्रीपरमानन्द-भट्टाचार्य
श्रीमधुपण्डित,—याँर चरित्र आश्चर्य।
प्रेमी कृष्णदास कृष्णदास ब्रह्मचारी
यादव आचार्य, नारायण कृपावान्
श्रीपुण्डरीकाक्ष-गोसाँइ, गोविन्द, ईशान।
श्रीगोविन्द, वाणी कृष्णदास अत्युदार
श्रीउद्धव—मध्ये मध्ये गौड़े गति याँर।
द्विज-हरिदास कृष्णदास कविराज
श्रीगोपालदास याँर अलौकिक काय
श्रीगोपाल, माधवादि यतेक वैष्णव॥

"श्रील रूप गोस्वामी के साथ निम्नलिखित वैष्णव उपस्थित थे—दयावान गोपाल भट्ट गोस्वामी, भूगर्भ गोस्वामी, सद्गुणों की खान श्री लोकनाथ दास गोस्वामी, श्री माधव, श्री परमानन्द भट्टाचार्य, अद्भुत गुणों वाले श्री मधु पण्डित, प्रेमी कृष्णदास, कृष्णदास ब्रह्मचारी, यादव आचार्य, दयालु नारायण, श्री पुण्डरीकाक्ष गोस्वामी, गोविन्द, ईशान, श्री गोविन्द, वदान्य वाणी कृष्णदास, यदाकदा बंगाल जाते रहने वाले श्री उद्धव, द्विज हरिदास, कृष्णदास कविराज, पूर्णतः अलौकिक शरीर वाला श्री गोपाल दास, श्री गोपाल, माधव तथा अनेक अन्य।"

এই সব মুখ্য-ভক্ত লঞা নিজ-সঙ্গে ।
শ্রী-গোপাল দরশন কৈলা বহু-রঙ্গে ॥ ৫৩ ॥

এइ সব মুখ্য-ভক্ত লঞা নিজ-সঙ্গে ।
শ্রী-গোপাল দরশন কৈলা বহু-রঙ্গে ॥ ৫৩ ॥

এइ সব—इन सब; **মুখ্য-ভক্ত**—मुख्य भक्तों को; **লঞা নিজ-সঙ্গে**—अपने साथ लेकर; **শ্রী-গোপাল দরশন**—भगवान् गोपाल का दर्शन; **কৈলা বহু-রঙ্গে**—बड़े हर्ष से किया।

अनुवाद

श्री रूप गोस्वामी ने परम प्रसन्नतापूर्वक इन सारे भक्तों के साथ भगवान् गोपाल का दर्शन किया।

এক-মাস রহি' গোপাল গেলা নিজ-স্থানে ।
শ্রী-রূপ-গোসাঞি আইলা শ্রী-বৃন্দাবনে ॥ ৫৪ ॥

এক-মাস রহি' গোপাল গেলা নিজ-স্থানে ।
শ্রী-রূপ-গোসাঞি আইলা শ্রী-বৃন্দাবনে ॥ ৫৪ ॥

এক-মাস রহি'—एक मास रहकर; **গোপাল**—गोपाल अर्चाविग्रह; **গেলা**—गये; **নিজ-স্থানে**—अपने स्थान पर; **শ্রী-রূপ-গোসাঞি**—श्री रूप गोस्वामी; **আইলা**—लौट गये; **শ্রী-বৃন্দাবনে**—वृन्दावन को।

अनुवाद

मथुरा में एक मास रुके रहने के बाद गोपाल-अर्चाविग्रह अपने स्थान लौट गये और श्री रूप गोस्वामी वृन्दावन चले आये।

প্রস্তাবে কহিলুঁ গোপাল-কৃপার আখ্যান ।
তবে মহাপ্রভু গেলা 'শ্রী-কাম্যবন' ॥ ৫৫ ॥

প্রস্তাবে কহিলুঁ গোপাল-কৃপার আখ্যান ।
তবে মহাপ্রভু গেলা 'শ্রী-কাম্যবন' ॥ ৫৫ ॥

প্রস্তাবে—इस कथा के दौरान; **কহিলুঁ**—मैंने बताया; **গোপাল-কৃপার**—गोपाल की कृपा का; **আখ্যান**—वर्णन; **তবে**—तत्पश्चात्; **মহাপ্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **গেলা**—चले गये; **শ্রী-কাম্য-বন**—श्री काम्यवन को।

अनुवाद

इस कथा के मध्य मैं गोपाल की दया का वर्णन कर चुका हूँ। श्री चैतन्य महाप्रभु गोपाल विग्रह का दर्शन करने के बाद श्री काम्यवन गये।

तात्पर्य

आदिवराह पुराण में काम्यवन का वर्णन आया है :

चतुर्थं काम्यकवनं वनानां वनमुत्तमम्।
तत्र गत्वा नरो देवि मम लोके महीयते॥

शिवजी ने कहा : "इनमें से सर्वोत्तम वन चौथा वन है, जिसका नाम है काम्यक। हे देवी, जो कोई भी वहाँ जाता है, वह मेरे धाम की महिमा का आनन्द उठाने का पात्र है।"

भक्ति रत्नाकर (पंचम तरंग) में भी कहा गया है :

एइ काम्यवने कृष्णलीला मनोहर
करिबे दर्शन स्थान कुण्ड बहुतर
काम्यवने यत्र तीर्थ लेखा नाहि तार।

"इस काम्यवन में कृष्ण ने मनमोहक लीलाएँ कीं। यहाँ आप अनेक सरोवरों तथा अन्य दिव्य स्थलों के दर्शन कर सकेंगे। काम्यवन में पाए जाने वाले सभी पवित्र तीर्थों का लिखकर वर्णन करना भी मेरे लिए सम्भव नहीं है।

प्रभुर गमन-रीति पूर्वे ये लिखिल ।
सेइ-मत वृन्दावने तावद्देखिल ॥५६॥

प्रभुर गमन-रीति पूर्वे ये लिखिल ।
सेइ-मत वृन्दावने तावत्देखिल ॥५६॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **गमन-रीति**—यात्रा की रीति; **पूर्वे**—पहले; **ये**—जो; **लिखिल**—मैंने लिखी है; **सेइ-मत**—उसी प्रकार; **वृन्दावने**—वृन्दावन में; **तावत् देखिल**—सभी स्थानों में गये।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु का वृन्दावन भ्रमण पहले ही वर्णित हो चुका है। उन्होंने उसी प्रेमभाव से सारे वृन्दावन की यात्रा की।

তাহাঁ লীলা-স্থলী দেখি' গেলা 'নন্দীশ্বর' ।
'নন্দীশ্বর' দেখি' প্রেমে হইলা বিহ্বল ॥৫৭॥

তাহাঁ লীলা-স্থলী দেখি' গেলা 'নন্দীশ্বর' ।
'নন্দীশ্বর' দেখি' প্রেমে হইলা বিহ্বল ॥৫৭॥

তাহাঁ—কাম্যবন में; **লীলা-স্থলী**—लीला के सारे स्थान; **দেখি'**—देखकर; **গেলা নন্দীশ্বর**—नन्दीश्वर गये; **নন্দীশ্বর দেখি'**—नन्दीश्वर देखकर; **প্রেমে হইলা বিহ্বল**—प्रेम में विह्वल हो गये।

अनुवाद

काम्यवन में कृष्ण के लीला-स्थलों को देखने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु नन्दीश्वर गये। वहाँ पर वे प्रेम से विह्वल हो उठे।

तात्पर्य

नन्दीश्वर महाराज नन्द का घर है।

'পাবনাদি' সব কুণ্ডে স্নান করিয়া ।
লোকেরে পুছিল, পর্বত-উপরে যাঞা ॥৫৮॥

'পাবনাদি' সব কুণ্ডে স্নান করিয়া ।
লোকেরে পুছিল, পর্বত-উপরে যাঞা ॥৫৮॥

পাবন-আদি—पावन आदि; **সব কুণ্ডে**—सब कुण्डों में; **স্নান করিয়া**—स्नान करके; **লোকেরে পুছিল**—वहाँ लोगों से पूछा; **পর্বত-উপরে যাঞা**—पर्वत के ऊपर चढ़े।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने पावन सरोवर इत्यादि समस्त विख्यात कुण्डों में स्नान किया। तत्पश्चात् वे एक पर्वत पर चढ़ गये और लोगों से पूछा।

तात्पर्य

पावन सरोवर का वर्णन *मथुरा माहात्म्य* में आया है :

पावने सरसि स्नात्वा कृष्णं नन्दीश्वरे गिरौ।
दृष्ट्वा नन्दं यशोदां च सर्वाभिष्टमवाप्नुयात्॥

"जो नन्दीश्वर पर्वत के निकट स्थित पावन सरोवर में स्नान करेगा, वह वहाँ नन्द तथा यशोदा के साथ कृष्ण का दर्शन करेगा और अपनी समस्त इच्छाएँ पूर्ण करेगा।"

কিছু দেব-মূর্তি হয় পর্বত-উপরে? ।
লোক কহে,—মূর্তি হয় গোফার ভিতরে ॥৫৯॥

কিছু দেব-মূর্তি হয় পর্বত-উপরে? ।
লোক কহে,—মূর্তি হয় গোফার ভিতরে ॥৫৯॥

किछु—कोई; **देव-मूर्ति**—देव मूर्ति; **हय**—वहाँ हैं; **पर्वत-उपरे**—पर्वत की चोटी पर; **लोक कहे**—लोगों ने उत्तर दिया; **मूर्ति हय**—हाँ, वहाँ मूर्तियाँ हैं; **गोफार भितरे**—गुफा के भीतर।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने पूछा, "क्या इस पर्वत के ऊपर कोई देव-मूर्ति है?" स्थानीय लोगों ने उत्तर दिया, "इस पर्वत पर देव-मूर्तियाँ हैं, किन्तु वे एक गुफा के भीतर स्थित हैं।

দুই-দিকে মাতা-পিতা পুষ্ট কলেবর ।
মধ্যে এক 'শিশু' হয় ত্রিভঙ্গ-সুন্দর ॥৬০॥

দুই-দিকে মাতা-পিতা পুষ্ট কলেবর ।
মধ্যে এক 'শিশু' হয় ত্রিভঙ্গ-সুন্দর ॥৬০॥

दुइ-दिके—दोनों ओर; **माता-पिता**—माता पिता; **पुष्ट कलेवर**—सुगठित शरीर; **मध्ये**—उनके मध्य; **एक**—एक; **शिशु**—शिशु; **हय**—है; **त्रि-भङ्ग**—तीन स्थानों पर वह टेढ़ा; **सुन्दर**—सुन्दर।

अनुवाद

"वहाँ सुगठित शरीर वाले माता-पिता हैं और उनके बीच में एक अत्यन्त सुन्दर शिशु है, जो तीन स्थानों से टेढ़ा (त्रिभंग) है।"

শুনি' মহাপ্রভু মনে আনন্দ পাঞা ।
'তিন' মূর্তি দেখিলা সেই গোফা উঘাড়িয়া ॥৬১॥

শুনি' মহাপ্রভু মনে আনন্দ পাঞা ।
'তিন' মূর্তি দেখিলা সেই গোফা উঘাড়িয়া ॥৬১॥

शुनि'—यह सुनकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **मने**—मन में; **आनन्द पाञा**—

आनन्द अनुभव करके; **तिन मूर्ति**—तीन मूर्तियाँ; **देखिला**—देखी; **सेइ गोफा उघाड़िया**—उस गुफा को खुदवाकर।

अनुवाद

यह सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु अत्यन्त प्रसन्न हुए। गुफा की खुदाई कराने पर उन्हें तीन मूर्तियाँ दिखीं।

ব্রজেন্দ্র-ব্রজেশ্বরীর কৈল চরণ বন্দন ।
প্রেমাবেশে কৃষ্ণের কৈল সর্বাঙ্গ-স্পর্শন ॥ ৬২ ॥

व्रजेन्द्र-व्रजेश्वरीर कैल चरण वन्दन ।
प्रेमावेशे कृष्णेर कैल सर्वाङ्ग-स्पर्शन ॥ ६२ ॥

व्रज-इन्द्र—व्रज के राजा, नन्द महाराज; **व्रज-ईश्वरीर**—और व्रज की रानी, माता यशोदा; **कैल**—की; **चरण वन्दन**—चरणकमलों की पूजा; **प्रेम-आवेशे**—प्रेमावेश में आकर; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण के; **कैल**—किया; **सर्व-अङ्ग-स्पर्शन**—सारे शरीर का स्पर्श।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने नन्द महाराज तथा माता यशोदा को सादर नमस्कार किया और अत्यन्त प्रेमाविष्ट होकर उन्होंने भगवान् कृष्ण के शरीर का स्पर्श किया।

সব দিন প্রেমাবেশে নৃত্য-গীত কৈলা ।
তাহাঁ হৈতে মহাপ্রভু 'খদির-বন' আইলা ॥ ৬৩ ॥

सब दिन प्रेमावेशे नृत्य-गीत कैला ।
ताहाँ हैते महाप्रभु 'खदिर-वन' आइला ॥ ६३ ॥

सब दिन—सभी दिन; **प्रेम-आवेशे**—प्रेमावेश में; **नृत्य-गीत कैला**—नृत्य किया और कीर्तन किया; **ताहाँ हैते**—वहाँ से; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **खदिर-वन आइला**—खदिर वन नामक स्थान पर आये।

अनुवाद

महाप्रभु नित्य ही प्रेमाविष्ट होकर कीर्तन करते और नृत्य करते। अन्त में वे खदिरवन गये।

तात्पर्य

भक्ति-रत्नाकर (पंचम तरंग) में खदिरवन का वर्णन आया है :

देखह खदिरवन विदित जगते।
विष्णुलोक-प्राप्ति एथा गमन-मात्रेते॥

"खदिरवन को देखो, जो यह पूरे विश्व में विख्यात है। जो कोई खदिरवन आता है, वह तुरन्त विष्णु-लोक को उन्नत हो सकता है।"

लीला-स्थल देखि' ताहाँ गेला 'शेषशायी'।
'लक्ष्मी' देखि' एइ श्लोक पड़ेन गोसाञि ॥ ६४॥

लीला-स्थल देखि'—लीला स्थल देखकर; **ताहाँ**—वहाँ; **गेला**—प्रस्थान किया; **शेष-शायी**—शेषशायी को देखने के लिए; **लक्ष्मी**—लक्ष्मी देवी; **देखि'**—देखकर; **एइ**—यह; **श्लोक**—श्लोक; **पड़ेन**—पढ़ा; **गोसाञि**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने।

अनुवाद

भगवान् कृष्ण के लीला-स्थलों को देखने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु शेषशायी गये, जहाँ उन्होंने लक्ष्मी का दर्शन किया और निम्नलिखित श्लोक सुनाया।

यत्ते सुजात-चरणाम्बुरुहं स्तनेषु
भीताः शनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेषु।
तेनाटवीमटसि तद्व्यथते न किं स्विৎ
कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषां नः ॥ ६५॥

यत्—जो; **ते**—आपके; **सुजात**—बहुत सुन्दर; **चरण-अम्बु-रुहम्**—चरणकमल; **स्तनेषु**—स्तनों पर; **भीताः**—भयभीत होकर; **शनैः**—धीरे से; **प्रिय**—हे प्रिय; **दधीमहि**—हम

रखते हैं; **कर्कशेषु**—कठोर; **तेन**—उनके साथ; **अटवीम्**—मार्ग; **अटसि**—आप घूमते हो; **तत्**—वे; **व्यथते**—पीड़ित होते हैं; **न**—नहीं; **किम् स्वित्**—हम सोचते हैं; **कूर्प-आदिभिः**—छोटे पत्थरों से; **भ्रमति**—घूमते हो; **धीः**—मन; **भवत्-आयुषाम्**—उनके जिनके आप जीवन हो; **नः**—हमारे।

अनुवाद

"'हे प्रिय! आपके चरणकमल इतने कोमल हैं कि हम उन्हें धीमे से अपने स्तनों पर डरती हुई रखती हैं कि कहीं आपके चरणों में चोट न आ जाए। हमारा जीवन एकमात्र आप पर टिका है। अतः हमारे मनों में यही चिन्ता बनी रहती है कि जब आप जंगल के मार्ग पर घूमते हैं तो कंकड़ों से आपके पैर कहीं छिल न जाएँ।'"

तात्पर्य

यह श्लोक *श्रीमद्भागवत* (१०.३१.१९) में आया है। इसमें गोपियों का कथन है, जब कृष्ण उन्हें रास-लीला के बीच में ही छोड़कर चले गये थे।

तबे 'खेला-तीर्थ' देखि' 'भाण्डीरवन' आइला ।
यमुना पार हञा 'भद्र-वन' गेला ॥ ६६॥

तबे 'खेला-तीर्थ' देखि' 'भाण्डीरवन' आइला ।
यमुना पार हञा 'भद्र-वन' गेला ॥ ६६॥

तबे—तत्पश्चात्; **खेला-तीर्थ**—खेला तीर्थ; **देखि'**—देखकर; **भाण्डीरवन**—भाण्डीरवन; **आइला**—आये; **यमुना पार हञा**—यमुना नदी को पार करके; **भद्र-वन**—भद्रवन; **गेला**—चले गये।

अनुवाद

इसके बाद श्री चैतन्य महाप्रभु ने खेलातीर्थ देखा और तब वे भाण्डीरवन गये। यमुना नदी पार करके वे भद्रवन गये।

तात्पर्य

भक्ति-रत्नाकर में कहा गया है कि श्रीकृष्ण और बलराम खेलातीर्थ में ग्वालबलों के साथ पूरा दिन खेला करते थे। माता यशोदा को उनके स्नान एवं भोजन के लिए उन्हें बुलाना पड़ता था।

'श्रीवन' देखि' पुनः गेला 'लोह-वन' ।
'महावन' गिया कैला जन्म-स्थान-दरशन ॥ ६७ ॥

'श्रीवन' देखि' पुनः गेला 'लोह-वन' ।
'महावन' गिया कैला जन्म-स्थान-दरशन ॥ ६७ ॥

श्री-वन—श्रीवन; **देखि'**—देखकर; **पुनः**—पुनः; **गेला**—गये; **लोह-वन**—लोहवन; **महा-वन**—महावन; **गिया**—जाकर; **कैला**—किया; **जन्म-स्थान**—जन्मस्थान का; **दरशन**—दर्शन।

अनुवाद

इसके बाद श्री चैतन्य महाप्रभु ने श्रीवन तथा लोहवन देखा। फिर वे महावन गये और कृष्ण की बाल-लीलाओं का स्थान गोकुल देखा।

तात्पर्य

श्रीवन (जिसे बिल्ववन भी कहते हैं) के विषय में *भक्ति रत्नाकर* का कथन है—*देवतापूजित बिल्ववन शोभामय*—"बिल्ववन के सुन्दर वन की पूजा सारे देवता करते हैं।"

लोहवन के विषय में *भक्ति-रत्नाकर* (पंचम तरंग) में यह कहा गया है :

लोहवने कृष्णेर अद्भुत गोचारण।
एथा लोह-जंघासुरे वधे भगवान्॥

"भगवान् कृष्ण लोहवन में गायें चराते थे। इस स्थान पर लोह-जंघासुर नामक असुर का वध किया गया था।"

महावन का विवरण *भक्ति-रत्नाकर* (पंचम तरंग) में इस प्रकार है :

देख नन्द-यशोदा-आलय महावने
एइ देख श्रीकृष्णचन्द्रेर जन्मस्थल
श्रीगोकुल, महावन—दुइ 'एक' हय।

"महावन में नन्द तथा यशोदा के घर को देखो। कृष्ण के जन्मस्थान को देखो। महावन तथा कृष्ण का जन्मस्थान, गोकुल—ये दोनों एक हैं।"

यमलार्জুন-ভঙ্গাদি দেখিল সেই স্থল ।
প্রেমাবেশে প্রভুর মন হৈল টলমল ॥ ৬৮ ॥

यमलार्जुन-भङ्गादि देखिल सेइ स्थल ।
प्रेमावेशे प्रभुर मन हैल टलमल ॥ ६८ ॥

यमल-अर्जुन-भङ्ग—वह स्थान जहाँ युगल अर्जुन वृक्ष तोड़े गये थे; **आदि**—आदि; **देखिल**—देखे; **सेइ स्थल**—वही स्थान; **प्रेम-आवेशे**—प्रेमावेश में; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **मन**—मन; **हैल**—हो गया; **टलमल**—विह्वल।

अनुवाद

जिस स्थान पर श्रीकृष्ण ने जुड़वा अर्जुन वृक्षों को तोड़ा था, उसे देखकर श्री चैतन्य महाप्रभु प्रेमाभिभूत हो गये।

'गोकुल' देखिया आइला 'मथुरा'-नगरे ।
जन्म-स्थान' देखि' रहे सेइ विप्र-घरे ॥ ६९ ॥

गोकुल देखिया—गोकुल देखकर; **आइला**—आये; **मथुरा-नगरे**—मथुरा नगर में; **जन्म-स्थान**—भगवान् कृष्ण का जन्म स्थान; **देखि'**—देखकर; **रहे**—रहे; **सेइ विप्र-घरे**—उसी सनोड़िया ब्राह्मण के घर पर।

अनुवाद

गोकुल देखने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु मथुरा लौट आये, जहाँ उन्होंने कृष्ण का जन्मस्थान देखा। वहाँ पर वे उसी सनोड़िया ब्राह्मण के घर पर रहे।

लोकेर सङ्घट्ट देखि मथुरा छाड़िया ।
एकान्ते 'अक्रूर-तीर्थे' रहिला आसिया ॥ ७० ॥

लोकेर सङ्घट्ट देखि मथुरा छाड़िया ।
एकान्ते 'अक्रूर-तीर्थे' रहिला आसिया ॥ ७० ॥

लोकेर—लोगों की; **सङ्घट्ट**—भीड़; **देखि**—देखकर; **मथुरा**—मथुरा नगर; **छाड़िया**—छोड़कर; **एकान्ते**—एकान्त स्थान में; **अक्रूर-तीर्थे**—अक्रूर तीर्थ में; **रहिला**—रहे; **आसिया**—आकर।

अनुवाद

मथुरा में भीड़ एकत्र होती देखकर श्री चैतन्य महाप्रभु मथुरा छोड़कर अक्रूर तीर्थ चले गये। वहाँ वे एकान्त स्थान में रहे।

तात्पर्य

भक्ति-रत्नाकर (पंचम तरंग) में अक्रूर तीर्थ का भी उल्लेख हुआ है :

देख, श्रीनिवास, एइ अक्रूर ग्रामेते।
श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु छिलेन निभृते॥

"हे श्रीनिवास, देखो यह अक्रूर का गाँव है, जहाँ श्री चैतन्य महाप्रभु एकान्त में रहते थे।"

आर दिन आइला प्रभु देखिते 'वृन्दावन' ।
'कालीय-ह्रदे' स्नान कैला आर प्रस्कन्दन ॥७१॥

आर दिन आइला प्रभु देखिते 'वृन्दावन' ।
'कालीय-ह्रदे' स्नान कैला आर प्रस्कन्दन ॥७१॥

आर दिन—अगले दिन; **आइला**—आये; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **देखिते**—देखने के लिए; **वृन्दावन**—वृन्दावन; **कालीय-ह्रदे**—कालिय सरोवर में; **स्नान कैला**—स्नान किया; **आर**—और; **प्रस्कन्दन**—प्रस्कन्दन में।

अनुवाद

अगले दिन श्री चैतन्य महाप्रभु वृन्दावन गये और उन्होंने कालीय ह्रद तथा प्रस्कन्दन में स्नान किया।

तात्पर्य

भक्ति रत्नाकर (पंचम तरंग) में कालीय ह्रद का उल्लेख है :

ए कालीय-तीर्थ पाप विनाशय।
कालीयतीर्थ-स्थाने बहु-कार्य-सिद्धि हय॥

"कालीय-ह्रद में स्नान करने वाले व्यक्ति के सारे पापकर्मों के फल दूर हो जाते हैं। कालीय-ह्रद में स्नान करने से कार्य-सिद्धि भी मिल सकती है।"

'द्वादश-आदित्य' हैते 'केशी-तीर्थे' आइला ।
रास-स्थली देखि' प्रेमे मूर्च्छित हइला ॥७२॥

'द्वादश-आदित्य' हैते 'केशी-तीर्थे' आइला ।
रास-स्थली देखि' प्रेमे मूर्च्छित हइला ॥ ७२ ॥

द्वादश-आदित्य हैते—द्वादशादित्य से; **केशी-तीर्थे आइला**—केशी तीर्थ आये; **रास-स्थली देखि'**—रास नृत्य का स्थान देखकर; **प्रेमे**—प्रेमावेश में; **मूर्च्छित हइला**—मूर्च्छित हो गये।

अनुवाद

प्रस्कन्दन नामक पुण्यस्थली देखने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु द्वादशादित्य गये। वहाँ से वे केशीतीर्थ गये और जब उन्होंने वह स्थान देखा, जहाँ रासनृत्य होता था, तो वे प्रेमावेश से तुरन्त मूर्छित हो गये।

चेतन पाञा पुनः गड़ागड़ि याय ।
हासे, कान्दे, नाचे, पड़े, उच्चैः-स्वरे गाय ॥ ७३ ॥
चेतन पाञा पुनः गड़ागड़ि य्राय ।
हासे, कान्दे, नाचे, पड़े, उच्चैः-स्वरे गाय ॥ ७३ ॥

चेतन पाञा—चेतना लौटने पर; **पुनः**—दोबारा; **गड़ागड़ि य्राय**—धरती पर लोटने लगे; **हासे**—हँसने लगे; **कान्दे**—रोने लगे; **नाचे**—नाचने लगे; **पड़े**—गिरने लगे; **उच्चैः-स्वरे गाय**—ऊँचे स्वर में गाने लगे।

अनुवाद

जब महाप्रभु सचेत हुए तो वे भूमि पर लोटने लगे। कभी वे हँसते, कभी रोते तो कभी नाचते और गिर पड़ते। वे ऊँचे स्वर से कीर्तन भी करते।

एइ-रङ्गे सेइ-दिन तथा गोङाइला ।
सन्ध्या-काले अक्रूरे आसि' भिक्षा निर्वाहिला ॥ ७४ ॥
एइ-रङ्गे सेइ-दिन तथा गोङाइला ।
सन्ध्या-काले अक्रूरे आसि' भिक्षा निर्वाहिला ॥ ७४ ॥

एइ-रङ्गे—इस आनन्द में; **सेइ-दिन**—वह दिन; **तथा गोङाइला**—वहाँ व्यतीत किया; **सन्ध्या-काले**—संध्याकाल को; **अक्रूरे आसि'**—अक्रूर तीर्थ लौटकर; **भिक्षा निर्वाहिला**—भोजन किया।

अनुवाद

इस तरह दिव्य आनन्द का अनुभव करते हुए श्री चैतन्य महाप्रभु ने केशीतीर्थ में वह दिन प्रसन्नतापूर्वक बिता दिया। शाम को वे अक्रूर तीर्थ लौट आये, जहाँ उन्होंने भोजन किया।

प्राते वृन्दावने कैला 'चीर-घाटे' स्नान ।
तेंतुली-तलाते आसि' करिला विश्राम ॥७५॥

प्राते वृन्दावने कैला 'चीर-घाटे' स्नान ।
तेंतुली-तलाते आसि' करिला विश्राम ॥७५॥

प्राते—प्रातः काल; **वृन्दावने**—वृन्दावन में; **कैला**—किया; **चीर-घाटे स्नान**—चीर घाट पर स्नान; **तेंतुली-तलाते**—तेन्तुली वृक्ष के नीचे; **आसि'**—आकर; **करिला विश्राम**—विश्राम किया।

अनुवाद

प्रातःकाल श्री चैतन्य महाप्रभु ने वृन्दावन लौटकर चीरघाट में स्नान किया। तब वे तेंतुलीतला गये, जहाँ उन्होंने विश्राम किया।

कृष्ण-लीला-कालेर सेइ वृक्ष पुरातन ।
तार तले पिँड़ि-बान्धा परम-चिक्कण ॥७६॥

कृष्ण-लीला-कालेर सेइ वृक्ष पुरातन ।
तार तले पिंड़ि-बान्धा परम-चिक्कण ॥७६॥

कृष्ण-लीला-कालेर—कृष्ण लीला के समय; **सेइ वृक्ष**—वही इमली का वृक्ष; **पुरातन**—बहुत प्राचीन; **तार तले**—उस वृक्ष के नीचे; **पिंड़ि-बान्धा**—एक चबूतरा था; **परम-चिक्कण**—बहुत चमकदार।

अनुवाद

तेंतुलीतला नामक इमली का वृक्ष अत्यन्त पुराना था, जो श्रीकृष्ण की लीलाओं के समय से वहीं था। उस वृक्ष के नीचे अत्यन्त चमकीला चबूतरा बना था।

নিকটে যমুনা বহে শীতল সমীর ।
বৃন্দাবন-শোভা দেখে যমুনার নীর ॥৭৭॥

নিকটে য়মুনা বহে শীতল সমীর ।
বৃন্দাবন-শোভা দেখে য়মুনার নীর ॥৭৭॥

নিকটে—তেন্দুলী তলা অথবা আম্লী তলা के निकट; **য়মুনা**—यमुना; **বহে**—बहती थी; **শীতল সমীর**—बहुत शीतल पवन; **বৃন্দাবন-শোভা**—वृन्दावन की शोभा; **দেখে**—देखी; **য়মুনার**—यमुना नदी का; **নীর**—जल।

अनुवाद

इस इमली के वृक्ष के निकट यमुना नदी बहती थी, इसलिए अत्यन्त शीतल हवा बहती थी। वहाँ पर महाप्रभु ने वृन्दावन की शोभा तथा यमुना नदी का जल देखा।

তেঁতুল-তলে বসি' করে নাম-সঙ্কীর্তন ।
মধ্যাহ্ন করি' আসি' করে 'অক্রূরে' ভোজন ॥৭৮॥

তেঁতুল-তলে বসি' করে নাম-সঙ্কীর্তন ।
মধ্যাহ্ন করি' আসি' করে 'অক্রূরে' ভোজন ॥৭৮॥

তেঁতুল-তলে—इमली के वृक्ष के नीचे; **বসি'**—बैठकर; **করে**—किया; **নাম-সঙ্কীর্তন**—भगवान् के पवित्र नाम का संकीर्तन; **মধ্যাহ্ন করি'**—मध्याह्न को; **আসি'**—लौटकर; **করে**—किया; **অক্রূরে**—अक्रूर तीर्थ; **ভোজন**—भोजन किया।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु इस इमली के पुराने वृक्ष के नीचे बैठकर भगवान् के पवित्र नाम का कीर्तन करते थे। दोपहर को वे भोजन करने के लिए अक्रूर तीर्थ लौट आते थे।

অক্রূরের লোক আইসে প্রভুরে দেখিতে ।
লোক-ভিড়ে স্বচ্ছন্দে নারে 'কীর্তন' করিতে ॥৭৯॥

অক্রূরের লোক আইসে প্রভুরে দেখিতে ।
লোক-ভিড়ে স্বচ্ছন্দে নারে 'কীর্তন' করিতে ॥৭৯॥

अक्रूरेर लोक—अक्रूर तीर्थ में लोग; **आइसे**—आये; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **देखिते**—देखने के लिए; **लोक-भिड़े**—लोगों की इतनी भीड़ के कारण; **स्वच्छन्दे**—अपनी मर्जी से (बिना अवरोध के); **नारे**—न कर सके; **कीर्तन करिते**—कीर्तन करना।

अनुवाद

अक्रूरतीर्थ के निकट रहने वाले सारे लोग श्री चैतन्य महाप्रभु को देखने आते थे और भीड़ बढ़ जाने से महाप्रभु शान्तिपूर्वक नाम-कीर्तन नहीं कर पाते थे।

वृन्दावने आसि' प्रभु वसिया एकान्त ।
नाम-सङ्कीर्तन करे मध्याह्न-पर्यन्त ॥ ८०॥

वृन्दावने आसि' प्रभु वसिया एकान्त ।
नाम-सङ्कीर्तन करे मध्याह्न-पर्य्यन्त ॥ ८०॥

वृन्दावने आसि'—वृन्दावन आकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **वसिया**—बैठकर; **एकान्त**—एकान्त स्थान में; **नाम-सङ्कीर्तन करे**—नाम संकीर्तन किया; **मध्याह्न-पर्य्यन्त**—मध्याह्न पर्यन्त।

अनुवाद

अतः श्री चैतन्य महाप्रभु वृन्दावन चले जाते थे और एकान्त स्थान में बैठकर दोपहर तक नाम-संकीर्तन करते रहते थे।

तृतीय-प्रहरे लोक पाय दरशन ।
सबारे उपदेश करे 'नाम-सङ्कीर्तन' ॥ ८१॥

तृतीय-प्रहरे लोक पाय दरशन ।
सबारे उपदेश करे 'नाम-सङ्कीर्तन' ॥ ८१॥

तृतीय-प्रहरे—तीसरे पहरे; **लोक**—लोगों ने; **पाय दरशन**—दर्शन किया; **सबारे**—प्रत्येक को; **उपदेश करे**—उपदेश किया; **नाम-सङ्कीर्तन**—नाम संकीर्तन।

अनुवाद

दोपहर के बाद ही लोग उनका दर्शन प्राप्त कर सके। महाप्रभु ने हर एक व्यक्ति को नाम-संकीर्तन का महत्त्व बतलाया।

হেন-কালে আইল বৈষ্ণব 'কৃষ্ণদাস' নাম ।
রাজপুত-জাতি,—গৃহস্থ, যমুনা-পারে গ্রাম ॥ ৮২ ॥

হেন-কালে আইল বৈষ্ণব 'কৃষ্ণদাস' নাম ।
রাজপুত-জাতি,—গৃহস্থ, যমুনা-পারে গ্রাম ॥ ৮২ ॥

হেন-কালে—इस समय; **আইল**—आया; **বৈষ্ণব**—एक भक्त; **কৃষ্ণদাস নাম**—कृष्णदास नाम का; **রাজপুত-জাতি**—राजपूत (क्षत्रिय) जाति का; **গৃহস্থ**—गृहस्थ; **যমুনা-পারে গ্রাম**—जिसका निवास यमुना के उस पार था।

अनुवाद

तभी कृष्णदास नामक एक वैष्णव श्री चैतन्य महाप्रभु से मिलने आया। वह गृहस्थ था और क्षत्रिय जाति का था। उसका घर यमुना नदी के उस पार था।

'কেশী' স্নান করি' সেই 'কালীয়-দহ' যাইতে ।
আম্লি-তলায় গোসাঞিরে দেখে আচম্বিতে ॥ ৮৩ ॥

'কেশী' স্নান করি' সেই 'কালীয়-দহ' যাইতে ।
আম্লি-তলায় গোসাঞিরে দেখে আচম্বিতে ॥ ৮৩ ॥

কেশী স্নান করি'—केशीतीर्थ नायक स्थान पर स्नान करने के बाद; **সেই**—उस व्यक्ति ने; **কালীয়-দহ যাইতে**—कालिय दह की ओर जाकर; **আম্লি-তলায়**—आम्लीतला नामक स्थान पर; **গোসাঞিরে**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **দেখে**—देखा; **আচম্বিতে**—अचानक।

अनुवाद

केशीतीर्थ में स्नान करने के बाद कृष्णदास कालीयदह की ओर गया और उसने एकाएक श्री चैतन्य महाप्रभु को आम्लितला (तेंतुलीतला) में बैठे हुए देखा।

প্রভুর রূপ-প্রেম দেখি' হইল চমৎকার ।
প্রেমাবেশে প্রভুরে করেন নমস্কার ॥ ৮৪ ॥

প্রভুর রূপ-প্রেম দেখি' হইল চমৎকার ।
প্রেমাবেশে প্রভুরে করেন নমস্কার ॥ ৮৪ ॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **रूप-प्रेम**—सुन्दरता तथा प्रेम; **देखि'**—देखकर; **हइल चमत्कार**—चकित रह गया; **प्रेम-आवेशे**—प्रेमावेश में; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **करेन नमस्कार**—नमस्कार किया।

अनुवाद

महाप्रभु के सौंदर्य तथा प्रेम को देखकर कृष्णदास अत्यधिक अचम्भित हुआ। उसने प्रेमवश महाप्रभु को सादर नमस्कार किया।

प्रभु कहे,—के तुमि, काहाँ तोमार घर? ।
कृष्णदास कहे,—मुई गृहस्थ पामर ॥८५॥

प्रभु कहे,—के तुमि, काहाँ तोमार घर? ।
कृष्णदास कहे,—मुइ गृहस्थ पामर ॥८५॥

प्रभु कहे—महाप्रभु ने पूछा; **के तुमि**—तुम कौन हो; **काहाँ**—कहाँ; **तोमार**—तुम्हारा; **घर**—निवास है; **कृष्णदास कहे**—कृष्णराज ने उत्तर दिया; **मुइ**—मैं; **गृहस्थ**—एक गृहस्थ; **पामर**—अति पतित।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कृष्णदास से पूछा, "तुम कौन हो? तुम्हारा घर कहाँ है?" इस पर कृष्णदास ने उत्तर दिया, "मैं अत्यन्त पतित गृहस्थ हूँ।

राजपुत-जाति मुञि, ओ-पारे मोर घर ।
मोर इच्छा हय—'हओ वैष्णव-किङ्कर' ॥८६॥

राजपुत-जाति मुञि, ओ-पारे मोर घर ।
मोर इच्छा हय—'हओ वैष्णव-किङ्कर' ॥८६॥

राजपुत-जाति—राजपूत जाति का हूँ; **मुञि**—मैं; **ओ-पारे**—यमुना के पास दूसरी ओर; **मोर घर**—मेरा घर; **मोर इच्छा हय**—मेरी इच्छा; **हओ**—होने की; **वैष्णव-किङ्कर**—एक वैष्णव का सेवक।

अनुवाद

"मैं राजपूत जाति का हूँ और मेरा घर यमुना नदी के उस पार है। किन्तु मैं वैष्णव का सेवक बनना चाहता हूँ।

किन्तु आजि एक मुञि 'स्वप्न' देखिनु ।
सेइ स्वप्न परतेक तोमा आसि' पाइनु ॥ ८७॥

किन्तु आजि एक मुञि 'स्वप्न' देखिनु ।
सेइ स्वप्न परतेक तोमा आसि' पाइनु ॥ ८७॥

किन्तु—किन्तु; **आजि**—आज; **एक**—एक; **मुञि**—मैंने; **स्वप्न**—स्वप्न; **देखिनु**—देखा; **सेइ स्वप्न**—उस स्वप्न; **परतेक**—के अनुसार; **तोमा**—आपको; **आसि'**—आकर; **पाइनु**—मैंने पाया है (मैं मिला हूँ)।

अनुवाद

"आज मैंने एक सपना देखा है। उस स्वप्न के अनुसार ही मैं यहाँ आया हूँ तथा आपको पा सका हूँ।"

प्रभु ताँरे कृपा कैला आलिङ्गन करि ।
प्रेमे मत्त हैल सेइ नाचे, बले 'हरि' ॥ ८८॥

प्रभु ताँरे कृपा कैला आलिङ्गन करि ।
प्रेमे मत्त हैल सेइ नाचे, बले 'हरि' ॥ ८८॥

प्रभु—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **ताँरे**—उस पर; **कृपा कैला**—कृपा दिखाई; **आलिङ्गन करि**—आलिंगन करके; **प्रेमे**—प्रेम में; **मत्त हैल**—उन्मत्त होकर; **सेइ**—वह कृष्णदास; **नाचे**—नाचने लगा; **बले**—कीर्तन करने लगा; **हरि**—भगवान् के पावन नाम का।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने कृष्णदास का आलिंगन करते हुए उसे अपनी अहैतुकी कृपा प्रदान की। कृष्णदास प्रेम से उन्मत्त हो उठा और वह नाचने लगा तथा पवित्र हरि नाम का कीर्तन करने लगा।

प्रभु-सङ्गे मध्याह्ने अक्रूर तीर्थे आइला ।
प्रभुर अवशिष्ट-पात्र-प्रसाद पाइला ॥ ८९॥

प्रभु-सङ्गे मध्याह्ने अक्रूर तीर्थे आइला ।
प्रभुर अवशिष्ट-पात्र-प्रसाद पाइला ॥ ८९॥

प्रभु-सङ्गे—महाप्रभु के संग; **मध्याह्ने**—मध्यान्ह में; **अक्रूर तीर्थे**—अक्रूर तीर्थ को;

आइला—आया; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **अवशिष्ट-पात्र-प्रसाद**—भोजन का शेष; **पाइला**—पाया।

अनुवाद

कृष्णदास महाप्रभु के साथ अक्रूरतीर्थ आया, जहाँ उसे महाप्रभु का शेष बचा भोजन दिया गया।

प्राते प्रभु-सङ्गे आइला जल-पात्र लञा ।
प्रभु-सङ्गे रहे गृह-स्त्री-पुत्र छाड़िया ॥ ९० ॥

प्राते प्रभु-सङ्गे आइला जल-पात्र लञा ।
प्रभु-सङ्गे रहे गृह-स्त्री-पुत्र छाड़िया ॥ ९० ॥

प्राते—प्रातः काल; **प्रभु-सङ्गे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ; **आइला**—आया; **जल-पात्र लञा**—जलपात्र उठाकर; **प्रभु-सङ्गे रहे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ रहा; **गृह**—घर; **स्त्री**—पत्नी; **पुत्र**—पुत्र; **छाड़िया**—छोड़कर।

अनुवाद

अगले दिन कृष्णदास श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ-साथ उनका जलपात्र लिए हुए वृन्दावन गया। इस तरह कृष्णदास ने अपनी पत्नी, घर तथा बच्चे छोड़ दिये, जिससे कि वह श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ रह सके।

वृन्दावने पुनः 'कृष्ण' प्रकट हइल ।
याहाँ ताहाँ लोक सब कहिते लागिल ॥ ९१ ॥

वृन्दावने पुनः 'कृष्ण' प्रकट हइल ।
याहाँ ताहाँ लोक सब कहिते लागिल ॥ ९१ ॥

वृन्दावने—वृन्दावन में; **पुनः**—पुनः; **कृष्ण**—भगवान् श्रीकृष्ण; **प्रकट हइल**—प्रकट हुए; **याहाँ ताहाँ**—हर जगह, जहाँ यही; **लोक**—लोग; **सब**—सब; **कहिते लागिल**—कहने लगे।

अनुवाद

महाप्रभु जहाँ भी जाते, वहाँ के सारे लोग कहते, "वृन्दावन में पुनः कृष्ण प्रकट हुए हैं।"

এক-দিন অক্রূরেতে লোক প্রাতঃ-কালে ।
বৃন্দাবন হৈতে আইসে করি' কোলাহলে ॥৯২॥

एक-दिन अक्रूरेते लोक प्रातः-काले ।
वृन्दावन हैते आइसे करि' कोलाहले ॥ ९२॥

एक-दिन—एक दिन; **अक्रूरेते**—अक्रूर तीर्थ में; **लोक**—लोग; **प्रातः-काले**—प्रातः काल; **वृन्दावन हैते**—वृन्दावन से; **आइसे**—आये; **करि'**—करते हुए; **कोलाहले**—कोलाहर, शोर।

अनुवाद

एक दिन प्रातःकाल अनेक लोग अक्रूरतीर्थ आये। चूँकि वे वृन्दावन से आये थे, अतः वे अधिक कोलाहल कर रहे थे।

প্রভু দেখি' করিল লোক চরণ বন্দন ।
প্রভু কহে,—কাহাঁ হৈতে করিলা আগমন? ॥৯৩॥

प्रभु देखि' करिल लोक चरण वन्दन ।
प्रभु कहे,—काहाँ हैते करिला आगमन? ॥ ९३॥

प्रभु देखि'—श्री चैतन्य महाप्रभु को देखकर; **करिल**—की; **लोक**—लोगों ने; **चरण वन्दन**—उनके चरणकमलों में सम्मान (आदर); **प्रभु कहे**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **काहाँ हैते**—कहाँ से; **करिला आगमन**—आप आये हैं।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु को देखकर उन सबने उनके चरणकमलों में अपना नमस्कार निवेदित किया। तब महाप्रभु ने उन सबसे पूछा, "तुम लोग कहाँ से आ रहे हो?"

লোকে কহে,—কৃষ্ণ প্রকট কালীয়-দহের জলে! ।
কালীয়-শিরে নৃত্য করে, ফণা-রত্ন জ্বলে ॥৯৪॥

लोके कहे,—कृष्ण प्रकट कालीय-दहेर जले! ।
कालीय-शिरे नृत्य करे, फणा-रत्न ज्वले ॥ ९४॥

लोके कहे—सभी लोगों ने उत्तर दिया; **कृष्ण प्रकट**—कृष्ण पुनः प्रकट हुए हैं;

कालीय-दहेर जले—कालिय सरोवर के जल में; **कालीय-शिरे**—कालिय नाग के फणों पर; **नृत्य करे**—नाचते हैं; **फणा-रत्न ज्वले**—उन फणों पर मणियाँ चमक रही हैं।

अनुवाद

लोगों ने उत्तर दिया, "कालीयदह के जल में कृष्ण पुनः प्रकट हुए हैं। वे कालीय सर्प के फनों पर नाचते हैं और फनों के रत्न चमचमा रहे हैं।

साक्षाद्देखिल लोक—नाहिक संशय ।
शुनि' हासि' कहे प्रभु,—सब 'सत्य' हय ॥ ९५ ॥

साक्षात्देखिल लोक—नाहिक संशय ।
शुनि' हासि' कहे प्रभु,—सब 'सत्य' हय ॥ ९५ ॥

साक्षात्—साक्षात्; **देखिल लोक**—सभी लोगों ने देखा; **नाहिक संशय**—इसमें कोई सन्देह नहीं; **शुनि'**—सुनकर; **हासि'**—हँसकर; **कहे प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **सब सत्य हय**—आपने जो कुछ कहा है, वह सत्य है।

अनुवाद

"सबने साक्षात् कृष्ण को देखा है, इसमें संशय नहीं है।" यह सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु हँसने लगे और बोले, "यह सब सत्य है।"

एइ-मत तिन-रात्रि लोकेर गमन ।
सबे आसि' कहे,—कृष्ण पाइलुँ दरशन ॥ ९६ ॥

एइ-मत तिन-रात्रि लोकेर गमन ।
सबे आसि' कहे,—कृष्ण पाइलुँ दरशन ॥ ९६ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **तिन-रात्रि**—तीन रात; **लोकेर गमन**—लोग जाते रहे; **सबे**—सब; **आसि'**—आकर; **कहे**—कहने लगे; **कृष्ण पाइलुँ दरशन**—हमने कृष्ण के साक्षात् दर्शन किये हैं।

अनुवाद

लगातार तीन रात तक लोग कृष्ण का दर्शन करने कालीयदह गये और हर एक यही कहता हुआ लौटा कि, "अब हमने साक्षात् कृष्ण का दर्शन किया है।"

প্রভু-আগে কহে লোক,—শ্রী-কৃষ্ণ দেখিল ।
'সরস্বতী' এই বাক্যে 'সত্য' কহাইল ॥৯৭॥

প্রভু-আগে কহে লোক,—শ্রী-কৃষ্ণ দেখিল ।
'সরস্বতী' এই বাক্যে 'সত্য' কহাইল ॥ ৯৭॥

প্রভু-আগে—শ্রী চৈতন্য মহাপ্রভু के समक्ष; **কহে লোক**—सभी लोग कहने लगे; **শ্রী-কৃষ্ণ দেখিল**—कि हमने भगवान् श्रीकृष्ण को देख लिया है; **সরস্বতী**—सरस्वती देवी ने; **এই বাক্যে**—यह कथन; **সত্য**—सत्य; **কহাইল**—लोगों से कहलवाया है।

अनुवाद

हर व्यक्ति श्री चैतन्य महाप्रभु के आगे आकर यही कहता, "अब हमने कृष्ण को प्रत्यक्ष देखा है।" इस तरह सरस्वती देवी की कृपा से हर व्यक्ति को सच कहना पड़ा।

মহাপ্রভু দেখি' 'সত্য' কৃষ্ণ-দরশন ।
নিজাজ্ঞানে সত্য ছাড়ি' 'অসত্যে সত্য-ভ্রম' ॥৯৮॥

মহাপ্রভু দেখি' 'সত্য' কৃষ্ণ-দরশন ।
নিজাজ্ঞানে সত্য ছাড়ি' 'অসত্যে সত্য-ভ্রম' ॥ ৯৮॥

মহাপ্রভু দেখি'—श्री चैतन्य महाप्रभु को देखकर; **সত্য**—सच में; **কৃষ্ণ-দরশন**—कृष्ण को देखकर; **নিজ-অজ্ঞানে**—अपने अज्ञान से; **সত্য ছাড়ি'**—सत्य को छोड़कर; **অসত্যে**—असत्य को; **সত্য-ভ্রম**—सत्य के भ्रम में समझा।

अनुवाद

जब लोगों ने श्री चैतन्य महाप्रभु को देखा, तो वास्तव में उन्होंने कृष्ण का ही दर्शन किया, किन्तु अपने अज्ञान के कारण ही उन्होंने गलत वस्तु को कृष्ण मान लिया था।

ভট্টাচার্য তবে কহে প্রভুর চরণে ।
'আজ্ঞা দেহ', যাই' করি কৃষ্ণ দরশনে!' ॥৯৯॥

ভট্টাচার্য্য তবে কহে প্রভুর চরণে ।
'আজ্ঞা দেহ', য়াই' করি কৃষ্ণ দরশনে!' ॥ ৯৯॥

भट्टाचार्य्य—बलभद्र भट्टाचार्य; **तबे**—उस समय; **कहे**—कहने लगा; **प्रभुर चरणे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों में; **आज्ञा देह'**—कृपया आज्ञा दो; **याइ'**—जाकर; **करि कृष्ण दरशने**—श्रीकृष्ण के साक्षात् दर्शन करूँ।

अनुवाद

तभी बलभद्र भट्टाचार्य ने श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों में निवेदन किया, "मुझे आज्ञा दें कि मैं जाकर कृष्ण का प्रत्यक्ष दर्शन कर सकूँ।"

तात्पर्य

जो लोग विभ्रान्त चित्त से श्री चैतन्य महाप्रभु के पास आ रहे थे, वे वास्तव में भगवान् कृष्ण का दर्शन कर रहे थे, किन्तु वे लोग यह सोचने की भूल कर रहे थे कि कृष्ण कालीयदह में आये हुए हैं। वे सभी यही कह रहे थे कि उन्होंने कृष्ण को कालीय सर्प के फन पर लीला करते प्रत्यक्ष देखा है और कालीय के फनों में मणियाँ चमक रही हैं। चूँकि वे अपने अधूरे ज्ञान से मनोकल्पना कर रहे थे, अतएव श्री चैतन्य महाप्रभु उन्हें सामान्य व्यक्ति दिख रहे थे और उस ह्रद में नाविक का दीपक कृष्ण के रूप में दिख रहा था। मनुष्य को गुरु की कृपा से वस्तुओं को यथारूप देखना चाहिए, अन्यथा कृष्ण का साक्षात् दर्शन करने के फेर में वह सामान्य व्यक्ति को कृष्ण या कृष्ण को ही सामान्य व्यक्ति समझ बैठेगा। हर व्यक्ति को आत्मसिद्ध गुरु द्वारा प्रस्तुत वैदिक साहित्य के प्रमाण के अनुसार ही कृष्ण का दर्शन करना चाहिए। निष्ठावान व्यक्ति ही अपने गुरु के पारदर्शी माध्यम से कृष्ण का दर्शन कर पाता है। जब तक गुरु द्वारा दिये गये ज्ञान से प्रकाश प्राप्त नहीं हो जाता, तब तक कोई भी व्यक्ति वस्तुओं को असली रूप में नहीं देख सकता, भले ही वह निरन्तर गुरु के साथ ही क्यों न रह रहा हो। कालीय दह की यह घटना उन लोगों के लिए अत्यन्त शिक्षाप्रद है, जो कृष्णभावना में आगे बढ़ना चाहते हैं।

তবে তাঁরে কহে প্রভু চাপড় মারিয়া ।
''মূর্খের বাক্যে 'মূর্খ' হৈলা পণ্ডিত হঞা ॥ ১০০॥

तबे ताँरे कहे प्रभु चापड़ मारिया ।
"मूर्खेर वाक्ये 'मूर्ख' हैला पण्डित हञा ॥ १००॥

तबे—तत्पश्चात्; **तारे**—बलभद्र भट्टाचार्य को; **कहे**—कहा; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **चापड़ मारिया**—थप्पड़ मारकर; **मूर्खेर वाक्ये**—कुछ धूर्तों और मूर्खों के कहने से; **मूर्ख हैला**—तुम मूर्ख बन गये हो; **पण्डित हञा**—एक विद्वान पण्डित होते हुए भी।

अनुवाद

जब बलभद्र भट्टाचार्य ने कालीयदह में कृष्ण का दर्शन करने के लिए आज्ञा चाही, तो श्री चैतन्य महाप्रभु ने यह कहकर दयापूर्वक उसको चपत लगाई, "तुम विद्वान होकर भी अन्य मूर्खों की बातों में आकर मूर्ख बन रहे हो।

तात्पर्य

माया इतनी प्रबल होती है कि श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ निरन्तर रहने वाला बलभद्र भट्टाचार्य जैसा व्यक्ति भी मूर्खों की बातों में आ गया। वह कालीयदह जाकर कृष्ण का प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहता था, किन्तु श्री चैतन्य महाप्रभु आदि गुरु होने के नाते अपने सेवक को इस प्रकार मूर्खता में फँसने की अनुमति नहीं दे सकते थे। इसीलिए उन्होंने वास्तविक कृष्णभावनामृत समझाने के लिए उसे चपत लगाकर दण्डित किया।

कृष्ण केने दरशन दिबे कलि-काले? ।
निज-भ्रमे मूर्ख-लोक करे कोलाहले ॥ १०१॥

कृष्ण केने दरशन दिबे कलि-काले? ।
निज-भ्रमे मूर्ख-लोक करे कोलाहले ॥ १०१॥

कृष्ण—भगवान् कृष्ण; **केने**—क्यों; **दरशन**—दर्शन; **दिबे**—देंगे; **कलि-काले**—इस कलियुग में; **निज-भ्रमे**—अपनी गलती से; **मूर्ख-लोक**—मूर्ख लोग; **करे कोलाहले**—शोर मचाते हैं।

अनुवाद

"भला कलियुग में कृष्ण क्यों प्रकट होने लगे? भ्रमित मूर्ख लोग ही उत्तेजना फैलाते हैं और कोलाहल मचाते हैं।"

तात्पर्य

श्री चैतन्य महाप्रभु का पहला कथन (*कृष्ण केने दर्शन दिबे कलिकाले*) शास्त्रों का अनुमोदन करता है। शास्त्र के अनुसार कृष्ण द्वापर युग में प्रकट होते

हैं। किन्तु वे अपने मूल रूप में कभी भी कलियुग में प्रकट नहीं होते। कलियुग में वे प्रच्छन्न रूप में ही प्रकट होते हैं। जैसाकि *श्रीमद्भागवत* (११.५.३२) में कहा गया है—*कृष्णवर्णं त्विषाकृष्णं साङ्गोपाङ्गास्त्रपार्षदम्।* कलियुग में कृष्ण अपने एक भक्त, श्री चैतन्य महाप्रभु के रूप में प्रकट होते हैं, जो सदैव अपने पार्षदों—श्री अद्वैत प्रभु, श्री नित्यानन्द प्रभु, श्रीवास प्रभु तथा गदाधर प्रभु—के साथ रहते हैं। यद्यपि बलभद्र भट्टाचार्य भक्त के रूप में कृष्ण (चैतन्य महाप्रभु) की प्रत्यक्ष सेवा में लगा था, किन्तु वह कृष्ण को एक सामान्य पुरुष समझ बैठा और सामान्य पुरुष को कृष्ण, क्योंकि उसने शास्त्र तथा गुरु द्वारा निर्धारित नियमों का पालन नहीं किया।

'वातुल' ना हइओ, घरे रहत बसिया ।
'कृष्ण' दरशन करिह कालि रात्र्ये याञा'' ॥१०२॥

'वातुल' ना हइओ, घरे रहत वसिया ।
'कृष्ण' दरशन करिह कालि रात्र्ये याञा" ॥१०२॥

वातुल—पागल; **ना हइओ**—मत बनो; **घरे**—घर पर; **रहत**—रहो; **वसिया**—बैठकर; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **दरशन**—दर्शन; **करिह**—तुम करो; **कालि**—कल; **रात्र्ये**—रात को; **याञा**—जाकर।

अनुवाद

"पागल मत बनो। यहीं बैठे रहो और कल रात में तुम कृष्ण का दर्शन करने जाओगे।"

प्रातः-काले भव्य-लोक प्रभु-स्थाने आइला ।
'कृष्ण देखि' आइला?'—प्रभु ताँहारे पुछिला ॥१०३॥

प्रातः-काले भव्य-लोक प्रभु-स्थाने आइला ।
'कृष्ण देखि' आइला?'—प्रभु ताँहारे पुछिला ॥१०३॥

प्रातः-काले—अगले दिन प्रातः काल; **भव्य-लोक**—सम्मानित लोग; **प्रभु-स्थाने**—श्री चैतन्य महाप्रभु के स्थान पर; **आइला**—आये; **कृष्ण देखि'**—भगवान् कृष्ण को देखकर; **आइला**—क्या तुम आये हो; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँहारे पुछिला**—उनसे पूछा।

अनुवाद

अगले दिन कुछ भद्र लोग श्री चैतन्य महाप्रभु से मिलने आये और महाप्रभु ने उनसे पूछा, "क्या आपने कृष्ण को देखा?"

লোক কহে,—রাত্র্যে কৈবর্ত্য নৌকাতে চড়িয়া ।
কালীয়-দহে মত্স্য মারে, দেউটী জ্বালিয়া ॥১০৪॥

लोक कहे,—रात्र्ये कैवर्त्य नौकाते चड़िया ।
कालीय-दहे मत्स्य मारे, देउटी ज्वालिया ॥ १०४॥

लोक कहे—समझदार आदरणीय लोगों ने कहा; **रात्र्ये**—रात को; **कैवर्त्य**—एक मछुआरा; **नौकाते**—एक नौका पर; **चड़िया**—चढ़कर; **कालीय-दहे**—कलियदह में; **मत्स्य मारे**—मछलियाँ पकड़ता है; **देउटी ज्वालिया**—एक दीपक जलाकर।

अनुवाद

इन भद्र लोगों ने उत्तर दिया, "रात में कालीयदह में एक मछुआरा अपनी नाव में दीपक जलाकर मछलियाँ पकड़ता है।

দূর হৈতে তাহা দেখি' লোকের হয় 'ভ্রম' ।
'কালীয়ের শরীরে কৃষ্ণ করিছে নর্তন'! ॥১০৫॥

दूर हैते ताहा देखि' लोकेर हय 'भ्रम' ।
'कालीयेर शरीरे कृष्ण करिछे नर्तन'! ॥ १०५॥

दूर हैते—दूर से; **ताहा देखि'**—उसे देखकर; **लोकेर**—सामान्य लोगों को; **हय**—होता है; **भ्रम**—भ्रम; **कालीयेर**—कालिय नाग के; **शरीरे**—शरीर पर; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **करिछे नर्तन**—नृत्य करते हैं।

अनुवाद

"दूर से लोग भ्रमवश सोचते हैं कि वे कालीय नाग के शरीर पर कृष्ण को नाचते हुए देख रहे हैं।

নৌকাতে কালীয়-জ্ঞান, দীপে রত্ন-জ্ঞানে! ।
জালিয়ারে মূঢ়-লোক 'কৃষ্ণ' করি' মানে! ॥১০৬॥

नौकाते कालीय-ज्ञान, दीपे रत्न-ज्ञाने! ।
जालियारे मूढ़-लोक 'कृष्ण' करि' माने! ॥ १०६ ॥

नौकाते—नौका पर; **कालीय-ज्ञान**—कालिय नाग का ज्ञान; **दीपे**—दीपक को; **रत्न-ज्ञाने**—मणि समझकर; **जालियारे**—मछुआरे को; **मूढ़-लोक**—मूर्ख लोग; **कृष्ण करि' माने**—कृष्ण मान लेते हैं।

अनुवाद

"ये मूर्ख सोचते हैं कि नाव कालीय नाग है और दीपक उसके फनों की मणियाँ हैं। लोग मछुआरे को भी कृष्ण मान बैठते हैं।

वृन्दावने 'कृष्ण' आइला,—सेई 'सत्य' हय ।
कृष्णेरे देखिल लोक,—इहा 'मिथ्या' नय ॥ १०७ ॥
वृन्दावने 'कृष्ण' आइला,—सेइ 'सत्य' हय ।
कृष्णेरे देखिल लोक,—इहा 'मिथ्या' नय ॥ १०७ ॥

वृन्दावने—वृन्दावन में; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **आइला**—लौट आये हैं; **सेइ**—वह; **सत्य हय**—सत्य है; **कृष्णेरे**—कृष्ण को; **देखिल**—देखा है; **लोक**—लोगों ने; **इहा मिथ्या नय**—यह असत्य नहीं है।

अनुवाद

"सचमुच ही भगवान् कृष्ण फिर से वृन्दावन में लौट आये हैं। यह सच है और यह भी सच है कि लोगों ने उन्हें देखा है।

किन्तु काहाँ 'कृष्ण' देखे, काहाँ 'भ्रम' माने ।
स्थाणु-पुरुषे यैछे विपरीत-ज्ञाने ॥ १०८ ॥
किन्तु काहों 'कृष्ण' देखे, काहों 'भ्रम' माने ।
स्थाणु-पुरुषे ग्रैछे विपरीत-ज्ञाने ॥ १०८ ॥

किन्तु—किन्तु; **काहों**—कहाँ; **कृष्ण**—कृष्ण; **देखे**—कोई देखता है; **काहों**—कहाँ; **भ्रम माने**—भ्रम होता है; **स्थाणु-पुरुषे**—सुखा वृक्ष और व्यक्ति; **ग्रैछे**—जैसे; **विपरीत-ज्ञाने**—एक वस्तु को दूसरा समझना।

अनुवाद

"किन्तु वे कृष्ण को कहाँ देख रहे हैं, यह उनका भ्रम है। यह तो सूखे वृक्ष को पुरुष मानने जैसा है।"

तात्पर्य

स्थाणु का अर्थ है "बिना पत्तों का ठूँठ।" दूर से ऐसे ठूँठ वृक्ष से पुरुष का भ्रम हो सकता है। यह *स्थाणु-पुरुष* कहलाता है। यद्यपि श्री चैतन्य महाप्रभु वृन्दावन में रह रहे थे, किन्तु वहाँ के निवासी उन्हें सामान्य पुरुष मान रहे थे और उन्होंने मछुआरे को कृष्ण मान लिया। इस तरह की गलतियाँ हर मनुष्य से होती रहती हैं। श्री चैतन्य महाप्रभु को सामान्य संन्यासी माना जा रहा था और मछुआरे को कृष्ण; इसी तरह दीपक को कालीय के फनों के चमकीले रत्न माना जा रहा था।

प्रभु कहे,—'काहाँ पाइला कृष्ण दरशन?' ।
लोक कहे,—'सन्न्यासी तुमि जङ्गम-नारायण ॥ १०९॥

प्रभु कहे,—'काहाँ पाइला कृष्ण दरशन?' ।
लोक कहे,—'सन्न्यासी तुमि जङ्गम-नारायण ॥ १०९॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने आगे पूछा; **काहाँ पाइला**—आपने कहाँ पाये; **कृष्ण दरशन**—कृष्ण के दर्शन; **लोक कहे**—सम्माननीय लोगों ने कहा; **सन्न्यासी तुमि**—आप संन्यासी हैं; **जङ्गम-नारायण**—चलते फिरते (साक्षात्) नारायण।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने उनसे पूछा, "तुमने कृष्ण को प्रत्यक्ष कहाँ देखा है?" लोगों ने उत्तर दिया, "आप संन्यासी हैं, अतएव आप चलते-फिरते नारायण (*जङ्गम-नारायण*) हैं।"

तात्पर्य

यह मायावाद दर्शन का मत है। मायावाद दर्शन इस निर्विशेषवादी दृष्टिबिन्दु का समर्थन नहीं करता है कि पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् नारायण को कोई रूप नहीं होता। व्यक्ति निर्विशेष ब्रह्म की कल्पना किसी भी रूप में कर सकता है—विष्णु, शिव, विवस्वान, गणेश या देवी दुर्गा। मायावाद दर्शन के अनुसार जब

कोई व्यक्ति संन्यासी बन जाता है, तब वह चलता-फिरता नारायण माना जाता है। मायावाद दर्शन का विश्वास है कि असली नारायण चलते नहीं, क्योंकि निराकार होने के कारण उनके पाँव नहीं होते। इस प्रकार मायावाद दर्शन के अनुसार जो भी संन्यासी बनता है, वह अपने आपको नारायण कहने लगता है। मूर्ख लोग ऐसे सामान्य मनुष्यों को पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् मान लेते हैं। यह *विवर्तवाद* कहलाता है।

इस सम्बन्ध में श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर की टीका है कि *जङ्गम-नारायण* का अर्थ यह होता है कि निर्विशेष ब्रह्म रूप धारण करके मायावादी संन्यासी के रूप में इधर-उधर घूमता फिरता है। मायावाद दर्शन इसकी पुष्टि करता है। *दण्डग्रहणमात्रेण नरो नारायणो भवेत्*—"संन्यास आश्रम में केवल दण्ड ग्रहण करने से वह तुरन्त नारायण बन जाता है।" इसीलिए मायावादी संन्यासी एक दूसरे से *ॐ नमो नारायणाय* कहकर सम्बोधन करते हैं और इस तरह एक नारायण दूसरे नारायण को पूजता है।

वास्तव में कोई सामान्य व्यक्ति नारायण नहीं बन सकता। यहाँ तक कि प्रमुख मायावादी संन्यासी श्री शंकराचार्य कहते हैं—*नारायणः परोऽव्यक्तात्*—"नारायण इस भौतिक जगत् की उपज नहीं हैं। वे इस भौतिक सृष्टि से परे हैं।" अल्पज्ञान के कारण मायावादी संन्यासी सोचते हैं कि नारायण अर्थात् परम सत्य मनुष्य के रूप में जन्म लेते हैं और जब उसे इसका ज्ञान होता है, तो वह पुनः नारायण बन जाता है। वे कभी इस पर विचार नहीं करते कि पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् नारायण मनुष्य के निम्न पद को क्यों स्वीकार करने लगे और पूर्ण होने पर मनुष्य फिर से क्यों नारायण बन जाता है। नारायण अपूर्ण क्यों होने लगे? उन्हें मनुष्य रूप में प्रकट होने की क्या आवश्यकता है? श्री चैतन्य महाप्रभु ने वृन्दावन में रहते हुए इन सारी बातों को बड़े ही सुन्दर ढंग से समझाया।

বৃন্দাবনে হইলা তুমি কৃষ্ণ-অবতার ।
তোমা দেখি' সর্ব-লোক হইল নিস্তার ॥ ১১০ ॥

वृन्दावने हइला तुमि कृष्ण-अवतार ।
तोमा देखि' सर्व-लोक हइल निस्तार ॥ ११० ॥

वृन्दावने—वृन्दावन में; **हइला**—हुए; **तुमि**—आप; **कृष्ण-अवतार**—कृष्ण के अवतार; **तोमा देखि'**—आपको देखकर; **सर्व-लोक**—सभी लोगों का; **हइल निस्तार**—उद्धार हो गया।

अनुवाद

तब लोगों ने कहा, "आप वृन्दावन में कृष्ण के अवतार के रूप में प्रकट हुए हैं। आपका दर्शन करने से ही हर व्यक्ति मुक्त हो गया है।"

प्रभु कहे,—'विष्णु' 'विष्णु' इहा ना कहिबा! ।
जीवाधमे 'कृष्ण'-ज्ञान कभु ना करिबा! ॥१११॥

प्रभु कहे,—'विष्णु' 'विष्णु' इहा ना कहिबा! ।
जीवाधमे 'कृष्ण'-ज्ञान कभु ना करिबा! ॥१११॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने उत्तर दिया; **विष्णु विष्णु**—"हे विष्णु, विष्णु"; **इहा**—यह; **ना कहिबा**—न कहो; **जीव-अधमे**—पतित बद्धात्माओं; **कृष्ण-ज्ञान**—को भगवान् कृष्ण मानकर; **कभु**—कभी; **ना करिबा**—न करो।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु तुरन्त बोल पड़े, "विष्णु! विष्णु! मुझे भगवान् मत कहो। जीव कभी-भी कृष्ण नहीं बन सकता। ऐसी बात कभी मत कहना!"

तात्पर्य

श्री चैतन्य महाप्रभु ने तुरन्त कहा कि जीव कितना ही महान् क्यों न हो जाए, उसकी तुलना भगवान् से कभी भी नहीं करनी चाहिए। श्री चैतन्य महाप्रभु के सारे उपदेश मायावादियों के अद्वैतवादी दर्शन का विरोध करते हैं। कृष्णभावनामृत का केन्द्रबिन्दु यही है कि जीव को कभी कृष्ण या विष्णु नहीं माना जा सकता। इस बात को अगले श्लोकों में विस्तार से बतलाया गया है।

सन्न्यासी—चित्कण जीव, किरण-कण-सम ।
षड्-ऐश्वर्य-पूर्ण कृष्ण हय सूर्योपम ॥११२॥

सन्न्यासी—चित्कण जीव, किरण-कण-सम ।
षड्-ऐश्वर्य-पूर्ण कृष्ण हय सूर्योपम ॥११२॥

सन्न्यासी—संन्यासी; **चित्-कण जीव**—क्षुद्र आंशिक जीव; **किरण**—किरण का; **कण**—क्षुद्र कण; **सम**—के समान; **षट्-ऐश्वर्य्य-पूर्ण**—छः ऐश्वर्यों से पूर्ण; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **हय**—हैं; **सूर्य्य-उपम**—सूर्य के समान।

अनुवाद

"संन्यासी निश्चित ही पूर्ण का अंश है, जिस तरह कि धूप का चमकता लघु कण सूर्य का अंश होता है। कृष्ण सूर्य के समान हैं, छः ऐश्वर्यों से पूर्ण; किन्तु जीव पूर्ण का केवल अंश मात्र है।

জীব, ঈশ্বর-তত্ত্ব——কভু নহে 'সম' ।
জ্বলদগ্নি-রাশি যৈছে স্ফুলিঙ্গের 'কণ' ॥ ১১৩ ॥

जीव, ईश्वर-तत्त्व——कभु नहे 'सम' ।
ज्वलदग्नि-राशि ग्रैछे स्फुलिङ्गेर 'कण' ॥ ११३ ॥

जीव—जीव; **ईश्वर-तत्त्व**—और पूर्ण पुरूषोत्तम भगवान; **कभु**—कभी; **नहे**—नहीं; **सम**—समान; **ज्वलत्-अग्नि-राशि**—बड़ी अग्नि ज्वाला; **ग्रैछे**—जैसे; **स्फुलिङ्गेर**—चिंगारी का; **कण**—एक कण।

अनुवाद

"जीव तथा परम भगवान् कभी भी समान नहीं माने जा सकते, जिस तरह कि स्फुलिंग का कण कभी मूल प्रज्वलित अग्नि नहीं माना जा सकता।

तात्पर्य

मायावादी संन्यासी अपने आपको ब्रह्म मानते हैं और ऊपर-ऊपर से अपने आपको नारायण कहते हैं। मायावाद सम्प्रदाय के अद्वैतवादी शिष्य (*स्मार्त ब्राह्मण*) सामान्यतया गृहस्थ ब्राह्मण होते हैं, जो मायावादी संन्यासियों को नारायण का अवतार मानते हैं, अतएव वे उन्हें नमस्कार करते हैं। श्री चैतन्य महाप्रभु ने तुरन्त इस अवैध प्रणाली का विरोध किया और विशेष रूप से कहा कि संन्यासी परम पूर्ण (*चित्कणजीव*) का अंश मात्र है। दूसरे शब्दों में, वह सामान्य जीव से अधिक कुछ भी नहीं होता। वह कभी नारायण नहीं होता, जिस प्रकार सूर्य का परमाणुमय कण सूर्य के समान कभी भी नहीं हो सकता। जीव परम सत्य का अंश मात्र है, अतः सिद्धि की किसी भी अवस्था में जीव

पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् नहीं बन सकता। वैष्णव सम्प्रदाय के लोग इस मायावाद दृष्टिकोण की सदैव भर्त्सना करते हैं। स्वयं श्री चैतन्य महाप्रभु ने इस विचारधारा का विरोध किया। जब मायावादी संन्यास ग्रहण करते हैं, तो वे अपने आपको नारायण समझकर इतने अहंकारी बन जाते हैं कि वे नमस्कार करने के लिए नारायण के मन्दिर में भी प्रवेश नहीं करते, क्योंकि वे भूल से अपने आपको साक्षात् नारायण समझते हैं। यद्यपि मायावादी संन्यासी अन्य संन्यासियों का आदर कर सकते हैं और उन्हें नारायण कहकर सम्बोधित कर सकते हैं, किन्तु वे नारायण के मन्दिर में जाकर नमस्कार भी नहीं करते। इन मायावादी संन्यासियों की सदैव भर्त्सना की जाती है और उन्हें असुर कहा जाता है। वेद स्पष्ट कहते हैं कि सारे जीव परम पूर्ण के आश्रित अंश मात्र हैं। *एको बहूनां यो विदधाति कामान्*—परम पुरुष कृष्ण सारे जीवों का पालन करते हैं।

ह्लादिन्या संविदाश्लिष्टः सच्चिदानन्द ईश्वरः ।
स्वाविद्या-संवृतो जीवः सङ्क्लेश-निकराकरः ॥ ११४॥

ह्लादिन्या संविदाश्लिष्टः सच्चिदानन्द ईश्वरः ।
स्वाविद्या-संवृतो जीवः सङ्क्लेश-निकराकरः ॥ ११४॥

ह्लादिन्या—*ह्लादिनी* शक्ति; **संवित्**—*संवित्* शक्ति; **आश्लिष्टः**—घिरे रहते हैं; **सत्-चित्-आनन्दः**—सत् चित् आनन्द; **ईश्वरः**—परम नियन्ता; **स्व**—अपना; **अविद्या**—अज्ञान द्वारा; **संवृतः**—घिरा हुआ; **जीवः**—जीव; **सङ्क्लेश**—जीवन के तीन तापों के; **निकर**—कई, असंख्य; **आकरः**—खान।

अनुवाद

"'परम नियन्ता, पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् सदैव दिव्य आनन्द से पूर्ण रहते हैं और ह्लादिनी तथा सम्वित् शक्तियों से युक्त होते हैं। किन्तु बद्धजीव सदैव अज्ञान से आवृत रहता है और जीवन के तीन प्रकार के कष्टों से ग्रस्त रहता है। इस तरह वह सभी प्रकार के कष्टों की खान है।'

तात्पर्य

यह उद्धरण विष्णु स्वामी का है, जो *श्रीमद्भागवत* (१.७.६) के भाष्य श्रीधर स्वामी कृत *भावार्थ-दीपिका* में उदाहरण के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

যেই মূঢ় কহে,—জীব ঈশ্বর হয় 'সম' ।
সেইত 'পাষণ্ডী' হয়, দণ্ডে তারে যম ॥১১৫॥

য়েই मूढ़ कहे,—जीव ईश्वर हय 'सम' ।
सेइत 'पाषण्डी' हय, दण्डे तारे য়म ॥ ११५ ॥

য়েइ मूढ़—जो कोई मूर्ख; **कहे**—कहता है; **जीव**—जीव; **ईश्वर**—परम नियन्ता; **हय**—है; **सम**—समान; **सेइत**—वह; **पाषण्डी हय**—प्रथम श्रेणी का नास्तिक है; **दण्डे**—दण्ड देते हैं; **तारे**—उसको; **য়म**—यमराज।

अनुवाद

"जो मूर्ख यह कहता है कि पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् जीव के समान हैं, वह नास्तिक है। वह यमराज द्वारा दण्डित होने का पात्र बनता है।

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर कहते हैं कि *पाषण्डी* शब्द उस व्यक्ति का सूचक है, जो माया के अधीन जीव को सारे भौतिक गुणों से अतीत पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के समान मानता है। दूसरे प्रकार का *पाषण्डी* वह है, जो भगवान् की पराशक्ति आत्मा पर विश्वास नहीं करता और आत्मा तथा पदार्थ के बीच अन्तर नहीं कर पाता। श्री जीव गोस्वामी ने *श्रुति-शास्त्र-निन्दन* (वैदिक शास्त्रों की निन्दा) नामक अपराध का वर्णन करते हुए *भक्ति सन्दर्भ* में लिखा है— *यथा पाषण्ड-मार्गेण दत्तात्रेयऋषभ-देवोपासकानां पाषण्डीनाम्।* "दत्तात्रेय जैसे निर्विशेषवादियों के उपासक भी पाषण्डी हैं।" *अहं-मम-बुद्धि* या *देहात्म-बुद्धि* (शरीर को स्वयं अर्थात् आत्मा मानना) अपराध के विषय में जीव गोस्वामी कहते हैं— *देव-द्रविणादि-निमित्तक-'पाषण्ड' शब्देन च दशापराधा एव लक्ष्यन्ते, पाषण्डमयत्वात् तेषाम्*—"जो लोग देहात्म-बुद्धि तथा शारीरिक आवश्यकताओं में अत्यधिक लिप्त रहते हैं, वे भी पाषण्डी कहलाते हैं।" *भक्ति-सन्दर्भ* में अन्यत्र भी कहा गया है :

उद्दिश्य देवता एव जुहोति च ददाति च।
स पाषण्डीति विज्ञेयः स्वतन्त्रो वापि कर्मसु॥

"पाषण्डी वह है, जो देवताओं तथा पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् को एक-सा मानता है; अतः पाषण्डी किसी भी देवता को पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के रूप में पूजता

है।" जो अपने गुरु के आदेशों का उल्लंघन करता है, वह भी पाषण्डी माना जाता है। *श्रीमद्भागवत* में पाषण्डी शब्द अनेक जगह पर आया है, जिनमें ये सम्मिलित हैं : ४.२.२८, ३० तथा ३२; ५.६.९ तथा १२.२.१३ और ३.४३।

कुल मिलाकर, पाषण्डी ऐसा अभक्त है, जो वैदिक निर्णयों को नहीं मानता। *हरिभक्ति-विलास* (१.११७) में एक श्लोक *पद्म-पुराण* से उद्धृत है, जिसमें पाषण्डी का वर्णन आया है। श्री चैतन्य महाप्रभु ने इस श्लोक को अगले श्लोक में उद्धृत किया है।

यस्तु नारायणं देवं ब्रह्म-रुद्रादि-दैवतैः ।
समत्वेनैव वीक्षेत स पाषण्डी भवेद्ध्रुवम् ॥ ११६॥

यस्तु नारायणं देवं ब्रह्म-रुद्रादि-दैवतैः ।
समत्वेनैव वीक्षेत स पाषण्डी भवेद्ध्रुवम् ॥ ११६॥

यः—जो कोई व्यक्ति; **तु**—किन्तु; **नारायणम्**—नारायण अर्थात् ब्रह्मा तथा शिव आदि देवताओं के स्वामी; **देवम्**—भगवान् को; **ब्रह्म**—ब्रह्माजी; **रुद्र**—शिवजी; **आदि**—इत्यादि; **दैवतैः**—ऐसे देवताओं के साथ; **समत्वेन**—समान स्तर पर; **एव**—निस्सन्देह; **वीक्षेत**—देखता है; **सः**—ऐसा व्यक्ति; **पाषण्डी**—नास्तिक, पाखण्डी; **भवेत्**—होता है; **ध्रुवम्**—निश्चित रूप से।

अनुवाद

"'जो व्यक्ति ब्रह्मा तथा शिव जैसे देवताओं को नारायण के समकक्ष मानता है, उसे अपराधी अथवा पाषण्डी माना जाता है।'"

लोक कहे,—तोमाते कभु नहे 'जीव'-मति ।
कृष्णेर सदृश तोमार आकृति-प्रकृति ॥ ११७॥

लोक कहे,—तोमाते कभु नहे 'जीव'-मति ।
कृष्णेर सदृश तोमार आकृति-प्रकृति ॥ ११७॥

लोक कहे—लोगों ने कहा; **तोमाते**—आपको; **कभु**—कभी भी; **नहे**—नहीं; **जीव-मति**—एक सामान्य जीव नहीं माने जाते; **कृष्णेर सदृश**—भगवान् कृष्ण की तरह; **तोमार**—आपके; **आकृति**—शारीरिक अंग; **प्रकृति**—लक्षण।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु सामान्य जीव तथा पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के बीच का अन्तर बतला चुके, तो लोगों ने कहा, "आपको कोई भी व्यक्ति सामान्य मनुष्य नहीं मानता। आप हर तरह से, शारीरिक लक्षणों तथा गुणों से, कृष्ण के तुल्य हैं।

'आकृत्ये' तोमारे देखि 'व्रजेन्द्र-नन्दन' ।
देह-कान्ति पीताम्बर कैल आच्छादन ॥ ११८॥

'आकृत्ये' तोमारे देखि 'व्रजेन्द्र-नन्दन' ।
देह-कान्ति पीताम्बर कैल आच्छादन ॥ ११८॥

आकृत्ये—शारीरिक लक्षणों से; **तोमारे**—आपको; **देखि**—हम देखते हैं; **व्रजेन्द्र-नन्दन**—साक्षात् महाराज नन्द के पुत्र; **देह-कान्ति**—शरीर की कान्ति; **पीत-अम्बर**—पीताम्बर; **कैल आच्छादन**—ढकी हुई है।

अनुवाद

"हम आपके शारीरिक लक्षणों से देखते हैं कि आप नन्द महाराज के पुत्र के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं हैं, यद्यपि आपके शरीर की सुनहरी कान्ति ने आपके मूल वर्ण को आच्छादित कर लिया है।

मृग-मद वस्त्रे बान्धे, तबु ना लुकाय ।
'ऐश्वर-स्वभाव' तोमार टाका नाहि याय ॥ ११९॥

मृग-मद वस्त्रे बान्धे, तबु ना लुकाय ।
'ईश्वर-स्वभाव' तोमार टाका नाहि य्राय ॥ ११९॥

मृग-मद—हिरण की कस्तूरी; **वस्त्रे**—वस्त्र में; **बान्धे**—बांध ले; **तबु**—फिर भी; **ना**—नहीं; **लुकाय**—छुपती; **ईश्वर-स्वभाव**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के लक्षण; **तोमार**—आपके; **टाका नाहि य्राय**—छुपाए नहीं जा सकते।

अनुवाद

"जिस तरह कस्तूरी की महक कपड़े में बाँधने पर भी छिपाए नहीं छिपती, उसी तरह पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के रूप में आपके गुणों को किसी भी प्रकार छिपाया नहीं जा सकता।

अलौकिक 'प्रकृति' तोमार—बुद्धि-अगोचर ।
तोमा देखि' कृष्ण-प्रेमे जगज्जागल ॥ १२० ॥

अलौकिक 'प्रकृति' तोमार—बुद्धि-अगोचर ।
तोमा देखि' कृष्ण-प्रेमे जगत्पागल ॥ १२० ॥

अलौकिक—असाधारण; **प्रकृति**—लक्षण; **तोमार**—आपके; **बुद्धि-अगोचर**—हमारी बुद्धि से परे; **तोमा देखि'**—आपको देखकर; **कृष्ण-प्रेमे**—कृष्ण-प्रेम में; **जगत्**—सारा जगत्; **पागल**—पागल।

अनुवाद

"निस्सन्देह, आपके गुण असाधारण हैं और सामान्य जीव की कल्पना से परे हैं। आपको देख करके ही सारा ब्रह्माण्ड कृष्ण-प्रेम में पागल हो उठता है।

स्त्री-बाल-वृद्ध, आर 'चण्डाल' 'यवन' ।
येई तोमार एक-बार पाय दरशन ॥ १२१ ॥
कृष्ण-नाम लय, नाचे हञा उन्मत्त ।
आचार्य हइल सेई, तारिल जगत ॥ १२२ ॥

स्त्री-बाल-वृद्ध, आर 'चण्डाल' 'म्लवन' ।
म्लेइ तोमार एक-बार पाय दरशन ॥ १२१ ॥
कृष्ण-नाम लय, नाचे हञा उन्मत्त ।
आचार्य्य हइल सेइ, तारिल जगत ॥ १२२ ॥

स्त्री—महिलाएँ; **बाल**—बच्चे; **वृद्ध**—वृद्ध पुरुष; **आर**—और; **चण्डाल**—चण्डाल; **म्लवन**—मांसाहारी; **म्लेइ**—जो कोई; **तोमार**—आपका; **एक-बार**—एक बार; **पाय दरशन**—दर्शन कर लेता है; **कृष्ण-नाम**—कृष्ण का पावन नाम; **लय**—जपता है; **नाचे**—नाचता है; **हञा उन्मत्त**—उन्मत्त होकर; **आचार्य्य हइल**—आध्यात्मिक गुरु बन जाता है; **सेइ**—वह व्यक्ति; **तारिल जगत**—सारे संसार का उद्धार कर देता है।

अनुवाद

"यहाँ तक कि स्त्रियाँ, बच्चे, बूढ़े व्यक्ति, मांसाहारी या अधम जाति वाले व्यक्ति भी आपका एक बार दर्शन करने से तुरन्त कृष्ण-नाम का कीर्तन करने लगते हैं, पागलों की भाँति नाचते हैं और सारे संसार का उद्धार करने में समर्थ गुरु बन जाते हैं।

দর্শনের কার্য আছুক, যে তোমার 'নাম' শুনে ।
সেই কৃষ্ণ-প্রেমে মত্ত, তারে ত্রিভুবনে ॥১২৩॥

दर्शनेर कार्य्र आछुक, य्रे तोमार 'नाम' शुने ।
सेइ कृष्ण-प्रेमे मत्त, तारे त्रिभुवने ॥ १२३ ॥

दर्शनेर कार्य्र आछुक—आपके दर्शन की बात छोड़ो; **य्रे**—जो कोई; **तोमार**—आपका; **नाम**—पावन नाम; **शुने**—सुनता है; **सेइ**—वह व्यक्ति; **कृष्ण-प्रेमे**—कृष्ण-प्रेम में; **मत्त**—पागल; **तारे**—उद्धार कर देता है; **त्रि-भुवने**—तीनों भुवनों का।

अनुवाद

"आपके दर्शन के अतिरिक्त जो कोई भी आपका पावन नाम सुनता है, वह कृष्ण-प्रेम में पागल बन जाता है और तीनों लोकों का उद्धार करने में सक्षम हो जाता है।

তোমার নাম শুনি' হয় শ্বপচ 'পাবন' ।
অলৌকিক শক্তি তোমার না যায় কথন ॥১২৪॥

तोमार नाम शुनि' हय श्वपच 'पावन' ।
अलौकिक शक्ति तोमार ना य्राय कथन ॥ १२४ ॥

तोमार—आपका; **नाम**—पावन नाम; **शुनि'**—सुनकर; **हय**—हो जाते हैं; **श्वपच**—कुत्ता खाने वाला, नीच पुरुष; **पावन**—सन्त पुरुष; **अलौकिक**—आलौकिक; **शक्ति**—शक्ति; **तोमार**—आपकी; **ना**—नहीं; **य्राय कथन**—वर्णन की जा सकती।

अनुवाद

"आपका पावन नाम सुनने से ही कुत्ते खाने वाले (चण्डाल) पवित्र सन्त बन जाते हैं। आपकी असाधारण शक्तियों का शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता।

যন্নামধেয়-শ্রবণানুকীর্তনাদ্
　যৎপ্রহ্বণাদ্ যৎস্মরণাদপি কচিৎ ।
শ্বাদোঽপি সদ্যঃ সবনায় কল্পতে
　কুতঃ পুনস্তে ভগবন্নু দর্শনাৎ ॥১২৫॥

यन्नामधेय-श्रवणानुकीर्तनाद्
यत्प्रह्वणाद् यत्स्मरणादपि क्वचित् ।
श्वादोऽपि सद्यः सवनाय कल्पते
कुतः पुनस्ते भगवन्नु दर्शनात् ॥ १२५ ॥

यत्—जिसके; **नामधेय**—नाम को; **श्रवण**—सुनने से; **अनुकीर्तनात्**—और बाद में कीर्तन से; **यत्**—जिसका; **प्रह्वणात्**—आदर करने से; **यत्**—जिसका; **स्मरणात्**—मात्र स्मरण करने से; **अपि**—भी; **क्वचित्**—कभी-कभी; **श्व-अदः**—एक चण्डाल; **अपि**—भी; **सद्यः**—तत्क्षण; **सवनाय**—वैदिक यज्ञ करने के लिए; **कल्पते**—योग्य हो जाता है; **कुतः**—तो उसका क्या कहना; **पुनः**—दोबारा; **ते**—आपका; **भगवन्**—हे पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्; **नु**—निस्सन्देह; **दर्शनात्**—दर्शन से।

अनुवाद

"'परम भगवान् का साक्षात्कार करने वाले लोगों की आध्यात्मिक प्रगति की बात छोड़ दें, चण्डाल के परिवार में जन्मा व्यक्ति भी पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के नाम का एक बार भी उच्चारण करता है या उनका कीर्तन करता है, उनकी लीलाओं के विषय में सुनता है, उन्हें नमस्कार करता है या उनका स्मरण करता है, तो वह तुरन्त वैदिक यज्ञ करने का पात्र बन जाता है।'

तात्पर्य

यह उद्धरण *श्रीमद्भागवत* (३.३३.६) का है। इसकी व्याख्या के लिए मध्य लीला, अध्याय १६, श्लोक १८६ देखिए।

এইত' মহিমা——তোমার 'তটস্থ'-লক্ষণ ।
'স্বরূপ'-লক্ষণে তুমি——'ব্রজেন্দ্র-নন্দন' ॥ ১২৬ ॥

এइত' মহিমা——তোমার 'তটস্থ'-লক্ষণ ।
'স্বরূপ'-লক্ষণে তুমি——'ব্রজেন্দ্র-নন্দন' ॥ ১২৬ ॥

এइত'—ये सब; **মহিমা**—महिमाएँ; **তোমার**—आपके; **তটস্থ-লক্ষণ**—तटस्थ लक्षण; **স্বরূপ**—मूल; **লক্ষণে**—लक्षणों से; **তুমি**—आप; **ব্রজেন্দ্র-নন্দন**—महाराज नन्द के पुत्र।

अनुवाद

"आपकी ये महिमाएँ केवल तटस्थ लक्षण हैं। मूलतः आप महाराज नन्द के पुत्र हैं।"

तात्पर्य

किसी वस्तु के मूल लक्षण *स्वरूप* कहलाते हैं और गौण लक्षणों को *तटस्थ-लक्षण* कहते हैं। भगवान् के तटस्थ लक्षणों की महिमाएँ उन्हें आदि पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्, महाराज नन्द का पुत्र, सिद्ध करती हैं। इसे समझ लेने वाला श्री चैतन्य महाप्रभु को भगवान् श्रीकृष्ण के रूप में स्वीकार कर लेता है।

सेइ सब लोके प्रभु प्रसाद करिल ।
कृष्ण-प्रेमे मत्त लोक निज-घरे गेल ॥ १२७॥

सेइ सब लोके प्रभु प्रसाद करिल ।
कृष्ण-प्रेमे मत्त लोक निज-घरे गेल ॥ १२७॥

सेइ सब लोके—इन सब लोगों को; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **प्रसाद करिल**—अपनी अहैतुकी कृपा प्रदान की; **कृष्ण-प्रेमे**—कृष्ण-प्रेम में; **मत्त**—पागल होकर; **लोक**—लोग; **निज-घरे गेल**—अपने अपने घरों को लौट गये।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने वहाँ पर उपस्थित सभी लोगों को अपनी अहैतुकी कृपा प्रदान की और हर व्यक्ति भगवत्प्रेम से मत्त हो उठा। अन्त में वे सब अपने-अपने घर चले गये।

एइ-मत कत-दिन 'अक्रूरे' रहिला ।
कृष्ण-नाम-प्रेम दिया लोक निस्तारिला ॥ १२८॥

एइ-मत कत-दिन 'अक्रूरे' रहिला ।
कृष्ण-नाम-प्रेम दिया लोक निस्तारिला ॥ १२८॥

एइ-मत—इस प्रकार; **कत-दिन**—कुछ दिन; **अक्रूरे रहिला**—अक्रूर तीर्थ में रहे; **कृष्ण-नाम**—कृष्ण का पावन नाम; **प्रेम**—प्रेम; **दिया**—वितरण करके; **लोक**—लोगों का; **निस्तारिला**—उद्धार किया।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु कुछ दिनों तक अक्रूर तीर्थ में रहे। उन्होंने वहाँ कृष्ण-नाम तथा भगवत्प्रेम का वितरण करके हर एक का उद्धार किया।

माधव-पुरीर शिष्य सेइत ब्राह्मण ।
मथुरार घरे-घरे करा'न निमन्त्रण ॥ १२९॥

माधव-पुरीर शिष्य सेइत ब्राह्मण ।
मथुरार घरे-घरे करा'न निमन्त्रण ॥ १२९॥

माधव-पुरीर—माधवेन्द्र पुरी का; **शिष्य**—शिष्य; **सेइत**—वह; **ब्राह्मण**—ब्राह्मण; **मथुरार**—मथुरा नगर के; **घरे-घरे**—घर घर जाकर; **करा'न**—करवाया; **निमन्त्रण**—निमन्त्रण।

अनुवाद

माधवेन्द्र पुरी के ब्राह्मण शिष्य ने मथुरा में घर-घर जाकर अन्य ब्राह्मणों को प्रोत्साहित किया कि श्री चैतन्य महाप्रभु को अपने घरों में आमंत्रित करें।

मथुरार यत लोक ब्राह्मण सज्जन ।
भट्टाचार्य-स्थाने आसि' करे निमन्त्रण ॥ १३०॥

मथुरार यत लोक ब्राह्मण सज्जन ।
भट्टाचार्य्य-स्थाने आसि' करे निमन्त्रण ॥ १३०॥

मथुरार—मथुरा के; **यत**—सभी; **लोक**—लोग; **ब्राह्मण सत्-जन**—सज्जन पुरुष और ब्राह्मण; **भट्टाचार्य्य-स्थाने**—बलभद्र भट्टाचार्य के पास; **आसि'**—आकर; **करे निमन्त्रण**—निमन्त्रण देने लगे।

अनुवाद

अतः मथुरा के सारे सम्मानित व्यक्ति, जिनमें ब्राह्मण अग्रणी थे, बलभद्र भट्टाचार्य के पास आये और महाप्रभु के लिए निमन्त्रण दिया।

एक-दिन 'दश' 'बिश' आइसे निमन्त्रण ।
भट्टाचार्य एकेर मात्र करेन ग्रहण ॥ १३१॥

एक-दिन 'दश' 'बिश' आइसे निमन्त्रण ।
भट्टाचार्य्य एकेर मात्र करेन ग्रहण ॥ १३१॥

एक-दिन—एक दिन में; **दश बिश**—दस बीस; **आइसे**—आये; **निमन्त्रण**—निमन्त्रण; **भट्टाचार्य्य**—बलभद्र भट्टाचार्य; **एकेर**—उनमें से एक को; **मात्र**—मात्र; **करेन ग्रहण**—स्वीकार किया।

अनुवाद

प्रतिदिन दस से बीस निमन्त्रण प्राप्त होते, किन्तु बलभद्र भट्टाचार्य उनमें से केवल एक को स्वीकार करते।

अवसर ना पाय लोक निमन्त्रण दिते ।
सेइ विप्रे साधे लोक निमन्त्रण निते ॥ १३२॥

अवसर ना पाय लोक निमन्त्रण दिते ।
सेइ विप्रे साधे लोक निमन्त्रण निते ॥ १३२॥

अवसर ना पाय—अवसर न पाया; **लोक**—लोगों ने; **निमन्त्रण दिते**—निमन्त्रण देने का; **सेइ विप्रे**—उस ब्राह्मण को; **साधे**—अनुरोध किया; **लोक**—लोगों ने; **निमन्त्रण निते**—निमन्त्रण स्वीकार करने का।

अनुवाद

चूँकि हर एक को श्री चैतन्य महाप्रभु को आमन्त्रित करने का अवसर नहीं मिला, अतएव उन्होंने सनोड़िया ब्राह्मण से प्रार्थना की कि वे महाप्रभु से उनका निमन्त्रण स्वीकार करने के लिए कहें।

कान्यकुब्ज-दाक्षिणात्येर वैदिक ब्राह्मण ।
दैन्य करि, करे महाप्रभुर निमन्त्रण ॥ १३३॥

कान्यकुब्ज-दाक्षिणात्येर वैदिक ब्राह्मण ।
दैन्य करि, करे महाप्रभुर निमन्त्रण ॥ १३३॥

कान्यकुब्ज—कान्यकुब्ज के ब्राह्मण; **दाक्षिणात्येर**—दक्षिण भारत के कुछ ब्राह्मण; **वैदिक**—वैदिक धर्म के अनुयायी; **ब्राह्मण**—ब्राह्मण; **दैन्य करि**—अति विनम्रता से; **करे**—किया; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **निमन्त्रण**—निमन्त्रण।

अनुवाद

कान्यकुब्ज तथा दक्षिण भारत जैसे विभिन्न स्थानों के ब्राह्मणों ने, जो वैदिक धर्म के पक्के अनुयायी थे, परम दैन्य भाव से श्री चैतन्य महाप्रभु को निमन्त्रण दिया।

প্রাতঃ-কালে অক্রূরে আসি' রন্ধন করিয়া ।
প্রভুরে ভিক্ষা দেন শালগ্রামে সমর্পিয়া ॥ ১৩৪ ॥

প্রাতঃ-কালে অক্রূরে আসি' রন্ধন করিয়া ।
প্রভুরে ভিক্ষা দেন শালগ্রামে সমর্পিয়া ॥ ১৩৪ ॥

প্রাতঃ-কালে—প্রাত:काल; **অক্রূরে**—अक्रूर तीर्थ में; **আসি'**—आकर; **রন্ধন করিয়া**—भोजन पकाया; **প্রভুরে**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **ভিক্ষা দেন**—भोजन दिया; **শালগ্রামে সমর্পিয়া**—शालग्राम शिला को भोग लगाने के बाद।

অনুবাদ

प्रातःकाल वे अक्रूर तीर्थ आते और भोजन पकाते थे। फिर इसे शालग्राम शिला को अर्पित करने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु को देते।

তাৎপর্য

पञ्चगौड़ ब्राह्मण उत्तरी भारत के पाँच स्थानों से सम्बन्धित हैं। *पञ्चदाक्षिणात्य ब्राह्मण* भी होते हैं, जो दक्षिण भारत के पाँच स्थानों से सम्बन्धित होते हैं। उत्तर भारत के स्थान हैं—कान्यकुब्ज, सारस्वत, गौड़, मैथिल तथा उत्कल। दक्षिण भारत में ये स्थान हैं—आन्ध्र, कर्नाटक, गुजरात, द्राविड़ और महाराष्ट्र। इन स्थानों के ब्राह्मण वैदिक नियमों के अत्यन्त पक्के अनुयायी होते हैं और उन्हें शुद्ध ब्राह्मण माना जाता है। ये वैदिक नियमों का दृढ़ता से पालन करते हैं और तान्त्रिक कुकृत्यों से कलुषित नहीं होते। इन सारे ब्राह्मणों ने महाप्रभु को बड़े ही आदर के साथ भोजन के लिए आमन्त्रित किया।

এক-দিন সেই অক্রূর-ঘাটের উপরে ।
বসি' মহাপ্রভু কিছু করেন বিচারে ॥ ১৩৫ ॥

এক-দিন সেই অক্রূর-ঘাটের উপরে ।
বসি' মহাপ্রভু কিছু করেন বিচারে ॥ ১৩৫ ॥

এক-দিন—एक बार; **সেই**—उसी; **অক্রূর-ঘাটের**—अक्रूर स्नान घाट के; **উপরে**—ऊपर; **বসি'**—बैठकर; **মহাপ্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **কিছু**—कुछ; **করেন**—किया; **বিচারে**—विचार।

अनुवाद

एक दिन श्री चैतन्य महाप्रभु अक्रूर-तीर्थ के स्नानघाट पर बैठ गये और इस तरह सोचने लगे।

तात्पर्य

अक्रूर-तीर्थ मथुरा तथा वृन्दावन के बीच की सड़क पर स्थित है। जब कृष्ण तथा बलराम को अक्रूर मथुरा ले जा रहे थे, तब भगवान् ने इस स्थान पर विश्राम किया था और यमुना नदी में स्नान किया था। जब कृष्ण तथा बलराम यमुना में स्नान कर रहे थे, तब अक्रूर को जल के भीतर पूरा वैकुण्ठ लोक दिखा। वृन्दावन के निवासियों को भी जल के भीतर वैकुण्ठ लोक दिखा।

এই ঘাটে অক্রূর বৈকুণ্ঠ দেখিল ।
ব্রজবাসী লোক 'গোলোক' দর্শন কৈল ॥১৩৬॥

এइ घाटे अक्रूर वैकुण्ठ देखिल ।
व्रजवासी लोक 'गोलोक' दर्शन कैल ॥१३६॥

एइ घाटे—इस घाट पर; **अक्रूर**—अक्रूर ने; **वैकुण्ठ देखिल**—वैकुण्ठ (आध्यात्मिक जगत्) देखा; **व्रजवासी लोक**—वृन्दावन के निवासियों ने; **गोलोक दर्शन कैल**—गोलोक वृन्दावन देखा।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने सोचा, "इस घाट पर अक्रूर को वैकुण्ठ लोक दिखा था और सारे व्रजवासियों ने गोलोक वृन्दावन देखा था।"

এত বলি' ঝাঁপ দিলা জলের উপরে ।
ডুবিয়া রহিলা প্রভু জলের ভিতরে ॥১৩৭॥

एत बलि' झाँप दिला जलेर उपरे ।
डुबिया रहिला प्रभु जलेर भितरे ॥१३७॥

एत बलि'—यह कहकर; **झाँप दिला**—कूद पड़े; **जलेर उपरे**—जल में; **डुबिया**—निमग्न; **रहिला**—रहे; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **जलेर भितरे**—जल के भीतर।

अनुवाद

यह सोचते हुए कि अक्रूर किस तरह जल के भीतर रहे, श्री चैतन्य महाप्रभु तुरन्त जल में कूद पड़े और कुछ समय तक जल के भीतर रहे।

দেখি' কৃষ্ণদাস কান্দি' ফুকার করিল ।
ভট্টাচার্য শীঘ্র আসি' প্রভুরে উঠাইল ॥ ১৩৮॥

देखि' कृष्णदास कान्दि' फुकार करिल ।
भट्टाचार्य्य शीघ्र आसि' प्रभुरे उठाइल ॥ १३८॥

देखि'—देखकर; **कृष्णदास**—कृष्णदास; **कान्दि'**—रोने लगा; **फुकार करिल**—जोर जोर से पुकारने लगा; **भट्टाचार्य्य**—बलभद्र भट्टाचार्य; **शीघ्र**—शीघ्र; **आसि'**—आकर; **प्रभुरे उठाइल**—श्री चैतन्य महाप्रभु को उठाकर बाहर निकाला।

अनुवाद

जब कृष्णदास ने देखा कि चैतन्य महाप्रभु डूब रहे हैं, तो वह खूब जोर से चिल्लाया। तुरन्त ही बलभद्र भट्टाचार्य ने आकर महाप्रभु को जल से बाहर खींचा।

তবে ভট্টাচার্য সেই ব্রাহ্মণে লঞা ।
যুক্তি করিলা কিছু নিভৃতে বসিয়া ॥ ১৩৯॥

तबे भट्टाचार्य्य सेइ ब्राह्मणे लञा ।
युक्ति करिला किछु निभृते वसिया ॥ १३९॥

तबे—तब; **भट्टाचार्य्य**—भट्टाचार्य; **सेइ ब्राह्मणे**—सनोड़िया ब्राह्मण को लेकर; **लञा**—लेकर; **युक्ति करिला**—विचार विमर्श किया; **किछु**—कुछ; **निभृते वसिया**—एकान्त में बैठकर।

अनुवाद

इसके बाद बलभद्र भट्टाचार्य सनोड़िया ब्राह्मण को एकान्त स्थान में ले गया और उससे विचार-विमर्श किया।

আজি আমি আছিলাঙ উঠাইলুঁ প্রভুরে ।
বৃন্দাবনে ডুবেন যদি, কে উঠাবে তাঁরে? ॥ ১৪০॥

आजि आमि आछिलाङ उठाइलुँ प्रभुरे ।
वृन्दावने डुबेन य्रदि, के उठाबे ताँरे? ॥ १४० ॥

आजि—आज; **आमि**—मैं; **आछिलाङ**—उपस्थित था; **उठाइलुँ**—उठा लिया (बाहर निकाल लिया); **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **वृन्दावने**—वृन्दावन में; **डुबेन य्रदि**—यदि वे डूब जाते; **के उठाबे ताँरे**—तो उन्हें कौन उठाता (बाहर निकालता)।

अनुवाद

बलभद्र भट्टाचार्य ने कहा, "चूँकि मैं आज उपस्थित था, इसलिए महाप्रभु को ऊपर खींच पाना मेरे लिए सम्भव हो सका। किन्तु यदि वे वृन्दावन में डूबने लगें, तो कौन उनकी सहायता करेगा?

লোকের সঙ্ঘট্ট, আর নিমন্ত্রণের জঞ্জাল ।
নিরন্তর আবেশ প্রভুর না দেখিয়ে ভাল ॥ ১৪১ ॥

लोकेर सङ्घट्ट, आर निमन्त्रणेर जञ्जाल ।
निरन्तर आवेश प्रभुर ना देखिये भाल ॥ १४१ ॥

लोकेर सङ्घट्ट—लोगों की भीड़; **आर**—और; **निमन्त्रणेर जञ्जाल**—निमन्त्रणों की परेशानी; **निरन्तर**—लगातार; **आवेश**—प्रेमावेश; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **ना देखिये भाल**—इसमें मुझे कोई अच्छी बात दिखाई नहीं देती।

अनुवाद

"अब यहाँ पर लोगों की भीड़ होने लगी है और इन निमन्त्रणों से बहुत परेशानी होती है। साथ ही, महाप्रभु सदैव भावावेश में रहते हैं। मुझे यहाँ की स्थिति बहुत अच्छी नहीं लगती।

বৃন্দাবন হৈতে যদি প্রভুরে কাড়িয়ে ।
তবে মঙ্গল হয়,—এই ভাল যুক্তি হয়ে ॥ ১৪২ ॥

वृन्दावन हैते य्रदि प्रभुरे काड़िये ।
तबे मङ्गल हय,—एइ भाल य्रुक्ति हये ॥ १४२ ॥

वृन्दावन हैते—वृन्दावन से; **य्रदि**—यदि; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **काड़िये**—मैं दूर ले जाऊँ; **तबे**—तब; **मङ्गल हय**—यह शुभ बात होगी; **एइ**—यह; **भाल**—अच्छी; **य्रुक्ति**—योजना; **हये**—है।

अनुवाद

"अच्छा यही होगा, यदि हम श्री चैतन्य महाप्रभु को वृन्दावन से बाहर ले चलें। यही मेरा अन्तिम निर्णय है।"

विप्र कहे,—प्रयागे प्रभु लञा याइ ।
गङ्गा-तीर-पथे याइ, तबे सुख पाइ ॥ १४३ ॥

विप्र कहे,—प्रयागे प्रभु लञा याइ ।
गङ्गा-तीर-पथे याइ, तबे सुख पाइ ॥ १४३ ॥

विप्र कहे—ब्राह्मण ने कहा; **प्रयागे**—प्रयाग को; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **लञा**—लेकर; **याइ**—चलें; **गङ्गा-तीर-पथे**—गंगा के तट पर; **याइ**—चलें; **तबे**—तब; **सुख पाइ**—हमें हर्ष होगा।

अनुवाद

सनोडिया ब्राह्मण ने कहा, "चलो, हम उन्हें प्रयाग ले चलें और गंगा के किनारे-किनारे चलें। उस मार्ग से होकर जाना बहुत ही आनन्दप्रद होगा।

'सोरो-क्षेत्रे, आगे याञा करि' गङ्गा-स्नान ।
सेइ पथे प्रभु लञा करियेे पयान ॥ १४४ ॥

'सोरो-क्षेत्रे, आगे याञा करि' गङ्गा-स्नान ।
सेइ पथे प्रभु लञा करिये पयान ॥ १४४ ॥

सोरो-क्षेत्रे—सोरो क्षेत्र नामक पावन स्थान को; **आगे**—आगे; **याञा**—जाकर; **करि' गङ्गा-स्नान**—गंगा स्नान करने के बाद; **सेइ पथे**—उस रास्ते पर; **प्रभु लञा**—श्री चैतन्य महाप्रभु को लेकर; **करिये पयान**—चलें।

अनुवाद

"सोरोक्षेत्र नामक तीर्थस्थान जाकर तथा गंगास्नान करके हम श्री चैतन्य महाप्रभु को उसी मार्ग से होकर ले चलें।

माघ-मास लागिल, एबे यदि याइये ।
मकरे प्रयाग-स्नान कत दिन पाइये ॥ १४५ ॥

माघ-मास लागिल, एबे यदि याइये ।
मकरे प्रयाग-स्नान कत दिन पाइये ॥ १४५ ॥

माघ-मास लागिल—माघ मास आरम्भ हो गया है; **एबे**—अब; **यदि**—यदि; **याइये**—हम जाएँ; **मकरे**—मकर संक्रान्ति के दौरान; **प्रयाग-स्नान**—प्रयाग स्नान; **कत दिन**—कुछ दिनों के लिए; **पाइये**—हमें मिलेगा।

अनुवाद

"अब माघ मास लग रहा है। यदि हम इस समय प्रयाग जाएँ, तो हमें मकर संक्रान्ति के अवसर पर कुछ दिन स्नान करने का अवसर मिल जायेगा।"

तात्पर्य

आज भी माघ-मेला में माघ मास में स्नान किया जाता है। यह अनन्त काल से चला आने वाला अत्यन्त प्राचीन मेला है। कहा जाता है कि जब से भगवान् ने मोहिनी के रूप में अमृत का एक कलश लाकर प्रयाग में रख दिया, तब से वहाँ माघ मेला मनाया जाता रहा है और वहाँ प्रतिवर्ष धार्मिक लोगों का मेला लगता है। हर बारहवें वर्ष कुम्भ मेला लगता है, जिस अवसर पर भारत-भर के पवित्र लोग वहाँ एकत्र होते हैं। यह ब्राह्मण माघ-मेला का लाभ उठाकर वहाँ स्नान करना चाहता था।

गंगा तथा यमुना के संगम में किले के निकट इलाहाबाद, प्रयाग में स्नान करने का उल्लेख शास्त्रों में मिलता है :

माघे मासि गमिष्यन्ति गङ्गायमुनासङ्गमम्।
गवां शतसहस्रस्य सम्यग् दत्तं च यत्फलम्।
प्रयागे माघमासे वै त्र्यहं स्नातस्य तत्फलम्॥

"यदि कोई प्रयाग जाकर गंगा तथा यमुना के संगम में माघ मास में स्नान करता है, तो उसे लाखों गौएँ दान देने का फल प्राप्त होता है। केवल तीन दिन स्नान करने से उसे ऐसे पुण्यकर्म का फल प्राप्त होता है।" इसी कारण से सनोड़िया ब्राह्मण प्रयाग जाने और वहाँ स्नान करने के लिए अत्यन्त उत्सुक था। सामान्यतया कर्मीजन माघ-मास में वहाँ स्नान करने का लाभ उठाते हैं, क्योंकि उनका विचार है कि भविष्य में उन्हें फल मिलेगा। जो भक्तिमय सेवा में लगे हुए हैं, वे इस कर्मकाण्डीय विधि का दृढ़ता से पालन नहीं करते।

আপনার দুঃখ কিছু করি' নিবেদন ।
'মকর-পঁচসি প্রয়াগে' করিহ সূচন ॥ ১৪৬॥

আপনার দুःখ কিছু করি' নিবেদন ।
'মকর-পঁচসি প্রয়াগে' করিহ সূচন ॥ ১৪৬॥

আপনার—अपना; **দুःখ**—दुःख; **কিছু**—कुछ; **করি'**—करके; **নিবেদন**—निवेदन; **মকর-পঁচসি**—माघ मास की पूर्णमासी; **প্রয়াগে**—प्रयाग को; **করিহ সূচন**—कृपया सूचित करें।

अनुवाद

सनोड़िया ब्राह्मण ने आगे कहा, "तुम अपने मन के भीतर जिस दुःख का अनुभव कर रहे हो, उसे चैतन्य महाप्रभु के सामने निवेदन करो। तब यह प्रस्ताव रखो कि हम माघ मास की पूर्णिमा को प्रयाग जाना चाहते हैं।

গঙ্গা-তীর-পথে সুখ জানাইহ তাঁরে ।
ভট্টাচার্য আসি' তবে কহিল প্রভুরে ॥ ১৪৭॥

গঙ্গা-তীর-পথে সুখ জানাইহ তাঁরে ।
ভট্টাচার্য্য আসি' তবে কহিল প্রভুরে ॥ ১৪৭॥

গঙ্গা-তীর—गंगा के तट पर; **পথে**—पथ पर; **সুখ**—सुख; **জানাইহ**—कृपया बताएँ; **তাঁরে**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **ভট্টাচার্য্য**—बलभद्र भट्टाचार्य ने; **আসি'**—आकर; **তবে**—तत्पश्चात्; **কহিল প্রভুরে**—श्री चैतन्य महाप्रभु को सूचित किया।

अनुवाद

"तुम महाप्रभु से जाकर उस सुख को बतलाओ, जो तुम गंगा नदी के किनारे-किनारे यात्रा करने में अनुभव करोगे।" अतः बलभद्र भट्टाचार्य ने श्री चैतन्य महाप्रभु से यह प्रार्थना निवेदित की।

"সহিতে না পারি আমি লোকের গড়বড়ি ।
নিমন্ত্রণ লাগি' লোক করে হুড়াহুড়ি ॥ ১৪৮॥

"সহিতে না পারি আমি লোকের গড়বড়ি ।
নিমন্ত্রণ লাগি' লোক করে হুড়াহুড়ি ॥ ১৪৮॥

सहिते ना पारि—सहन नहीं कर सकता; **आमि**—मैं; **लोकेर**—लोगों की; **गड़बड़ि**—गड़बड़ी; **निमन्त्रण**—निमन्त्रण देने; **लागि'**—के लिए; **लोक**—लोग; **करे**—करते हैं; **हुड़ाहुड़ि**—जल्दी।

अनुवाद

बलभद्र भट्टाचार्य ने महाप्रभु से बतलाया, "मैं अब भीड़ द्वारा किये जाने वाले उपद्रव को और नहीं सह सकता। लोग एक के बाद एक निमन्त्रण देने के लिए चले आते हैं।

প্রাতঃ-কালে আইসে লোক, তোমারে না পায় ।
তোমারে না পাঞা লোক মোর মাথা খায় ॥ ১৪৯॥

प्रातः-काले आइसे लोक, तोमारे ना पाय ।
तोमारे ना पाञा लोक मोर माथा खाय ॥ १४९॥

प्रातः-काले—प्रातः काल; **आइसे**—आते हैं; **लोक**—लोग; **तोमारे**—आपको; **ना पाय**—नहीं देख सकते; **तोमारे ना पाञा**—आप नहीं मिलते; **लोक**—लोग; **मोर माथा खाय**—मेरा सिर खाते हैं, मुझे तंग करते हैं।

अनुवाद

"प्रातःकाल लोग यहाँ आते हैं और आपको उपस्थित न देखकर मेरा सिर खाते हैं।

তবে সুখ হয় যবে গঙ্গা-পথে যাইয়ে ।
এবে যদি যাই, 'মকরে' গঙ্গা-স্নান পাইয়ে ॥ ১৫০॥

तबे सुख हय यबे गङ्गा-पथे याइये ।
एबे यदि याइ, 'मकरे' गङ्गा-स्नान पाइये ॥ १५०॥

तबे—तब; **सुख हय**—मुझे बहुत हर्ष होगा; **यबे**—जब; **गङ्गा-पथे**—गंगा के पथ पर; **याइये**—हम जाएँ; **एबे यदि याइ**—यदि हम अभी जाएँ; **मकरे**—मकर संक्रान्ति के दौरान; **गङ्गा-स्नान पाइये**—हम गंगा में स्नान कर सकते हैं।

अनुवाद

"मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी, यदि हम सभी गंगा नदी के किनारे के

मार्ग से यात्रा करें। तब हमें मकर संक्रान्ति के अवसर पर प्रयाग में स्नान करने का अवसर प्राप्त हो सकता है।

तात्पर्य

माघ मेला के अवसर पर गंगा में स्नान करने के दो बड़े अवसर होते हैं। एक तो माघ मास की अमावस्या और दूसरा पूर्णिमा।

उद्विग्न हइल प्राण, सहिते ना पारि ।
प्रभुर ये आज्ञा हय, सेइ शिरे धरि'' ॥ १५१॥

उद्विग्न हइल प्राण, सहिते ना पारि ।
प्रभुर ये आज्ञा हय, सेइ शिरे धरि" ॥ १५१॥

उद्विग्न—विचलित; **हइल**—हो गया है; **प्राण**—मेरा मन; **सहिते**—सहन करने में; **ना पारि**—मैं समर्थ नहीं हूँ; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **ये**—जो; **आज्ञा**—आज्ञा; **हय**—हो; **सेइ शिरे धरि**—वह मैं सिर पर धारण करता हूँ।

अनुवाद

"मेरा मन अत्यन्त उद्विग्न हो उठा है और मैं इस चिन्ता को सह नहीं सकता। अब तो आपकी अनुमति पर ही सब निर्भर करता है। आप जो करना चाहें वह मुझे स्वीकार्य होगा।"

यद्यपि वृन्दावन-त्यागे नाहि प्रभुर मन ।
भक्त-इच्छा पूरिते कहे मधुर वचन ॥ १५२॥

यद्यपि वृन्दावन-त्यागे नाहि प्रभुर मन ।
भक्त-इच्छा पूरिते कहे मधुर वचन ॥ १५२॥

यद्यपि—यद्यपि; **वृन्दावन-त्यागे**—वृन्दावन को छोड़ने की; **नाहि प्रभुर मन**—महाप्रभु की इच्छा नहीं थी; **भक्त**—भक्त की; **इच्छा**—इच्छा; **पूरिते**—पूरी करने के लिए; **कहे**—कहे; **मधुर वचन**—मधुर वचन।

अनुवाद

यद्यपि श्री चैतन्य महाप्रभु की इच्छा नहीं थी कि वृन्दावन छोड़ें, किन्तु अपने भक्त की इच्छा पूरी करने के लिए वे मीठे बचन बोले।

''तुमि आमाय आनि' देखाइला वृन्दावन ।
एइ 'ऋण' आमि नारिब करिते शोधन ॥ १५३॥

"तुमि आमाय आनि' देखाइला वृन्दावन ।
एइ 'ऋण' आमि नारिब करिते शोधन ॥ १५३॥

तुमि—तुमने; **आमाय**—मुझे; **आनि'**—लाकर; **देखाइला**—दिखाया; **वृन्दावन**—वृन्दावन नामक पावन स्थान; **एइ ऋण**—यह ऋण; **आमि नारिब**—मैं नहीं कर सकूँगा; **करिते शोधन**—लौटाना।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "तुम मुझे यहाँ वृन्दावन दिखलाने के लिए लाये हो। इसके लिए मैं तुम्हारा अत्यधिक ऋणी हूँ और मैं इस ऋण को चुका सकने में समर्थ नहीं हो सकूँगा।

ये तोमार इच्छा, आमि सेइत करिब ।
याहाँ लञा याह तुमि, ताहाञि याइब'' ॥ १५४॥

ये तोमार इच्छा, आमि सेइत करिब ।
याहाँ लञा याह तुमि, ताहाञि याइब" ॥ १५४॥

ये तोमार इच्छा—तुम्हारी जो इच्छा हो; **आमि**—मैं; **सेइत करिब**—वैसा अवश्य करूँगा; **याहाँ**—जहाँ कहीं; **लञा याह**—ले जाओगे; **तुमि**—तुम; **ताहाञि याइब**—मैं वहाँ जाऊँगा।

अनुवाद

"जो तुम्हारी इच्छा है, वही मैं करूँगा। तुम मुझे जहाँ भी ले जाओगे, वहीं जाऊँगा।"

प्रातः-काले महाप्रभु प्रातः-स्नान कैल ।
'वृन्दावन छाड़िब' जानि' प्रेमावेश हैल ॥ १५५॥

प्रातः-काले महाप्रभु प्रातः-स्नान कैल ।
'वृन्दावन छाड़िब' जानि' प्रेमावेश हैल ॥ १५५॥

प्रातः-काले—प्रातः काल; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **प्रातः-स्नान कैल**—स्नान किया; **वृन्दावन छाड़िब**—मुझे वृन्दावन छोड़ना पड़ेगा; **जानि'**—जानकर; **प्रेम-आवेश हैल**—प्रेमावेश में आ गये।

अनुवाद

अगले दिन श्री चैतन्य महाप्रभु जल्दी उठ गये। स्नान करने के बाद यह जानकर कि अब उन्हें वृन्दावन छोड़ना है, वे भावाविष्ट हो गये।

বাহ্য বিকার নাহি, প্রেমাবিষ্ট মন ।
ভট্টাচার্য কহে,—চল, যাই মহাবন ॥ ১৫৬॥

বাহ্য বিকার নাহি, প্রেমাবিষ্ট মন ।
ভট্টাচার্য্য কহে,—চল, য়াই মহাবন ॥ ১৫৬॥

বাহ্য—बाहरी; **বিকার**—लक्षण; **নাহি**—नहीं थे; **প্রেম-আবিষ্ট মন**—मन प्रेमावेश में आ गया; **ভট্টাচার্য্য কহে**—भट्टाचार्य ने कहा; **চল**—चलें; **য়াই মহাবন**—महावन में चलें।

अनुवाद

यद्यपि महाप्रभु के शरीर में बाह्य लक्षण प्रकट नहीं हुए, किन्तु उनका मन प्रेमाविष्ट था। उस समय बलभद्र भट्टाचार्य ने कहा, "चलिए महावन (गोकुल) चलें।"

এত বলি' মহাপ্রভুরে নৌকায় বসাঞা ।
পার করি' ভট্টাচার্য চলিলা লঞা ॥ ১৫৭॥

এত বলি' মহাপ্রভুরে নৌকায় বসাঞা ।
পার করি' ভট্টাচার্য্য চলিলা লঞা ॥ ১৫৭॥

এত বলি'—इतना कहकर; **মহাপ্রভুরে**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **নৌকায়**—नौका पर; **বসাঞা**—बैठाकर; **পার করি'**—नदी पार करके; **ভট্টাচার্য্য**—बलभद्र भट्टाचार्य; **চলিলা**—चला गया; **লঞা**—लेकर।

अनुवाद

यह कहकर बलभद्र भट्टाचार्य ने श्री चैतन्य महाप्रभु को नौका में चढ़ाया और नदी पार करने के बाद वह महाप्रभु को अपने साथ ले गया।

প্রেমী কৃষ্ণদাস, আর সেইত ব্রাহ্মণ ।
গঙ্গা-তীর-পথে যাইবার বিজ্ঞ দুই-জন ॥ ১৫৮॥

प्रेमी कृष्णदास, आर सेइत ब्राह्मण ।
गङ्गा-तीर-पथे याइबार विज्ञ दुइ-जन ॥ १५८ ॥

प्रेमी कृष्णदास—राजपूत भक्त कृष्णदास; **आर**—और; **सेइत ब्राह्मण**—वह सनोड़िया ब्राह्मण; **गङ्गा-तीर-पथे**—गंगा तट से मार्ग पर; **याइबार**—जाने का; **विज्ञ**—अनुभवी; **दुइ-जन**—दोनों व्यक्ति।

अनुवाद

राजपूत कृष्णदास तथा सनोड़िया ब्राह्मण दोनों ही गंगा नदी के किनारे के रास्ते से भलीभाँति परिचित थे।

যাইতে এক বৃক্ষ-তলে প্রভু সবা লঞা ।
বসিলা, সবার পথ-শ্রান্তি দেখিয়া ॥ ১৫৯ ॥

याइते एक वृक्ष-तले प्रभु सबा लञा ।
वसिला, सबार पथ-श्रान्ति देखिया ॥ १५९ ॥

याइते—जाते समय; **एक**—एक; **वृक्ष-तले**—वृक्ष के नीचे; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **सबा लञा**—उन सबको लेकर; **वसिला**—बैठ गये; **सबार**—उन सबका; **पथ-श्रान्ति**—चलने की थकान; **देखिया**—समझकर।

अनुवाद

जाते हुए श्री चैतन्य महाप्रभु समझ गये कि अन्य लोग थक गये हैं, अतः वे सबको एक वृक्ष के तले ले गये और बैठ गये।

সেই বৃক্ষ-নিকটে চরে বহু গাভী-গণ ।
তাহা দেখি' মহাপ্রভুর উল্লসিত মন ॥ ১৬০ ॥

सेइ वृक्ष-निकटे चरे बहु गाभी-गण ।
ताहा देखि' महाप्रभुर उल्लसित मन ॥ १६० ॥

सेइ—उस; **वृक्ष-निकटे**—वृक्ष के निकट; **चरे**—चर रही थी; **बहु**—अनेक; **गाभी-गण**—गाएँ; **ताहा**—वह; **देखि'**—देखकर; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **उल्लसित मन**—मन बहुत आनन्दित हो गया।

अनुवाद

उस वृक्ष के पास बहुत-सी गाएँ चर रही थीं और महाप्रभु उन्हें देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए।

आचम्बिते एक गोप वंशी बाजाइल ।
शुनि' महाप्रभुर महा-प्रेमावेश हैल ॥ १६१ ॥

आचम्बिते एक गोप वंशी बाजाइल ।
शुनि' महाप्रभुर महा-प्रेमावेश हैल ॥ १६१ ॥

आचम्बिते—अचानक; **एक गोप**—एक ग्वाला; **वंशी**—वंशी; **बाजाइल**—बजाने लगा; **शुनि'**—सुनकर; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **महा-प्रेम-आवेश**—अत्यन्त प्रेम में आवेश; **हैल**—हो गया।

अनुवाद

सहसा एक ग्वाले ने अपनी वंशी बजाई, तो महाप्रभु तुरन्त प्रेमाविष्ट हो गये।

अचेतन हञा प्रभु भूमिते पड़िला ।
मुखे फेना पड़े, नासाय श्वास रुद्ध हैला ॥ १६२ ॥

अचेतन हञा प्रभु भूमिते पड़िला ।
मुखे फेना पड़े, नासाय श्वास रुद्ध हैला ॥ १६२ ॥

अचेतन—अचेत; **हञा**—होकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **भूमिते पड़िला**—भूमि पर गिर गये; **मुखे**—मुख से; **फेना पड़े**—फेन (झाग) निकलने लगा; **नासाय**—नासिकाओं में; **श्वास**—सांस; **रुद्ध हैला**—बन्द हो गया।

अनुवाद

भावाविष्ट होने से महाप्रभु अचेत होकर भूमि पर गिर पड़े। उनके मुख से फेन निकलने लगा और उनकी श्वास रुक गई।

हेन-काले ताहाँ आशोयार दश आइला ।
म्लेच्छ-पाठान घोड़ा हैते उत्तरिला ॥ १६३ ॥

हेन-काले ताहाँ आशोयार दश आइला ।
म्लेच्छ-पाठान घोड़ा हैते उत्तरिला ॥ १६३ ॥

हेन-काले—ठीक उस समय; **ताहाँ**—वहाँ; **आशोयार**—सिपाही; **दश**—दस; **आइला**—आये; **म्लेच्छ**—मुस्लिम; **पाठान**—पठान; **घोड़ा**—घोड़ों; **हैते**—से; **उत्तरिला**—नीचे उतरे।

अनुवाद

जब महाप्रभु बेहोश थे, तब वहाँ दस अश्वारोही सिपाही, जो मुसलमान पठान सैनिक थे, आये और घोड़े से उतरे।

प्रभुरे देखिया म्लेच्छ करये विचार ।
एइ यति-पाश छिल सुवर्ण अपार ॥ १६४ ॥
प्रभुरे देखिया म्लेच्छ करये विचार ।
एइ यति-पाश छिल सुवर्ण अपार ॥ १६४ ॥

प्रभुरे—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **देखिया**—देखकर; **म्लेच्छ**—मुस्लिमों ने; **करये विचार**—विचार किया; **एइ यति-पाश**—इस संन्यासी के कब्जे में; **छिल**—था; **सुवर्ण अपार**—अपार स्वर्ण।

अनुवाद

महाप्रभु को बेहोश देखकर सिपाहियों ने सोचा, "इस संन्यासी के पास अवश्य ही काफी मात्रा में सोना होगा।

एइ चारि बाटोयार धुतुरा खाओयाञा ।
मारि' डारियाछे, यतिर सब धन लञा ॥ १६५ ॥
एइ चारि बाटोयार धुतुरा खाओयाञा ।
मारि' डारियाछे, यतिर सब धन लञा ॥ १६५ ॥

एइ—ये; **चारि**—चार; **बाटोयार**—बदमाश; **धुतुरा**—धतूरा विष; **खाओयाञा**—खिलाकर; **मारि' डारियाछे**—मार दिया; **यतिर**—संन्यासी का; **सब**—सब; **धन**—धन; **लञा**—ले लिया।

अनुवाद

"इन चारों धूर्तों ने धतूरा खिलाकर मारने के बाद अवश्य ही इस संन्यासी का धन ले लिया होगा।"

তবে সেই পাঠান চারি-জনেরে বাঁধিল ।
কাটিতে চাহে, গৌড়িয়া সব কাঁপিতে লাগিল ॥ ১৬৬॥

তবে সেই পাঠান চারি-জনেরে বাঁধিল ।
কাটিতে চাহে, গৌড়িয়া সব কাঁপিতে লাগিল ॥ ১৬৬॥

तबे—तब; **सेइ पाठान**—पठान सिपाहियों ने; **चारि-जनेरे**—चार व्यक्तियों को; **बाँधिल**—कैद कर लिया; **काटिते चाहे**—उनको मारना चाहा; **गौड़िया**—बंगाली; **सब**—सब; **काँपिते लागिल**—काँपने लगे।

अनुवाद

यह सोचकर पठान सैनिकों ने उन चारों जनों को बन्दी बना लिया और उनको मार डालने का निश्चय किया। इसके कारण दोनों बंगाली काँपने लगे।

तात्पर्य

चार व्यक्ति थे—बलभद्र भट्टाचार्य, उनका सहायक ब्राह्मण, राजपूत कृष्णदास तथा माधवेन्द्र पुरी का भक्त सनोड़िया ब्राह्मण।

কৃষ্ণদাস—রাজপুত, নির্ভয় সে বড় ।
সেই বিপ্র—নির্ভয়, সে—মুখে বড় দড় ॥ ১৬৭॥

কৃষ্ণদাস—রাজপুত, নির্ভয় সে বড় ।
সেই বিপ্র—নির্ভয়, সে—মুখে বড় দড় ॥ ১৬৭॥

कृष्णदास—कृष्णदास; **राजपुत**—राजपूत; **निर्भय**—निडर; **से**—वह; **बड़**—बड़ा; **सेइ विप्र**—वह सनोड़िया ब्राह्मण भी; **निर्भय**—निडर; **से**—वह; **मुखे**—मुख में; **बड़ दड़**—बड़ा वीर।

अनुवाद

भक्त कृष्णदास राजपूत जाति का था और बहुत निडर था। सनोड़िया ब्राह्मण भी निडर था, अतः वह बड़ी बहादुरी से बोला।

বিপ্র কহে,——পাঠান, তোমার পাত্সার দোহাই ।
চল তুমি আমি সিক্দার-পাশ যাই ॥ ১৬৮॥

विप्र कहे,——पाठान, तोमार पात्सार दोहाइ ।
चल तुमि आमि सिक्दार-पाश याइ ॥ १६८॥

विप्र कहे—ब्राह्मण ने कहा; **पाठान**—तुम पठान सिपाही; **तोमार**—तुम्हारे; **पात्सार**—राजा के; **दोहाइ**—संरक्षण में; **चल**—चलें; **तुमि**—तुम; **आमि**—हम; **सिक्दार-पाश**—सेनापति के पास; **याइ**—चलें।

अनुवाद

ब्राह्मण ने कहा, "तुम पाठान सिपाही अपने राजा के संरक्षण में हो। चलो हम तुम्हारे अधिकारी के पास चलते हैं और उनका निर्णय लेते हैं।

এই যতি——আমার গুরু, আমি——মাথুর ব্রাহ্মণ ।
পাত্সার আগে আছে মোর 'শত জন' ॥ ১৬৯॥

एइ यति——आमार गुरु, आमि——माथुर ब्राह्मण ।
पात्सार आगे आछे मोर 'शत जन' ॥ १६९॥

एइ यति—यह संन्यासी; **आमार गुरु**—मेरा गुरु; **आमि**—मैं; **माथुर ब्राह्मण**—मथुरा का एक ब्राह्मण; **पात्सार आगे**—मुस्लिम बादशाह की सेवा में; **आछे**—हैं; **मोर**—मेरे; **शत जन**—एक सौ लोग।

अनुवाद

"यह संन्यासी मेरे गुरु हैं और मैं मथुरा से आया हूँ। मैं ब्राह्मण हूँ और मैं ऐसे सैकड़ों व्यक्तियों को जानता हूँ, जो मुसलमान राजा की नौकरी में हैं।

এই যতি ব্যাধিতে কভু হয়েন মূর্চ্ছিত ।
অবঁহি চেতন পাইবে, হইবে সম্বিত ॥ ১৭০॥

एइ यति व्याधिते कभु हयेन मूर्च्छित ।
अबँहि चेतन पाइबे, हइबे सम्वित ॥ १७०॥

एइ यति—यह संन्यासी; **व्याधिते**—रोग से प्रभावित; **कभु**—कभी-कभी; **हयेन**

मूर्च्छित—अचेतन हो जाते हैं; **अबँहि**—अति शीघ्र; **चेतन**—चेतन; **पाइबे**—हो जायेंगे; **हइबे सम्वित**—होश में आ जायेंगे।

अनुवाद

"ये संन्यासी रोग के कारण कभी-कभी बेहोश हो जाते हैं। कृपया बैठ जाएँ और आप देखेंगे कि शीघ्र ही उन्हें चेतना आ जायेगी और वे सामान्य हो जायेंगे।

क्षणेक ईहाँ वैस, बान्धि' राखह सवारे ।
ईँहाके पुछिया, तवे मारिह सवारे ॥ १७१॥

क्षणेक इहाँ वैस, बान्धि' राखह सबारे ।
इँहाके पुछिया, तबे मारिह सबारे ॥ १७१॥

क्षणेक—कुछ समय के लिए; **इहाँ वैस**—यहाँ बैठो; **बान्धि'**—कैद में; **राखह**—रखो; **सबारे**—हम सबको; **इँहाके पुछिया**—उनको पूछने के बाद; **तबे**—तब; **मारिह सबारे**—तुम हम सबको मार सकते हो।

अनुवाद

"आप थोड़ी देर बैठे रहें और हम सबको बन्दी बनाये रखें। जब इन संन्यासी को होश आ जाए, तब आप इनसे पूछें। तब यदि आप चाहें तो हम सबको मार सकते हैं।"

पाठान कहे,——तुमि पश्चिमा माथुर दुई-जन ।
'गौड़िया' ठकेइ काँपे दुई-जन ॥ १७२॥

पाठान कहे,——तुमि पश्चिमा माथुर दुइ-जन ।
'गौड़िया' ठक् एइ काँपे दुइ-जन ॥ १७२॥

पाठान कहे—सिपाहियों ने कहा; **तुमि**—तुम; **पश्चिमा**—पश्चिमी भारतीय; **माथुर**—मथुरा जिले में रहने वाले; **दुइ-जन**—तुमको; **गौड़िया**—बंगाली; **ठक्**—ठग; **एइ**—ये; **काँपे**—काँप रहे हैं; **दुइ-जन**—दो व्यक्ति।

अनुवाद

पठान सिपाहियों ने कहा, "तुम सभी धूर्त हो। तुम में से एक पश्चिम से है, एक मथुरा जिले से है और अन्य दो, जो काँप रहे हैं, बंगाल के हैं।"

কৃষ্ণদাস কহে,—আমার ঘর এই গ্রামে ।
দুই-শত তুর্কী আছে, শতেক কামানে ॥ ১৭৩ ॥

কৃষ্ণদাস কহে,—আমার ঘর এই গ্রামে ।
দুই-শত তুর্কী আছে, শতেক কামানে ॥ ১৭৩ ॥

कृष्णदास कहे—राजपूत कृष्णदास ने कहा; **आमार घर**—मेरा घर; **एइ ग्रामे**—इस गाँव में है; **दुइ-शत तुर्की**—२०० तुर्की सिपाही; **आछे**—मेरे पास हैं; **शतेक कामाने**—एक सौ के लगभग तोपें।

अनुवाद

राजपूत कृष्णदास ने कहा, "मेरा घर यहीं है और मेरे पास लगभग दो सौ तुर्की सिपाही तथा एक सौ तोपें हैं।

এখনি আসিবে সব, আমি যদি ফুকারি ।
ঘোড়া-পিড়া লুটি' লবে তোমা-সবা মারি' ॥ ১৭৪ ॥

এখনি আসিবে সব, আমি যদি ফুকারি ।
ঘোড়া-পিড়া লুটি' লবে তোমা-সবা মারি' ॥ ১৭৪ ॥

एखनि—तत्क्षण; **आसिबे सब**—वे सब आ जायेंगे; **आमि**—मैं; **यदि**—यदि; **फुकारि**—जोर से पुकारूँ; **घोड़ा-पिड़ा**—घोड़े और उनकी काठियाँ; **लुटि'**—लूटकर; **लबे**—ले लेंगे; **तोमा-सबा मारि'**—तुम सबको मार देने के बाद।

अनुवाद

"यदि मैं पुकारूँ, तो वे तुरन्त आकर तुम्हारा वध कर देंगे और तुम्हारे घोड़े तथा काठी लूट लेंगे।

গৌড়িয়া—'বাটপাড়' নহে, তুমি—'বাটপাড়' ।
তীর্থ-বাসী লুঠ', আর চাহ' মারিবার ॥ ১৭৫ ॥

গৌড়িয়া—'বাটপাড়' নহে, তুমি—'বাটপাড়' ।
তীর্থ-বাসী লুঠ', আর চাহ' মারিবার ॥ ১৭৫ ॥

गौड़िया—बंगाली यात्री; **बाटपाड़ नहे**—लुटेरे नहीं हैं; **तुमि**—तुम; **बाटपाड़**—लुटेरे; **तीर्थ-वासी**—तीर्थयात्रियों को; **लुठ'**—तुम लूटते हो; **आर**—और; **चाह'**—तुम चाहते हो; **मारिबार**—उन्हें मारना।

अनुवाद

"बंगाली यात्री धूर्त नहीं हैं। तुम्हीं धूर्त हो, जो यात्रियों को मारकर लूट लेना चाहते हो।"

শুনিয়া পাঠান মনে সঙ্কোচ হইল ।
হেন-কালে মহাপ্রভু 'চৈতন্য' পাইল ॥ ১৭৬॥

শুনিয়া পাঠান মনে সঙ্কোচ হইল ।
হেন-কালে মহাপ্রভু 'চৈতন্য' পাইল ॥ ১৭৬॥

शुनिया—यह सुनकर; **पाठान**—मुस्लिम सिपाही; **मने**—मन में; **सङ्कोच हइल**—कुछ संकोच हो गया; **हेन-काले**—इस समय; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **चैतन्य पाइल**—होश में आ गये।

अनुवाद

यह ललकार सुनकर पाठान सिपाही हिचकिचाये। तभी श्री चैतन्य महाप्रभु की सहसा चेतना लौट आयी।

হুঙ্কার করিয়া উঠে, বলে 'হরি' 'হরি' ।
প্রেমাবেশে নৃত্য করে ঊর্ধ্ব-বাহু করি' ॥ ১৭৭॥

হুঙ্কার করিয়া উঠে, বলে 'হরি' 'হরি' ।
প্রেমাবেশে নৃত্য করে ঊর্ধ্ব-বাহু করি' ॥ ১৭৭॥

हुँ-कार करिया—बड़े जोर से गूंज की; **उठे**—उठ खड़े हुए; **बले हरि हरि**—"हरि हरि" बोलने लगे; **प्रेम-आवेशे**—प्रेमावेश में आकर; **नृत्य करे**—नृत्य किया; **ऊर्ध्व-बाहु करि'**—अपनी भुजाएँ ऊपर उठाकर।

अनुवाद

चेतना आने पर महाप्रभु जोर-जोर से "हरि! हरि!" का उच्चारण करने लगे। वे अपनी दोनों बाहें ऊपर उठाकर प्रेमावेश में नृत्य करने लगे।

প্রেমাবেশে প্রভু যবে করেন চিৎকার ।
ম্লেচ্ছের হৃদয়ে যেন লাগে শেলধার ॥ ১৭৮॥

प्रेमावेशे प्रभु ग्रबे करेन चित्कार ।
म्लेच्छेर हृदये ग्रेन लागे शेलधार ॥ १७८ ॥

प्रेम-आवेशे—प्रेमावेश में; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ग्रबे**—जब; **करेन चित्कार**—जोर से चिल्लाए; **म्लेच्छेर हृदये**—मुस्लिम सिपाहियों के दिल में; **ग्रेन**—जैसे; **लागे**—लगा हो; **शेल-धार**—वज्रघात।

अनुवाद

जब प्रेमावेश में महाप्रभु ने गर्जना की, तो मुसलमान सिपाहियों को लगा कि उनके हृदयों पर वज्रपात हो गया है।

ভয় পাঞা ম্লেচ্ছ ছাড়ি' দিল চারি-জন ।
প্রভু না দেখিল নিজ-গণের বন্ধন ॥ ১৭৯ ॥
भय पाञा म्लेच्छ छाड़ि' दिल चारि-जन ।
प्रभु ना देखिल निज-गणेर बन्धन ॥ १७९ ॥

भय पाञा—भयभीत होकर; **म्लेच्छ**—मुस्लिम सिपाहियों ने; **छाड़ि' दिल**—छोड़ दिया; **चारि-जन**—चारों लोगों को; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **ना देखिल**—नहीं देखा; **निज-गणेर**—अपने निजी साथियों को; **बन्धन**—कैदी बनते हुए।

अनुवाद

सभी पठान सिपाहियों ने भय के मारे चारों व्यक्तियों को छोड़ दिया। इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने निजी संगियों को बन्दी रूप में नहीं देखा।

ভট্টাচার্য আসি' প্রভুরে ধরি' বসাইল ।
ম্লেচ্ছ-গণ দেখি' মহাপ্রভুর 'বাহ্য' হৈল ॥ ১৮০ ॥
भट्टाचार्य आसि' प्रभुरे धरि' वसाइल ।
म्लेच्छ-गण देखि' महाप्रभुर 'बाह्य' हैल ॥ १८० ॥

भट्टाचार्य्य—भट्टाचार्य ने; **आसि'**—तत्क्षण निकट आकर; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **धरि'**—पकड़कर; **वसाइल**—बैठाया; **म्लेच्छ-गण देखि'**—मुस्लिम सिपाहियों को देखकर; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **बाह्य**—बाहरी चेतना; **हैल**—आ गई।

अनुवाद

तभी बलभद्र भट्टाचार्य ने श्री चैतन्य महाप्रभु के पास जाकर उन्हें पकड़कर बैठाया। मुसलमान सिपाहियों को देखकर महाप्रभु को बाह्य चेतना हो गई।

ম্লেচ্ছ-গণ আসি' প্রভুর বন্দিল চরণ ।
প্রভু-আগে কহে,—এই ঠক্‌চারি-জন ॥১৮১॥

म्लेच्छ-गण आसि' प्रभुर वन्दिल चरण ।
प्रभु-आगे कहे,—एइ ठक् चारि-जन ॥ १८१ ॥

म्लेच्छ-गण—मुस्लिम सिपाहियों ने; **आसि'**—वहाँ आकर; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **वन्दिल चरण**—चरणकमलों की पूजा की; **प्रभु-आगे कहे**—महाप्रभु के समक्ष कहा; **एइ ठक् चारि-जन**—ये चारों व्यक्ति ठग हैं।

अनुवाद

तब सारे मुसलमान सिपाही महाप्रभु के समक्ष आये, उन्होंने उनके चरणकमलों की वन्दना की और कहा, "ये चारों धूर्त (ठग) हैं।

এই চারি মিলি' তোমায় ধুতুরা খাওয়াঞা ।
তোমার ধন লৈল তোমায় পাগল করিয়া ॥১৮২॥

एइ चारि मिलि' तोमाय धुतुरा खाओयाञा ।
तोमार धन लैल तोमाय पागल करिया ॥ १८२ ॥

एइ चारि मिलि'—ये चारों ठगों ने मिलकर; **तोमाय**—आपको; **धुतुरा खाओयाञा**—जहर पिलाया; **तोमार**—आपका; **धन**—धन; **लैल**—ले लिया; **तोमाय**—आपको; **पागल**—पागल; **करिया**—बनाकर।

अनुवाद

"इन चारों ने मिलकर आपको धतूरा खिलाया और आपको पागल बनाकर आपका सारा धन ले लिया है।"

প্রভু কহেন,—ঠক্‌ নহে, মোর 'সঙ্গী' জন ।
ভিক্ষুক সন্ন্যাসী, মোর নাহি কিছু ধন ॥১৮৩॥

प्रभु कहेन,—ठक् नहे, मोर 'सङ्गी' जन ।
भिक्षुक सन्न्यासी, मोर नाहि किछु धन ॥ १८३ ॥

प्रभु कहेन—श्री चैतन्य महाप्रभु ने उत्तर दिया; **ठक् नहे**—वे ठग नहीं हैं; **मोर सङ्गी जन**—मेरे साथी; **भिक्षुक**—भिक्षुक; **सन्न्यासी**—संन्यासी; **मोर**—मेरे पास; **नाहि**—नहीं है; **किछु**—कुछ भी; **धन**—धन।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "ये चारों ठग नहीं हैं। ये मेरे साथी हैं। संन्यासी भिक्षुक होने के कारण मेरे पास कुछ भी नहीं है।"

मृगी-व्याधिते आमि कभु हइ अचेतन ।
एइ चारि दया करि' करेन पालन ॥ १८४ ॥

मृगी-व्याधिते आमि कभु हइ अचेतन ।
एइ चारि दया करि' करेन पालन ॥ १८४ ॥

मृगी-व्याधिते—मिरगी रोग के कारण; **आमि**—मैं; **कभु**—कभी-कभी; **हइ**—हो जाता हूँ; **अचेतन**—बेहोश; **एइ चारि**—ये चारों व्यक्ति; **दया करि'**—दयालु होने के कारण; **करेन पालन**—मेरा पालन करते हैं।

अनुवाद

"मिरगी रोग के कारण मैं कभी-कभी बेहोश हो जाता हूँ। ये चारों दयावश मेरी देख-रेख करते हैं।"

सेइ म्लेच्छ-मध्ये एक परम गम्भीर ।
काल वस्त्र परे सेइ,—लोके कहे 'पीर' ॥ १८५ ॥

सेइ म्लेच्छ-मध्ये एक परम गम्भीर ।
काल वस्त्र परे सेइ,—लोके कहे 'पीर' ॥ १८५ ॥

सेइ म्लेच्छ-मध्ये—उन मुस्लिमों के बीच; **एक**—एक; **परम गम्भीर**—अत्यन्त गम्भीर; **काल वस्त्र**—काले वस्त्रों वाला; **परे सेइ**—उसने पहने थे; **लोके**—लोग; **कहे**—कहते हैं; **पीर**—साधु पुरुष।

अनुवाद

उन मुसलमानों में से एक गम्भीर व्यक्ति था, जो काले वस्त्र पहने था। लोग उसे साधु पुरुष (पीर) कहते थे।

চিত্ত আর্দ্র হৈল তাঁর প্রভুরে দেখিয়া ।
'নির্বিশেষ-ব্রহ্ম' স্থাপে স্বশাস্ত্র উঠাঞা ॥ ১৮৬॥

चित्त आर्द्र हैल ताँर प्रभुरे देखिया ।
'निर्विशेष-ब्रह्म' स्थापे स्वशास्त्र उठाञा ॥ १८६॥

चित्त—हृदय; **आर्द्र**—कोमल; **हैल**—हो गया; **ताँर**—उसका; **प्रभुरे देखिया**—श्री चैतन्य महाप्रभु को देखकर; **निर्विशेष-ब्रह्म**—निर्विशेष ब्रह्म; **स्थापे**—स्थापित करना चाहता था; **स्व-शास्त्र उठाञा**—अपने शास्त्र (कुरान) के आधार पर।

अनुवाद

उस पीर का मन श्री चैतन्य महाप्रभु को देखकर मृदु हो गया। उसने उनसे बात करनी चाही और अपने शास्त्र कुरान के आधार पर निर्विशेष ब्रह्म की स्थापना करनी चाही।

'অদ্বৈত-ব্রহ্ম-বাদ' সেই করিল স্থাপন ।
তার শাস্ত্র-যুক্ত্যে তারে প্রভু কৈলা খণ্ডন ॥ ১৮৭॥

'अद्वैत-ब्रह्म-वाद' सेइ करिल स्थापन ।
तार शास्त्र-युक्त्ये तारे प्रभु कैला खण्डन ॥ १८७॥

अद्वैत-ब्रह्म-वाद—निर्विशेष ब्रह्मवाद; **सेइ**—उस साधु पुरुष ने; **करिल स्थापन**—स्थापित किया; **तार शास्त्र-युक्त्ये**—अपने शास्त्र के तर्क के आधार पर; **तारे**—उसको; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **कैला**—किया; **खण्डन**—उसका खण्डन।

अनुवाद

जब उस पीर ने कुरान के आधार पर परम सत्य की निर्विशेष ब्रह्मवाद के रूप में स्थापना करने का प्रयास किया, तो श्री चैतन्य महाप्रभु ने उसके तर्कों का खण्डन किया।

येई येई कहिल, प्रभु सकलि खण्डिल ।
उत्तर ना आइसे मुखे, महा-स्तब्ध हैल ॥ १८८॥

येइ येइ कहिल, प्रभु सकलि खण्डिल ।
उत्तर ना आइसे मुखे, महा-स्तब्ध हैल ॥ १८८ ॥

येइ येइ कहिल—उसने जो कुछ कहा; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **सकलि खण्डिल**—हर बात का खण्डन कर दिया; **उत्तर**—उत्तर; **ना आइसे**—न आया; **मुखे**—उसके मुख में; **महा-स्तब्ध हैल**—वह अत्यन्त स्तब्ध हो गया।

अनुवाद

वह जो भी तर्क प्रस्तुत करता, महाप्रभु उन सबका खण्डन कर देते। अन्त में वह व्यक्ति स्तम्भित रह गया और कुछ भी बोल न सका।

प्रभु कहे,—तोमार शास्त्र स्थापे 'निर्विशेषे' ।
ताहा खण्डि' 'सविशेष' स्थापियाछे शेषे ॥ १८९॥

प्रभु कहे,—तोमार शास्त्र स्थापे 'निर्विशेषे' ।
ताहा खण्डि' 'सविशेष' स्थापियाछे शेषे ॥ १८९ ॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **तोमार शास्त्र**—तुम्हारा शास्त्र (कुरान); **स्थापे**—स्थापित करता है; **निर्विशेषे**—निर्विशेष मत (निर्गुण); **ताहा खण्डि'**—उसका खण्डन करके; **स-विशेष**—सगुण भगवान्; **स्थापियाछे**—स्थापित किया; **शेषे**—अन्त में।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "कुरान द्वारा निश्चय ही निर्विशेषवाद स्थापित होता है, किन्तु अन्त में यह निर्विशेषवाद का खण्डन करके साकार ईश्वर की स्थापना करता है।

तोमार शास्त्रे कहे शेषे 'एक-इ ईश्वर' ।
'सर्वैश्वर्य-पूर्ण तेँहो—श्याम-कलेवर ॥ १९०॥

तोमार शास्त्रे कहे शेषे 'एक-इ ईश्वर' ।
'सर्वैश्वर्य-पूर्ण तेंहो—श्याम-कलेवर ॥ १९० ॥

तोमार शास्त्रे—तुम्हारे शास्त्र में; **कहे**—कहा गया है; **शेषे**—अन्त में; **एक-इ ईश्वर**—

ईश्वर एक हैं; **सर्व-ऐश्वर्य्य-पूर्ण**—सभी ऐश्वर्य से पूर्ण; **तेंहो**—वे, उसका; **श्याम-कलेवर**—शारीरिक वर्ण काला है।

अनुवाद

कुरान इस तथ्य का स्वीकार करता है कि अन्ततोगत्वा ईश्वर केवल एक हैं। वे ऐश्वर्य से पूर्ण हैं और उनका शारीरिक वर्ण श्याम (काला) है।

तात्पर्य

मुसलमानों का प्रामाणिक शास्त्र कुरान है। मुसलमानों का एक सम्प्रदाय सूफी सम्प्रदाय है। सूफी निर्विशेषवाद को मानते हैं और जीव तथा परम ब्रह्म के एकत्व पर विश्वास करते हैं। उनका श्रेष्ठ नारा है *अनलहक।* सूफी सम्प्रदाय का उदय जरूर शंकराचार्य के निर्विशेषवादियों से हुआ।

सच्चिदानन्द-देह, पूर्ण-ब्रह्म-स्वरूप ।
'सर्वात्मा', 'सर्वज्ञ', नित्य सर्वादि-स्वरूप ॥ १९१॥

सच्चिदानन्द-देह, पूर्ण-ब्रह्म-स्वरूप ।
'सर्वात्मा', 'सर्वज्ञ', नित्य सर्वादि-स्वरूप ॥ १९१॥

सत्-चित्-आनन्द-देह—दिव्य, आनन्दमय, आध्यात्मिक शरीर; **पूर्ण-ब्रह्म-स्वरूप**—पूर्ण ब्रह्म स्वरूप; **सर्व-आत्मा**—सर्वव्यापक; **सर्व-ज्ञ**—सर्वज्ञ; **नित्य**—नित्य; **सर्व-आदि**—सबके आदि (मूल); **स्वरूप**—भगवान् का वास्तविक रूप।

अनुवाद

"कुरान के अनुसार भगवान् का स्वरूप सनातन, आनन्दमय तथा दिव्य है। वे परम सत्य, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ तथा शाश्वत व्यक्ति हैं। वे सभी वस्तुओं के उद्गम हैं।

सृष्टि, स्थिति, प्रलय ताँहा हैते हय ।
स्थूल-सूक्ष्म-जगतेर तेंहो समाश्रय ॥ १९२॥

सृष्टि, स्थिति, प्रलय ताँहा हैते हय ।
स्थूल-सूक्ष्म-जगतेर तेंहो समाश्रय ॥ १९२॥

सृष्टि—सृष्टि; **स्थिति**—स्थिति; **प्रलय**—प्रलय; **ताँहा**—उन; **हैते**—से; **हय**—होती है; **स्थूल**—स्थूल; **सूक्ष्म**—सूक्ष्म; **जगतेर**—ब्राह्माण्डों का; **तेंहो**—वे; **समाश्रय**—एक मात्र आश्रय हैं।

अनुवाद

"सृष्टि, पालन और संहार उन्हीं से होते हैं। वे समस्त स्थूल तथा सूक्ष्म प्राकट्यों के मूल आश्रय हैं।

सर्व-श्रेष्ठ, सर्वाराध्य, कारणेर कारण ।
ताँर भक्त्ये हय जीवेर संसार-तारण ॥ १९३॥

सर्व-श्रेष्ठ, सर्वाराध्य, कारणेर कारण ।
ताँर भक्त्ये हय जीवेर संसार-तारण ॥ १९३॥

सर्व-श्रेष्ठ—परम सत्य; **सर्व-आराध्य**—सर्व द्वारा आराध्य; **कारणेर कारण**—सभी कारणों के कारण; **ताँर**—उनकी; **भक्त्ये**—भक्ति से; **हय**—होता है; **जीवेर**—जीव का; **संसार-तारण**—भौतिक जीवन से उद्धार।

अनुवाद

"भगवान् सबके द्वारा आराध्य परम सत्य हैं। वे समस्त कारणों के कारण हैं। उनकी भक्ति करने से जीव भवबन्धन से छूट जाता है।

ताँर सेवा विना जीवेर ना याय 'संसार' ।
ताँहार चरणे प्रीति—'पुरुषार्थ-सार' ॥ १९४॥

ताँर सेवा विना जीवेर ना य्राय 'संसार' ।
ताँहार चरणे प्रीति—'पुरुषार्थ-सार' ॥ १९४॥

ताँर—उनकी; **सेवा**—सेवा; **विना**—के बिना; **जीवेर**—बद्धात्मा का; **ना**—नहीं; **य्राय**—समाप्त होता; **संसार**—भौतिक बन्धन; **ताँहार**—उनके; **चरणे**—चरणकमलों पर; **प्रीति**—प्रेम; **पुरुषार्थ-सार**—जीवन का अन्तिम ध्येय।

अनुवाद

"कोई भी बद्धजीव पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् की सेवा किये बिना भवबन्धन से छूट नहीं सकता। जीवन का चरम उद्देश्य उनके चरणों के प्रति प्रेम है।

तात्पर्य

मुस्लिम शास्त्र के अनुसार, मस्जिद में या अन्य कहीं और दिन में हररोज पाँच बार नमाज के बिना, मनुष्य जीवन में सफल नहीं हो सकता। श्री चैतन्य महाप्रभु ने संकेत किया कि मुस्लमानों के शास्त्र में, भगवत्-प्रेम अन्तिम लक्ष्य है। कर्मयोग तथा ज्ञानयोग का वर्णन भी निश्चय ही कुरान में हुआ है, किन्तु अन्ततोगत्वा कुरान कहता है कि चरम लक्ष्य परम पुरुष की इबादत करना अर्थात् प्रार्थना करना ही है।

মোক্ষাদি আনন্দ যার নহে এক 'কণ' ।
পূর্ণানন্দ-প্রাপ্তি তাঁর চরণ-সেবন ॥ ১৯৫॥

मोक्षादि आनन्द य़ार नहे एक 'कण' ।
पूर्णानन्द-प्राप्ति ताँर चरण-सेवन ॥ १९५॥

मोक्ष-आदि—मुक्ति आदि; **आनन्द**—दिव्य आनन्द; **य़ार**—जिसका; **नहे**—नहीं; **एक**—एक भी; **कण**—कण; **पूर्ण-आनन्द-प्राप्ति**—पूर्ण आनन्दमय जीवन की प्राप्ति; **ताँर चरण-सेवन**—उनके चरणकमलों की सेवा।

अनुवाद

"मुक्ति का सुख, जिसमें मनुष्य भगवान् से एकाकार हो जाता है, भगवान् के चरणकमलों की सेवा करने से प्राप्त होने वाले दिव्य आनन्द के एक अंश के भी बराबर नहीं है।

'কর্ম', 'জ্ঞান', 'যোগ' আগে করিয়া স্থাপন ।
সব খণ্ডি' স্থাপে 'ঈশ্বর', 'তাঁহার সেবন' ॥ ১৯৬॥

'कर्म', 'ज्ञान', 'य़ोग' आगे करिया स्थापन ।
सब खण्डि' स्थापे 'ईश्वर', 'ताँहार सेवन' ॥ १९६॥

कर्म—सकाम कर्म; **ज्ञान**—ज्ञान; **य़ोग**—योग; **आगे**—आरम्भ में; **करिया स्थापन**—स्थापित करके; **सब खण्डि'**—सब कुछ खण्डित करके; **स्थापे**—स्थापित करता है; **ईश्वर**—भगवान्; **ताँहार सेवन**—उनकी सेवा।

अनुवाद

"कुरान में सकाम कर्म, ज्ञान, योग तथा सर्वोपरि से मिलन का वर्णन

मिलता है, किन्तु अन्ततः हर बात का खण्डन होता है, और भगवान् के साकार रूप तथा उनकी भक्ति की स्थापना होती है।

तोमार पण्डित-सबार नाहि शास्त्र-ज्ञान ।
पूर्वापर-विधि-मध्ये 'पर'——बलवान् ॥१९७॥

तोमार पण्डित-सबार नाहि शास्त्र-ज्ञान ।
पूर्वापर-विधि-मध्ये 'पर'——बलवान् ॥ १९७॥

तोमार पण्डित-सबार—तुम्हारे सम्प्रदाय के विद्वान पुरुषों को; **नाहि**—नहीं है; **शास्त्र-ज्ञान**—शास्त्र ज्ञान; **पूर्व-अपर**—पहले और बाद के; **विधि**—विधि विधान; **मध्ये**—के मध्य; **पर**—अन्तिम निर्णय; **बलवान्**—अत्यन्त बलवान।

अनुवाद

"कुरान के विद्वान ज्ञान में अधिक उन्नत नहीं हैं। यद्यपि कई विधियों का वर्णन हुआ है, किन्तु वे यह नहीं जानते कि अन्तिम निर्णय को सबसे बलवान मानना चाहिए।

निज-शास्त्र देखि' तुमि विचार करिया ।
कि लिखियाछे शेषे कह निर्णय करिया ॥१९८॥

निज-शास्त्र देखि' तुमि विचार करिया ।
कि लिखियाछे शेषे कह निर्णय करिया ॥ १९८॥

निज-शास्त्र—अपना निजी शास्त्र; **देखि'**—देखकर; **तुमि**—तुम; **विचार करिया**—विचार करके; **कि लिखियाछे**—जो कुछ लिखा है; **शेषे**—अन्त में; **कह**—कहो; **निर्णय करिया**—निर्णय करके।

अनुवाद

"अपने कुरान को देखकर तथा उसमें जो कुछ लिखा है उस पर विचार करने के बाद तुम्हारा निर्णय क्या है?"

म्लेच्छ कहे,——येई कह, सेई 'सत्य' हय ।
शास्त्रे लिखियाछे, केह लइते ना पारय ॥१९९॥

म्लेच्छ कहे,—ग्रेइ कह, सेइ 'सत्य' हय ।
शास्त्रे लिखियाछे, केह लइते ना पारय ॥ १९९ ॥

म्लेच्छ कहे—मुस्लिम ने कहा; **ग्रेइ कह**—आज जो कहते हैं; **सेइ**—वह; **सत्य हय**—सत्य है; **शास्त्रे**—कुरान में; **लिखियाछे**—लिखा है; **केह**—कोई भी; **लइते**—समझने में; **ना पारय**—सक्षम नहीं है।

अनुवाद

उस मुस्लिम सन्त ने उत्तर दिया, "आपने जो कुछ कहा है, वह सत्य है। यह कुरान में लिखा अवश्य है, किन्तु हमारे विद्वान न तो इसे समझते हैं, न स्वीकार करते हैं।

'निर्विशेष-गोसाञि' लञा करेन व्याख्यान ।
'साकार-गोसाञि'—सेव्य, कारो नाहि ज्ञान ॥ २०० ॥
'निर्विशेष-गोसाञि' लञा करेन व्याख्यान ।
'साकार-गोसाञि'—सेव्य, कारो नाहि ज्ञान ॥ २०० ॥

निर्विशेष-गोसाञि—निर्विशेष भगवान्; **लञा**—लेकर; **करेन व्याख्यान**—वे वर्णन करते हैं; **स-आकार-गोसाञि**—सगुण भगवान्; **सेव्य**—पूज्य; **कारो नाहि ज्ञान**—किसी को यह ज्ञान नहीं है।

अनुवाद

"सामान्यतया वे भगवान् के निर्विशेष पक्ष का वर्णन करते हैं, किन्तु उन्हें शायद ही इसका ज्ञान हो कि भगवान् का साकार रूप पूजनीय है। निस्सन्देह, उनमें इस ज्ञान का अभाव है।

तात्पर्य

उस मुस्लिम सन्त ने स्वीकार किया कि जो लोग कुरान की शिक्षा को अच्छी तरह जानते हैं, वे अन्ततः कुरान के सार को नहीं समझते। इसीलिए वे केवल भगवान् के निराकार पहलू को ही मानते हैं। सामान्यतया वे इसी अंश को सुनाते हैं तथा इसी की व्याख्या करते हैं। यद्यपि भगवान् का दिव्य शरीर पूजनीय है, किन्तु अधिकांश लोग इससे अनजान हैं।

সেইত 'গোসাঞি' তুমি——সাক্ষাৎ 'ঈশ্বর' ।
মোরে কৃপা কর, মুঞি——অযোগ্য পামর ॥২০১॥

সেইত 'গোসাঞি' তুমি——সাক্ষাত্ 'ঈশ্বর' ।
মোরে কৃপা কর, মুঞি——অযোগ্য পামর ॥ ২০১ ॥

सेइत—वह; **गोसाञि**—भगवान्; **तुमि**—आप; **साक्षात्**—साक्षात्; **ईश्वर**—भगवान्; **मोरे**—मुझ पर; **कृपा कर**—कृपा करो; **मुञि**—मैं; **अयोग्य पामर**—अत्यन्त पतित और अयोग्य।

अनुवाद

"चूँकि आप वही पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् हैं, अतएव मुझ पर कृपा कीजिये। मैं पतित और अयोग्य हूँ।

অনেক দেখিনু মুঞি ম্লেচ্ছ-শাস্ত্র হৈতে ।
'সাধ্য-সাধন-বস্তু' নারি নির্ধারিতে ॥২০২॥

অনেক দেখিনু মুঞি ম্লেচ্ছ-শাস্ত্র হৈতে ।
'সাধ্য-সাধন-বস্তু' নারি নির্ধারিতে ॥ ২০২ ॥

अनेक—अनेक; **देखिनु**—अध्ययन किया है; **मुञि**—मैंने; **म्लेच्छ-शास्त्र**—मुस्लिम शास्त्र; **हैते**—से; **साध्य**—जीवन का अन्तिम ध्येय; **साधन**—कैसे करें; **वस्तु**—विषय; **नारि निर्धारिते**—मैं अन्ततः निर्णित नहीं कर सकता।

अनुवाद

"मैंने मुसलमान शास्त्र का विस्तार से अध्ययन किया है, किन्तु मैं अन्तिम रूप से यह निश्चय नहीं कर सकता कि जीवन का चरम लक्ष्य क्या है अथवा उस तक मैं कैसे पहुँच सकता हूँ?

তোমা দেখি' জিহ্বা মোর বলে 'কৃষ্ণ-নাম' ।
'আমি——বড় জ্ঞানী'——এই গেল অভিমান ॥২০৩॥

তোমা দেখি' জিহ্বা মোর বলে 'কৃষ্ণ-নাম' ।
'আমি——বড় জ্ঞানী'——এই গেল অভিমান ॥ ২০৩ ॥

तोमा देखि'—आपको देखकर; **जिह्वा**—जीभ; **मोर**—मेरी; **बले कृष्ण-नाम**—हरे

कृष्ण मंत्र बोलती है; **आमि**—मैं; **बड़ ज्ञानी**—बहुत ज्ञानी; **एइ**—यह; **गेल अभिमान**—झूठा अभिमान चला गया है।

अनुवाद

"अब आपको देखकर मेरी जीभ हरे कृष्ण महामन्त्र का कीर्तन कर रही है। अब मेरा यह मिथ्या अभिमान दूर हो गया है कि मैं विद्वान हूँ।"

कृपा करि' बल मोरे 'साध्य-साधने' ।
एत बलि' पड़े महाप्रभुर चरणे ॥२०४॥

कृपा करि' बल मोरे 'साध्य-साधने' ।
एत बलि' पड़े महाप्रभुर चरणे ॥ २०४॥

कृपा करि'—अपनी अहैतुकी कृपा से; **बल**—कहो; **मोरे**—मुझे; **साध्य-साधने**—जीवन का अन्तिम ध्येय और उसे पाने की प्रक्रिया; **एत बलि'**—इतना कहकर; **पड़े**—गिर पड़ा; **महाप्रभुर चरणे**—महाप्रभु के चरणकमलों पर।

अनुवाद

यह कहकर वह सन्त मुसलमान श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों पर गिर पड़ा और उनसे प्रार्थना की कि वे जीवन के चरम लक्ष्य तथा उसे प्राप्त करने की विधि के बारे में उससे कहें।

प्रभु कहे,—उठ, कृष्ण-नाम तुमि लइला ।
कोटि-जन्मेर पाप गेल, 'पवित्र' हइला ॥२०५॥

प्रभु कहे,—उठ, कृष्ण-नाम तुमि लइला ।
कोटि-जन्मेर पाप गेल, 'पवित्र' हइला ॥ २०५॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **उठ**—कृपया उठो; **कृष्ण-नाम**—कृष्ण का पावन नाम; **तुमि**—तुमने; **लइला**—लिया है; **कोटि-जन्मेर**—लाखों जन्मों के; **पाप गेल**—तुम्हारे पापों का फल नष्ट हो गया है; **पवित्र हइला**—तुम पवित्र हो गये हो।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "कृपया उठो। तुमने कृष्ण के पवित्र नाम का उच्चारण किया है। अतः तुम्हारे करोड़ों जन्मों के पापों के फल चले गये। अब तुम शुद्ध हो गये हो।"

'कृष्ण' कह, 'कृष्ण' कह,—कैला उपदेश ।
सबे 'कृष्ण' कहे, सबार हैल प्रेमावेश ॥२०६॥

'कृष्ण' कह, 'कृष्ण' कह,—कैला उपदेश ।
सबे 'कृष्ण' कहे, सबार हैल प्रेमावेश ॥ २०६ ॥

कृष्ण कह—मात्र "कृष्ण" का नाम जपो; **कृष्ण कह**—मात्र "कृष्ण" का जाप जपो; **कैला उपदेश**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने उपदेश दिया; **सबे**—सबको; **कृष्ण कहे**—कृष्ण के पावन नाम का कीर्तन करो; **सबार**—उन सबको; **हैल**—हो गया; **प्रेम-आवेश**—प्रेम का आवेश।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने वहाँ उपस्थित सारे मुसलमानों से कहा, "कृष्ण के पवित्र नाम का कीर्तन करो! कृष्ण के पवित्र नाम का कीर्तन करो!" जब वे सब कीर्तन करने लगे, तो वे सभी प्रेमाविष्ट हो गये।

'रामदास' बलि' प्रभु ताँर कैल नाम ।
आर एक पाठान, ताँर नाम—'विजुली-खाँन' ॥२०७॥

'रामदास' बलि' प्रभु ताँर कैल नाम ।
आर एक पाठान, ताँर नाम—'विजुली-खाँन' ॥ २०७॥

रामदास बलि'—रामदास का नामक देकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **ताँर**—उसको; **कैल**—दिया; **नाम**—नाम; **आर एक पाठान**—और एक दूसरे मुस्लिम पठान को; **ताँर नाम**—उसका नाम; **विजुली-खाँन**—विजुली खान।

अनुवाद

इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु ने प्रत्यक्ष रूप से उस सन्त मुसलमान को कृष्ण-नाम का कीर्तन करने का उपदेश देकर उसे दीक्षित कर दिया। उसका नाम बदलकर रामदास कर दिया गया। एक अन्य पठान भी वहाँ था, जिसका नाम विजुली खान रखा गया।

तात्पर्य

दीक्षा पाने के बाद कृष्णभावनामृत आन्दोलन में भक्तगण अपना नाम बदल लेते हैं। जब भी पाश्चात्य जगत् में कोई व्यक्ति कृष्णभावनामृत आन्दोलन में रुचि दिखाता है, तो उसको इसी विधि से दीक्षित किया जाता है। भारत में हम

पर झूठा आरोप लगाया जाता है कि हम म्लेच्छों तथा यवनों का हिन्दू धर्म में परिवर्तन करते हैं। भारत में अनेक मायावादी संन्यासी हैं, जिन्हें जगद्गुरु कहा जाता है, यद्यपि उन्होंने पूरे विश्व का भ्रमण नहीं किया होता। उनमें से कुछ तो ठीक से शिक्षित भी नहीं होते, फिर भी वे हमारे आन्दोलन पर दोषारोपण करते हैं और हम पर आरोप लगाते हैं कि हम मुसलानों तथा यवनों को वैष्णव बनाकर हिन्दू धर्म को नष्ट कर रहे हैं। ऐसे लोग केवल ईर्ष्या करने वाले हैं। हम हिन्दू धर्म-प्रणाली को नष्ट नहीं कर रहे हैं, अपितु पूरे विश्व में भ्रमण करके और जो लोग कृष्ण को समझने में रुचि रखते हैं, उन्हें कृष्णदास या रामदास के रूप में स्वीकार करके केवल श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणचिह्नों का अनुसरण कर रहे हैं। प्रामाणिक दीक्षा-विधि से उनके नाम बदल दिये जाते हैं।

অল্প বয়স তাঁর, রাজার কুমার ।
'রামদাস' আদি পাঠান—চাকর তাঁহার ॥২০৮॥

अल्प वयस ताँर, राजार कुमार ।
'रामदास' आदि पाठान—चाकर ताँहार ॥ २०८॥

अल्प वयस ताँर—उसकी आयु कम है; **राजार कुमार**—राज का पुत्र; **रामदास**—रामदास; **आदि**—आदि; **पाठान**—मुस्लिम; **चाकर ताँहार**—उसके सेवक।

अनुवाद

विजुली खान नवयुवक था और राजा का पुत्र था। रामदास आदि अन्य सारे पठान उसके नौकर थे।

'কৃষ্ণ' বলি' পড়ে সেই মহাপ্রভুর পায় ।
প্রভু শ্রী-চরণ দিল তাঁহার মাথায় ॥২০৯॥

'कृष्ण' बलि' पड़े सेइ महाप्रभुर पाय ।
प्रभु श्री-चरण दिल ताँहार माथाय ॥ २०९॥

कृष्ण बलि'—कृष्ण का पावन नाम बोलकर; **पड़े**—गिर पड़ा; **सेइ**—वह विजुली खान; **महाप्रभुर पाय**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों पर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **श्री-चरण दिल**—अपना चरण रखा; **ताँहार माथाय**—उसके सिर पर।

अनुवाद

विजुली खान भी श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों पर गिर पड़ा और महाप्रभु ने उसके सिर पर अपना चरण रखा।

তাঁ-সবারে কৃপা করি' প্রভু ত' চলিলা ।
সেইত পাঠান সব 'বৈরাগী' হইলা ॥২১০॥

তাঁ-সবারে কৃপা করি' প্রভু ত' চলিলা ।
সেইত পাঠান সব 'বৈরাগী' হইলা ॥ ২১০ ॥

তাঁ-সবারে—उन सब पर; **কৃপা করি'**—कृपा करके; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ত'**—निस्सन्देह; **চলিলা**—चले गये; **সেইত**—वे; **পাঠান**—मुस्लिम पठान; **সব**—सब; **বৈরাগী হইলা**—वैरागी हो गये।

अनुवाद

इस तरह उन सब पर कृपा करने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु चल पड़े। तब सारे पठान मुस्लिम साधु (वैरागी) हो गये।

পাঠান-বৈষ্ণব বলি' হৈল তাঁর খ্যাতি ।
সর্বত্র গাহিয়া বুলে মহাপ্রভুর কীর্তি ॥২১১॥

পাঠান-বৈষ্ণব বলি' হৈল তাঁর খ্যাতি ।
সর্বত্র গাহিয়া বুলে মহাপ্রভুর কীর্তি ॥ ২১১ ॥

পাঠান-বৈষ্ণব বলি'—पठान वैष्णव के नाम से जाने जाने वाले; **হৈল**—हो गये; **তাঁর**—उनकी; **খ্যাতি**—प्रसिद्धि; **সর্বত্র**—सब जगह; **গাহিয়া বুলে**—गाकर यात्रा करते थे; **মহাপ্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **কীর্তি**—यशस्वी गतिविधियाँ।

अनुवाद

ये ही पठान बाद में पठान वैष्णवों के नाम से विख्यात हुए। वे देश-भर घूम-घूमकर श्री चैतन्य महाप्रभु की कीर्ति का गुणगान करने लगे।

সেই বিজুলী-খাঁন হৈল 'মহা-ভাগবত' ।
সর্ব-তীর্থে হৈল তাঁর পরম-মহত্ত্ব ॥২১২॥

सेइ विजुली-खाँन हैल 'महा-भागवत' ।
सर्व-तीर्थे हैल ताँर परम-महत्त्व ॥ २१२ ॥

सेइ—वह; **विजुली-खाँन**—विजुली खान; **हैल**—हो गया; **महा-भागवत**—महा उन्नत भक्त; **सर्व-तीर्थे**—सभी तीर्थों में; **हैल**—हो गया; **ताँर**—उसका; **परम**—बड़ा; **महत्त्व**—महत्त्व।

अनुवाद

विजुली खान बहुत बड़ा भक्त बन गया और उसका महत्त्व प्रत्येक तीर्थस्थान में विख्यात हो गया।

ऐछे लीला करे प्रभु श्री-कृष्ण-चैतन्य ।
'पश्चिमे' आसिया कैल यवनादि धन्य ॥ २१३ ॥
ऐछे लीला करे प्रभु श्री-कृष्ण-चैतन्य ।
'पश्चिमे' आसिया कैल यवनादि धन्य ॥ २१३ ॥

ऐछे—इस प्रकार; **लीला**—लीलाएँ; **करे**—की; **प्रभु**—भगवान्; **श्री-कृष्ण-चैतन्य**—श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु; **पश्चिमे**—पश्चिमी भारत में; **आसिया**—आकर; **कैल**—किया; **यवन-आदि**—यवन आदि मांसाहारी और अन्यों को; **धन्य**—भाग्यशाली।

अनुवाद

इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु ने लीलाएँ कीं। उन्होंने भारत के पश्चिमी भाग में आकर यवनों तथा म्लेच्छों को सौभाग्य प्रदान किया।

तात्पर्य

यवन शब्द का अर्थ है "मांसाहारी।" मांसाहार करने वाली जाति का कोई भी व्यक्ति यवन कहलाता है। जो वैदिक विधानों का कड़ाई से पालन नहीं करता, वह *म्लेच्छ* कहलाता है। ये शब्द किसी व्यक्तिविशेष के सूचक नहीं है। यहाँ तक कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र परिवार में जन्म लेने वाला व्यक्ति भी यदि वह विधि-विधानों का पालन नहीं करता या मांस खाता है, तो वह म्लेच्छ या यवन कहलाता है।

सोरो-क्षेत्रे आसि' प्रभु कैला गङ्गा-स्नान ।
गङ्गा-तीर-पथे कैला प्रयागे प्रयाण ॥ २१४ ॥

सोरो-क्षेत्रे आसि' प्रभु कैला गङ्गा-स्नान ।
गङ्गा-तीर-पथे कैला प्रयागे प्रयाण ॥ २१४॥

सोरो-क्षेत्रे—सोरोक्षेत्र में; **आसि'**—आकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **कैला**—किया; **गङ्गा-स्नान**—गंगा स्नान; **गङ्गा-तीर-पथे**—गंगा तट के मार्ग पर; **कैला**—किया; **प्रयागे प्रयाण**—प्रयाग के लिए प्रस्थान।

अनुवाद

इसके बाद श्री चैतन्य महाप्रभु सोरोक्षेत्र नामक तीर्थस्थान गये। उन्होंने वहाँ गंगा नदी में स्नान किया और फिर वे गंगा के किनारे-किनारे प्रयाग के लिए चल पड़े।

সেই বিপ্রে, কৃষ্ণদাসে, প্রভু বিদায় দিলা ।
যোড়-হাতে দুই-জন কহিতে লাগিলা ॥২১৫॥

सेइ विप्रे, कृष्णदासे, प्रभु विदाय दिला ।
ग्रोड़-हाते दुइ-जन कहिते लागिला ॥ २१५॥

सेइ विप्रे—सनोड़िया ब्राह्मण को; **कृष्णदासे**—और राजपूत कृष्णदास को; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **विदाय दिला**—विदा दी, लौट जाने को कहा; **ग्रोड़-हाते**—हाथ जोड़कर; **दुइ-जन**—दोनों व्यक्ति; **कहिते लागिला**—कहने लगे।

अनुवाद

सोरोक्षेत्र में महाप्रभु ने सनोड़िया ब्राह्मण तथा राजपूत कृष्णदास से घर लौट जाने के लिए कहा, किन्तु वे हाथ जोड़कर इस प्रकार बोले।

প্রয়াগ-পর্যন্ত দুঁহে তোমা-সঙ্গে যাব ।
তোমার চরণ-সঙ্গ পুনঃ কাহাঁ পাব? ॥২১৬॥

प्रयाग-पर्य्यन्त दुँहे तोमा-सङ्गे ग्राब ।
तोमार चरण-सङ्ग पुनः काहाँ पाब? ॥ २१६॥

प्रयाग-पर्य्यन्त—प्रयाग तक; **दुँहे**—हम दोनों; **तोमा-सङ्गे**—आपके साथ; **ग्राब**—जायेंगे; **तोमार**—आपके; **चरण-सङ्ग**—चरणकमलों का संग; **पुनः**—दोबारा; **काहाँ**—कहाँ; **पाब**—हमें मिलेगा।

अनुवाद

उन्होंने प्रार्थना की, "हमें अपने साथ प्रयाग तक चलने दें। यदि हम अभी नहीं जाते, तो हमें आपके चरणकमलों का संग फिर कब मिल पायेगा?

म्लेच्छ-देश, केह काहाँ करये उत्पात ।
भट्टाचार्य—पण्डित, कहिते ना जानेन बात् ॥ २१७॥
म्लेच्छ-देश, केह काहाँ करये उत्पात ।
भट्टाचार्य्र—पण्डित, कहिते ना जानेन बात् ॥ २१७॥

म्लेच्छ-देश—यह मुस्लिमों का देश है; **केह**—कोई भी; **काहाँ**—कहीं भी; **करये उत्पात**—उत्पात कर सकता है; **भट्टाचार्य्र**—बलभद्र भट्टाचार्य; **पण्डित**—पण्डित विद्वान; **कहिते**—कहने को; **ना जानेन**—नहीं जानता; **बात्**—भाषा, स्थानीय भाषा।

अनुवाद

"यह देश मुख्यतया मुसलमानों से भरा पड़ा है। कोई किसी भी स्थान में उत्पात कर सकता है। यद्यपि आपका संगी बलभद्र भट्टाचार्य विद्वान है, किन्तु वह स्थानीय भाषा में बात करना नहीं जानता।"

शुनि' महाप्रभु ईषत् हासिते लागिला ।
सेइ दुई-जन प्रभुर सङ्गे चलि' आइला ॥ २१८॥
शुनि' महाप्रभु ईषत् हासिते लागिला ।
सेइ दुइ-जन प्रभुर सङ्गे चलि' आइला ॥ २१८॥

शुनि'—यह सुनकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ईषत्**—धीरे से; **हासिते लागिला**—मुस्कुराने लगे; **सेइ**—वे; **दुइ-जन**—दोनों व्यक्ति; **प्रभुर सङ्गे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ; **चलि' आइला**—चले आये।

अनुवाद

यह सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने थोड़ा हँसते हुए उनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। इस तरह वे दोनों उनके साथ चलते रहे।

যেই যেই জন প্রভুর পাইল দরশন ।
সেই প্রেমে মত্ত হয়, করে কৃষ্ণ-সঙ্কীর্তন ॥২১৯॥

যেই যেই জন প্রভুর পাইল দরশন ।
সেই প্রেমে মত্ত হয়, করে কৃষ্ণ-সঙ্কীর্তন ॥ ২১৯ ॥

যেই যেই—जिस किसी ने; **জন**—व्यक्ति; **প্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **পাইল দরশন**—दर्शन किया; **সেই**—वह व्यक्ति; **প্রেমে**—प्रेम में; **মত্ত হয়**—उन्मत्त हो जाता; **করে**—और करता; **কৃষ্ণ-সঙ্কীর্তন**—कृष्ण के नाम का संकीर्तन।

अनुवाद

जो भी श्री चैतन्य महाप्रभु का दर्शन करता, वह भावाविष्ट हो जाता और हरे कृष्ण मन्त्र का कीर्तन करने लगता।

তাঁর সঙ্গে অন্যোন্যে, তাঁর সঙ্গে আন ।
এই-মত 'বৈষ্ণব' কৈলা সব দেশ-গ্রাম ॥২২০॥

তাঁর সঙ্গে অন্যোন্যে, তাঁর সঙ্গে আন ।
এই-মত 'বৈষ্ণব' কৈলা সব দেশ-গ্রাম ॥ ২২০ ॥

তাঁর সঙ্গে—उसके साथ; **অন্যোন্যে**—अन्य; **তাঁর সঙ্গে**—और उसके साथ; **আন**—अन्य; **এই-মত**—इस प्रकार; **বৈষ্ণব**—वैष्णव; **কৈলা**—किया; **সব**—सब; **দেশ-গ্রাম**—ग्राम तथा नगर।

अनुवाद

जो भी श्री चैतन्य महाप्रभु से मिला, वह वैष्णव बन गया और जो भी इस वैष्णव से मिला, वह भी वैष्णव बन गया। इस तरह एक के बाद एक सारे नगरवासी तथा ग्रामवासी वैष्णव बन गये।

দক্ষিণ যাইতে যৈছে শক্তি প্রকাশিলা ।
সেই-মত পশ্চিম দেশ, প্রেমে ভাসাইলা ॥২২১॥

দক্ষিণ যাইতে যৈছে শক্তি প্রকাশিলা ।
সেই-মত পশ্চিম দেশ, প্রেমে ভাসাইলা ॥ ২২১ ॥

দক্ষিণ যাইতে—दक्षिण भारत में भ्रमण करते समय; **যৈছে**—जैसे; **শক্তি প্রকাশিলা**—

अपनी आध्यात्मिक शक्ति प्रकट की; **सेइ-मत**—उस प्रकार; **पश्चिम देश**—पश्चिमी भारत; **प्रेमे भासाइला**—कृष्ण-प्रेम में डूबा दिये।

अनुवाद

जिस तरह महाप्रभु ने अपनी यात्रा से दक्षिण भारत को भगवत्प्रेम से आप्लावित कर दिया था, उसी तरह उन्होंने देश के पश्चिमी भाग को भी भगवत्प्रेम से आप्लावित किया।

तात्पर्य

कुछ लोगों का मत है कि वृन्दावन से प्रयाग जाते समय श्री चैतन्य महाप्रभु कुरुक्षेत्र गये थे। कुरुक्षेत्र में भद्रकाली का मन्दिर है, उसी मन्दिर के पास एक मन्दिर में श्री चैतन्य महाप्रभु का अर्चाविग्रह है।

এই-মত চলি' প্রভু 'প্রয়াগ' আইলা ।
দশ-দিন ত্রিবেণীতে মকর-স্নান কৈলা ॥২২২॥

এइ-मत चलि' प्रभु 'प्रयाग' आइला ।
दश-दिन त्रिवेणीते मकर-स्नान कैला ॥ २२२॥

एइ-मत—इस प्रकार; **चलि'**—चलकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **प्रयाग**—प्रयाग; **आइला**—पहुँचे; **दश-दिन**—दस दिन; **त्रिवेणीते**—गंगा और यमुना नदी के संगम पर; **मकर-स्नान कैला**—मकर उत्सव का (माघ मेला) स्नान किया।

अनुवाद

अन्त में श्री चैतन्य महाप्रभु प्रयाग पहुँचे और मकर-संक्रान्ति (माघ मेला) के अवसर पर लगातार दस दिनों तक गंगा तथा यमुना नदियों के संगम में स्नान किया।

तात्पर्य

वास्तव में *त्रिवेणी* तीन नदियों—गंगा, यमुना तथा सरस्वती—के संगम का सूचक है। सम्प्रति सरस्वती नदी दृष्टिगोचर नहीं है, किन्तु गंगा तथा यमुना नदियाँ इलाहाबाद में मिलती हैं।

বৃন্দাবন-গমন, প্রভু-চরিত্র অনন্ত ।
'সহস্র-বদন' যাঁর নাহি পা'ন অন্ত ॥২২৩॥

वृन्दावन-गमन, प्रभु-चरित्र अनन्त ।
'सहस्र-वदन' ग्राँर नाहि पा'न अन्त ॥ २२३ ॥

वृन्दावन-गमन—वृन्दावन गमन; **प्रभु-चरित्र**—श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाएँ; **अनन्त**—अनन्त; **सहस्र-वदन**—सहस्र फणों वाले भगवान् शेष; **ग्राँर**—जिसकी; **नाहि**—नहीं; **पा'न**—मिलती; **अन्त**—सीमा, अन्त।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु का वृन्दावन गमन और वहाँ पर उनकी लीलाएँ अनन्त हैं। यहाँ तक कि सहस्र फनों वाले भगवान् शेष भी उनके कार्यकलापों का अन्त नहीं पा सकते।

তাহা কে কহিতে পারে ক্ষুদ্র জীব হঞা ।
দিগ্দরশন কৈলুঁ মুঞি সূত্র করিয়া ॥ ২২৪ ॥
তাহা কে কহিতে পারে ক্ষুদ্র জীব হঞা ।
দিগ্দরশন কৈলুঁ মুঞি সূত্র করিয়া ॥ ২২৪ ॥

তাহা—वह; **কে কহিতে পারে**—कौन वर्णन कर सकता है; **ক্ষুদ্র**—तुच्छ; **জীব হঞা**—बद्धात्मा होने के कारण; **দিক্-দরশন কৈলুঁ**—मात्र एक संकेत किया है; **মুঞি**—मैंने; **সূত্র করিয়া**—सार रूप में।

अनुवाद

भला कौन सामान्य जीव श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं का वर्णन कर सकता है? मैंने तो सार रूप में सामान्य दिशानिर्देशन ही किया है।

অলৌকিক-লীলা প্রভুর অলৌকিক-রীতি ।
শুনিলেও ভাগ্য-হীনের না হয় প্রতীতি ॥ ২২৫ ॥
অলৌকিক-লীলা প্রভুর অলৌকিক-রীতি ।
শুনিলেও ভাগ্য-হীনের না হয় প্রতীতি ॥ ২২৫ ॥

অলৌকিক-লীলা—अलौकिक लीलाएँ; **প্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **অলৌকিক-রীতি**—अलौकिक रीति; **শুনিলেও**—सुनने पर भी; **ভাগ্য-হীনের**—भाग्यहीन को; **না হয় প্রতীতি**—कोई विश्वास नहीं है।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाएँ तथा रीतियाँ असाधारण हैं। जो अभागा होगा वही इन बातों को सुनने के बाद भी उन पर विश्वास नहीं करेगा।

आद्योपान्त चैतन्य-लीला—'अलौकिक' जान' ।
श्रद्धा करि' शुन इहा, 'सत्य' करि' मान' ॥२२६॥
आद्योपान्त चैतन्य-लीला—'अलौकिक' जान' ।
श्रद्धा करि' शुन इहा, 'सत्य' करि' मान' ॥ २२६ ॥

आद्य-उपान्त—आरम्भ से अन्त तक; **चैतन्य-लीला**—श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाएँ; **अलौकिक जान'**—अलौकिक जानकर; **श्रद्धा करि'**—श्रद्धापूर्वक; **शुन इहा**—इसे सुनो; **सत्य करि' मान'**—सत्य और प्रामाणिक मानकर।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाएँ शुरू से लेकर अन्त तक अलौकिक हैं। उन्हें श्रद्धापूर्वक सुनना चाहिए और सत्य के रूप में स्वीकार करना चाहिए।

येई तर्क करे इहाँ, सेई—'मूर्ख-राज' ।
आपनार मुण्डे से आपनि पाड़े वाज ॥२२७॥
येइ तर्क करे इहाँ, सेइ—'मूर्ख-राज' ।
आपनार मुण्डे से आपनि पाड़े वाज ॥ २२७ ॥

येइ तर्क करे—जो मात्र तर्क करता है; **इहाँ**—इस विषय में; **सेइ**—वह व्यक्ति; **मूर्ख-राज**—महामूर्ख; **आपनार मुण्डे**—अपने ही सिर पर; **से**—वह व्यक्ति; **आपनि**—स्वयं; **पाड़े वाज**—वज्रघात करता है।

अनुवाद

जो भी इनके विषय में तर्क करता है, वह महामूर्ख है। वह जान-बूझकर अपने ही सिर पर वज्रपात करता है।

चैतन्य-चरित्र एइ—'अमृतेर सिन्धु' ।
जगतानन्दे भासाय यार एक-बिन्दु ॥२२८॥

चैतन्य-चरित्र एइ—'अमृतेर सिन्धु' ।
जगत् आनन्दे भासाय यार एक-बिन्दु ॥ २२८॥

चैतन्य-चरित्र—श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाएँ; **एइ**—ये; **अमृतेर सिन्धु**—अमृत का सागर; **जगत्**—संसार; **आनन्दे**—आनन्द से; **भासाय**—निमग्न कर सकता है; **यार**—जिसका; **एक-बिन्दु**—एक बिन्दु।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाएँ अमृत के सागर तुल्य हैं। इस समुद्र की एक बूँद भी सारे संसार को दिव्य आनन्द से आप्लावित कर सकती है।

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे यार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥२२९॥

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे यार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥ २२९॥

श्री-रूप—श्रील रूप गोस्वामी; **रघुनाथ**—श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी; **पदे**—चरणकमलों पर; **यार**—जिसकी; **आश**—आशा; **चैतन्य-चरितामृत**—*चैतन्य चरितामृत* नामक ग्रन्थ; **कहे**—वर्णन करता है; **कृष्णदास**—श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी।

अनुवाद

श्री रूप तथा श्री रघुनाथ के चरणकमलों में प्रार्थना करते हुए और उनकी कृपा की सदैव आकांक्षा करते हुए मैं कृष्णदास उनके चरणचिह्नों का अनुसरण करते हुए श्री चैतन्य-चरितामृत कह रहा हूँ।

इस तरह श्री चैतन्य-चरितामृत मध्यलीला के अठारहवें अध्याय का भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुआ, जिसमें महाप्रभु की वृन्दावन यात्रा तथा प्रयाग जाते हुए मुसलमान सिपाहियों के धर्म-परिवर्तन का वर्णन हुआ है।